04 - सत्याग्रही कस्तूरबा गांधी

05 - बुझी आंखों से दूर जा बसी अपनों की आस

A Daily News Magazine
भोपाल
गुरुवार, 10 अप्रैल, 2025

06 - मुख्य सड़क और शहर की गलियों में आवारा सांड और...

07 - 'अहिंसा परमो धर्मः' के महामंत्रदृष्टा भगवान महावीर

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 210, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

ट्रंप टैरिफ : भारत क्यों नहीं कर रहा है जवाबी कार्रवाई?

कीर्ति रावत

पिछले दिनों अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत पर 26 प्रतिशत रेसिप्रोकल टैरिफ़ लगाने की घोषणा की थी। इस पर भारत ने बयान तो जारी किया है, लेकिन ये नहीं बताया कि उसकी रणनीति क्या होगी?

भारत के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने अमेरिकी टैरिफ़ पर बयान में कहा था, 'नए घटनाक्रम से होने वाले असर का आकलन और इससे प्रभावित होने वाले सभी पक्षों से सलाह मशविरा किया जा रहा है।' 'अमेरिकी व्यापार नीति में हुए नए बदलाव के कारण पैदा होने वाले नए अवसरों का भी अध्ययन किया जा रहा है।'

इससे अलग चीन अमेरिकी टैरिफ़ का जवाब दे रहा है। उसने जवाबी कार्रवाई के रूप में अमेरिका पर 34 फ़ीसदी टैरिफ़ लगा दिया है।

हालाँकि अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप ने चीन को चेतावनी दी है कि अगर उसने ये टैरिफ़ वापस नहीं लिया, तो उस पर 50 फ़ीसदी और टैरिफ़ लगा दिया जाएगा। लेकिन भारत अमेरिकी टैरिफ़ के जवाब में क्या क़दम उठाएगा? ये एक ऐसा सवाल है जिसका जवाब अभी तक नहीं मिला है।

इस बीच, भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा है कि अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो से द्विपक्षीय व्यापार समझौते से जुड़े मुद्दे पर बातचीत हुई है।

ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनीशिएटिव के फ़ाउंडर और विशेषज्ञ अजय श्रीवास्तव ने अमेरिका के लगाए टैरिफ़ पर भारत की ओर से अब तक कोई जवाबी कार्रवाई ना करने के तीन कारण बताए हैं- पहलाः भारत और अमेरिका के बीच व्यापार पर द्विपक्षीय वार्ता में फ्री ट्रेड पर बातचीत चल रही है। पहले चरण की बातचीत अगस्त से अक्टूबर तक पूरी हो जाएगी, जिसमें टैरिफ़ को हटाने पर बात होगी। इससे टैरिफ़ कम हो सकते हैं या भारत पर से रेसिप्रोकल टैरिफ़ हट सकते हैं।

दूसराः अमेरिका के टैरिफ़ लगाने के बाद से व्यापार की दुनिया में परेशानियां बढ़ गई हैं। इस टैरिफ़ का सबसे ज़्यादा असर अमेरिकी नगारिकों और वहाँ के व्यापारियों पर पड़ रहा है। जैसे अमेरिका में कार की मैन्युफ़ैक्चरिंग होती है, तो अमेरिका इसके लिए अन्य देशों से सामान आयात करता है, जिससे अमेरिका में बनने वाली कारों की क़ीमतें बढ़ जाएँगी। इससे वैश्विक स्तर पर अमेरिकी कार की ख़रीद में गिरावट आ सकती है। यही कारण है कि भारत सरकार को लग रहा है कि टैरिफ़ टिकाऊ नहीं है।

तीसराः ट्रंप के पहले कार्यकाल के दौरान मार्च 2018 में अमेरिका ने भारत के स्टील पर 25 फ़ीसदी और एल्यूमीनियम पर 10 फ़ीसदी टैरिफ़ लगाया था। उस समय भी भारत ने तुरंत जवाबी कार्रवाई नहीं की थी। जून 2019 में भारत ने अमेरिका के 29 प्रॉडक्ट्स पर जवाबी कार्रवाई करते हुए टैरिफ़ लगाया था।

फेडरेशन ऑफ़ इंडियन माइक्रो स्मॉल एंड मीडियम एंटरप्राइज़ेज के सेक्रेटरी जनरल अनिल भारद्वाज भी इसी से मिलती-जुलती राय रखते हैं। उन्होंने कहा 'ये ज़्यादा जवाबी कार्रवाई का मुद्दा नहीं है। टैरिफ़ सिर्फ़ भारत पर ही नहीं लगाया गया है और ना ही सबसे ज़्यादा टैरिफ़ भारत पर लगा है। हमें सोच-समझकर अमेरिका के साथ बातचीत करनी चाहिए। ऐसी डील करनी चाहिए, जिससे भारत और अमेरिका दोनों का फ़ायदा हो।' वहीं, काउंसिल फ़ॉर सोशल डेवलपमेंट में प्रोफ़ेसर डॉ. बिस्वजीत धर का कहना है कि प्रधानमंत्री मोदी के अमेरिका दौरे में दोनों देशों के बीच व्यापार पर द्विपक्षीय बातचीत का फ़ैसला किया गया था। इस बातचीत में व्यापार पर हुए फ़ैसलों के बाद ही भारत कोई क़दम उठाएगा।

इस बीच, सोमवार को भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो से मुलाक़ात की। मुलाक़ात के बाद उन्होंने एक्स पर लिखा, 'मार्को रुबियो से हुई बातचीत अच्छी रही। इंडो-पेसिफ़िक, भारतीय उप-महाद्वीप, यूरोप, मिडिल ईस्ट, पश्चिम एशिया से जुड़े मुद्दों पर चर्चा हुई। द्विपक्षीय व्यापार समझौते को जल्दी से पूरा करने के महत्व पर सहमति बन गई है।'

भारत अमेरिका को दवाइयां, ऑटो कंपोनेंट्स और कपड़े जैसी चीज़ें निर्यात करता है और कच्चा तेल, पेट्रोलियम उत्पाद, सैन्य उपकरण और कृषि उत्पाद ख़रीदता है। कच्चे तेल के मामले में अमेरिका, भारत का पाँचवाँ और एलएनजी (लिक्विफ़ाइड नेचुरल गैस) के मामले में आपूर्ति करने वाला बड़ा देश है। भारत सरकार साल 2030 तक देश में प्राकृतिक गैस के इस्तेमाल के शेयर को 6.3 प्रतिशत से बढ़ाकर 15 प्रतिशत करना चाहती है।

अमेरिका भारत को निर्यात से अधिक आयात करता है। साल 2023 में भारत और अमेरिका के बीच 190 अरब डॉलर का व्यापार हुआ था। अमेरिका भारत का सबसे बड़ा ट्रेडिंग पार्टनर है। भारत और अमेरिका साल 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को 500 अरब डॉलर तक पहुँचाना चाहते हैं। साल 2023 में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार 190.08 अरब अमेरिकी डॉलर का था। बाक़ी 66.19 अरब डॉलर का व्यापार सर्विसेस यानी सेवाओं का था।

इसमें भारत का माल निर्यात 83.77 अरब डॉलर और माल आयात आयात 40.12 अरब डॉलर था। यानी इस द्विपक्षीय व्यापार में अमेरिका का व्यापार घाटा 43.65 अरब डॉलर का था।

अमेरिका के अधिकारियों ने यह दावा किया कि जब राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने तीन अप्रैल को टैरिफ़ लगाने की घोषणा की थी, तो उसके बाद से 50 से ज़्यादा देशों ने अमेरिका से बातचीत की कोशिश की। भारत की तरह ही वियतनाम, ताइवान और इसराइल ने भी टैरिफ़ पर जवाबी कार्रवाई की जगह बातचीत के रास्ते को चुना है। ताइवान के राष्ट्रपति विलियम लाई ने अमेरिका से बातचीत के लिए सामानों पर ज़ीरो टैरिफ़ का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि ताइवान अमेरिका से खेती, मशीनरी और रक्षा से जुड़े सामान ज़्यादा ख़रीदने की योजना बना रहा है। वहीं, इजराइल के प्रधानमंत्री बिन्यामिन नेतन्याहू ने इस मामले पर अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से मुलाक़ात की। उन्होंने कहा, 'हम अमेरिका के साथ व्यापार घाटे को खत्म कर देंगे। हमारा इरादा है कि इसे बहुत जल्द किया जाए। हमें लगता है कि यह सही क़दम है। हम व्यापार में आने वाली रुकावटों को भी ख़त्म करेंगे।'

नेतन्याहू पहले अंतरराष्ट्रीय नेता हैं, जिन्होंने राष्ट्रपति ट्रंप के टैरिफ़ लगाने की घोषणा करने के बाद उनसे मुलाक़ात की है। वियतनाम के प्रधानमंत्री फ़ाम मिन्ह चिन्ह ने कहा है कि वो अमेरिका से और ज़्यादा सामान ख़रीदेंगे। इनमें रक्षा उत्पाद भी शामिल हैं। वियतनाम पर अमेरिका ने 46 फ़ीसदी टैरिफ़ लगाया है। वो इस टैरिफ़ से सबसे ज़्यादा प्रभावित देश है।

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुप्रभात

नाव थी धँसी हुई
पुल था रस्सी की तरह तना हुआ
गंगा थी उत्तरवाहिनी
घाट था कष्टहरणी
एक रेलवे–स्टेशन था उजड़ा हुआ
जो अब चमगादड़ों का घर था
यह पानी से भीगा हुआ मटमैला दृश्य था
जिसके पार्श्व में
एक क़िला था ढहता हुआ
किसी अघोरी की तरह टहलता हुआ काल था
कविता जहाँ अवरोध थी !

- कृष्ण कल्पित

ग्लोबल स्किल पार्क की सभी सीटें भरी जाएं : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

प्रदेश के प्रत्येक विकासखंड में हो आईटीआई

- प्रदेश में विद्यमान उद्योगों की मांग के अनुरूप कौशल प्रशिक्षण की व्यवस्था करें सुनिश्चित
- मुख्यमंत्री ने की तकनीकी शिक्षा, कौशल एवं रोजगार विभाग की समीक्षा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि ग्लोबल स्किल पार्क की ब्रांड वैल्यू को स्थापित करते हुए यहाँ की सभी सीटें भरना सुनिश्चित किया जाएं। स्किल पार्क में संचालित सभी तकनीकी पाठ्यक्रमों, उनकी उपयोगिता और रोजगारपरक क्षमता पर केंद्रित प्रचार-प्रसार अभियान का संचालन व्यापक स्तर पर किया जाए। प्रदेश में विद्यमान उद्योगों की मांग के अनुरूप कौशल प्रशिक्षण की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए और युवाओं को प्रशिक्षण उपलब्ध कराने में निजी क्षेत्र का भी सहयोग लिया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश के हर विकासखंड में आईटीआई की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आईटीआई और पॉलिटेक्निक के विद्यार्थियों को प्रशिक्षण उपलब्ध कराने के लिए स्थानीय स्तर पर विद्यमान औद्योगिक इकाइयों के समन्वय से गतिविधियां संचालित की जाएं। इससे युवाओं के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार की उपलब्धता सुनिश्चित होगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने तकनीकी शिक्षा, कौशल एवं रोजगार विभाग की समीक्षा में यह निर्देश दिए। समत्व भवन (मुख्यमंत्री निवास) में हुई बैठक में तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री इंदर सिंह परमार, कौशल विकास एवं रोजगार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गौतम टेटवाल, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा तथा अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि युवाओं को स्वरोजगार, उद्यमिता और रोजगार के लिए प्रशिक्षित करने में तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास और रोजगार विभाग की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने विभाग में संचालित योजनाओं और कार्यक्रमों की प्रगति के प्रति असंतोष व्यक्त किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि युवाओं के कौशल विकास और उनके लिए रोजगारपरक कार्यक्रमों के लक्ष्य और समय-सीमा निर्धारित कर परिणाममूलक गतिविधियां संचालित की जाए।

नौ संकल्प नई ऊर्जा का बनेंगे स्त्रोत : मुख्यमंत्री

प्रधानमंत्री ने विश्व नवकार महामंत्र दिवस पर नौ संकल्प लेने का किया आह्वान

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए नौ संकल्पों से निश्चित ही नई ऊर्जा के स्त्रोत बनेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेशवासियों से नौ संकल्पों के पालन का आह्वान किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नई दिल्ली के विज्ञान भवन में नवकार महामंत्र दिवस पर समारोह का शुभारंभ करते हुए नवकार मंत्र के महत्व को रेखांकित किया और मंत्र को एकीकृत ऊर्जा का प्रवाह बताया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि नवकार महामंत्र नई पीढ़ी के लिए ज्ञान और दिशा के स्त्रोत के रूप में कार्य कर सकता है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने सामूहिक नवकार मंत्र के जाप के बाद सभी से नौ संकल्प लेने का आग्रह किया।

ये है नौ संकल्प

पहला संकल्प – जल संरक्षण, दूसरा संकल्प – एक पेड़ मां के नाम, तीसरा संकल्प – स्वच्छता का मिशन, चौथा संकल्प – वोकल फॉर लोकल, पांचवाँ संकल्प – देश दर्शन, छठा संकल्प – नैचुरल फार्मिंग को अपनाना, सातवाँ संकल्प – हेल्दी लाइफ स्टाइल को अपनाना, आठवाँ संकल्प – योग और खेल को जीवन में लाना और नौवाँ संकल्प – गरीबों की सहायता का संकल्प है।

चलते ट्रक में लगी आग

- कैबिन से आग उठी तो ड्राइवर गाड़ी से कूदा, आलू से भरा था ट्रक

सागर (नप्र)। सागर के नेशनल हाईवे-44 पर सुरखी के पास चलते ट्रक में आग लग गई। आग की लपटें उठती देख ड्राइवर ने ट्रक खड़ा किया और कूद गया। देखते ही देखते आग ने भीषण रूप ले लिया। मामले की सूचना पुलिस को दी गई। पुलिस मौके पर पहुंची और हाईवे पर वाहनों की आवाजाही रोकी। फायर फाइटर को सूचना दी। फायर ब्रिगेड की गाड़ी घटनास्थल पर पहुंची और आग पर काबू पाया। आगजनी में ट्रक के आगे का हिस्सा जला है।

दरअसल, आलू से भरा हुआ ट्रक सागर से नरसिंहपुर की ओर जा रहा था। तभी नेशनल हाईवे-44 पर सुरखी के पास अचानक से ट्रक के कैबिन से धुआं निकलने लगा। ड्राइवर कुछ समझ पाता, इससे पहले ही लपटें उठने लगीं। आग की लपटें देख ड्राइवर ने गाड़ी से कूदकर जान बचाई।

हाईवे पर वाहनों की आवाजाही रोकी

घटना की सूचना पर सुरखी थाना पुलिस ने मौके पर पहुंचकर हाईवे पर वाहनों की आवाजाही रोकी। एक साइड से वाहनों को निकाला गया। फायर फाइटर गाड़ी ने आग पर काबू पाया। आगजनी में ट्रक का कैबिन और आगे का हिस्सा जला है। ट्रक में आग लगने का कारण स्पष्ट नहीं हो सका है।

भोपाल, रतलाम-शिवपुरी में स्कूलों का समय बदला

एमपी में पारा 43 डिग्री पार, छिंदवाड़ा-पांढुर्णा में दोपहर बाद तेज बारिश, ओले भी गिरे

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में कहीं तेज गर्मी तो कहीं बारिश का दौर चल रहा है। मौसम विभाग ने बुधवार को जबलपुर-ग्वालियर समेत 30 जिलों में लू का अलर्ट जारी किया है। तेज गर्मी के चलते भोपाल, रतलाम और शिवपुरी में सभी स्कूलों का समय बदल गया है। उधर, छिंदवाड़ा और पांढुर्णा में दोपहर बाद तेज बारिश हुई और ओले गिरे। हवा इतनी तेज चली कि कुछ पेड़ गिर गए। भोपाल में दोपहर 12 बजे तक बादल छाए रहे, इसके बाद धूप निकली।

भोपाल में जिला शिक्षा अधिकारी एनके अहिरवार ने 12 बजे के बाद 8वीं तक स्कूल नहीं लगाने के आदेश जारी किए हैं। शिवपुरी के सभी सरकारी और निजी स्कूल सुबह 7.30 से दोपहर 12.30 तक लगेंगे। वहीं, रतलाम में सभी स्कूल सुबह 7 बजे से दोपहर 12 बजे तक लगेंगे।

आरबीआई ने दी गुड न्यूज

रेपो रेट में की कटौती

नई दिल्ली (एजेंसी)। मुद्रास्फीति में नरमी के बीच भारतीय रिजर्व बैंक ने बुधवार (9 अप्रैल) को आर्थिक वृद्धि को समर्थन देने के मकसद से प्रमुख नीतिगत दर रेपो रेट को 0.25 प्रतिशत घटाकर छह प्रतिशत करने का फैसला किया। गवर्नर संजय मल्होत्रा ने कहा, एमपीसी (मौद्रिक नीति समिति) ने सर्वसम्मति से नीतिगत रेपो दर को तत्काल प्रभाव से 25 आधार अंकों से घटाकर 6 फीसदी करने के लिए वोट किया। चालू वित्त वर्ष की पहली द्विमासिक मौद्रिक नीति समीक्षा पेश करते हुए आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने कहा, ''मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की छह सदस्यीय समिति ने आम सहमति से रेपो दर में 0.25 प्रतिशत कटौती करने का निर्णय किया है।'' उन्होंने कहा कि इसके साथ एमपीसी ने अपने रुख को 'तटस्थ' से 'उदार' करने का निर्णय किया है। इसका मतलब है कि आने वाले समय में नीतिगत दर के मामले में या तो यथास्थिति रह सकती है या फिर जरूरत पड़ने पर इसमें कटौती होगी। रेपो वह ब्याज दर है, जिस पर वाणिज्यिक बैंक अपनी तात्कालिक जरूरतों को पूरा करने के लिये केंद्रीय बैंक से कर्ज लेते हैं। आरबीआई मुद्रास्फीति को काबू में रखने के लिये इस दर का उपयोग करता है। रेपो दर में कमी करने का मतलब है कि मकान, वाहन समेत विभिन्न कर्जों पर मासिक किस्त में कमी आने की उम्मीद है।

बता दें कि आरबीआई ने इससे पहले इस साल फरवरी में मौद्रिक नीति समीक्षा में रेपो दर में 0.25 प्रतिशत की कटौती कर 6.25 प्रतिशत कर दिया था। यह मई, 2020 के बाद पहली कटौती और ढाई साल के बाद पहला संशोधन था।

बस ने ऑटो को टक्कर मारी, 3 की मौत, 4 गंभीर घायल

अनूपपुर में हादसे में ऑटो के परखच्चे उड़े

अनूपपुर (नप्र)। अनूपपुर में बस ने ऑटो को टक्कर मार दी। हादसे में ऑटो सवार तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 4 लोग गंभीर घायल हैं। पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और एम्बुलेंस से घायलों को अस्पताल पहुंचाया। जानकारी के अनुसार, हादसा राजेंद्र ग्राम मार्ग पर बुधवार सुबह करीब 11.30 बजे हुआ। ऑटो सवार सभी लोग बड़हर गांव के रहने वाले थे और अनूपपुर मंडी में अनाज बेचने जा रहे थे। घायलों को अनूपपुर से शहडोल मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया है। हादसे में ऑटो के परखच्चे उड़ गए। अनूपपुर कलेक्टर हर्षल पंचोली और एसपी मोतिउर रहमान ने घायलों का हाल-चाल जाना। बस ड्राइवर संतार अहमद (65) के खिलाफ लापरवाही पूर्वक बस चलाने का केस दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। राहगीरों की मदद से पुलिस ने घायलों को अस्पताल भिजवाया।

अंधे मोड़ पर हुआ हादसा

एसडीओपी सुमित केरकेट्टा ने बताया कि बस शहडोल से डिंडौरी जा रही थी। वहीं ऑटो में सवार लोग बड़हर से अनूपपुर बाजार आ रहे थे। शहडोल अमरकंटक मार्ग पर किरर घाट के पास अंधे मोड़ में ऑटो अपने साइड से आ रहा था। वहीं बस ने लापरवाही पूर्वक टर्न लेते हुए ऑटो को टक्कर मार दी।

तीन मृतकों में दो महिलाएं

- रामकुमार सिंह गोंड पिता दशरथ सिंह (40)
- सूरज वती सिंह पति मुकेश साल सिंह (40)
- मोहवती सिंह पति जगन्नाथ उम्र (40)

ये लोग हुए घायल
- माधव सिंह गोंड पिता दया सिंह (45)
- लल्लू यादव पिता कण्ठा यादव (45)
- अंकित चौधरी (25)
- दुर्गावती गोंड पति बालकरण (50)

भोपाल का तापमान

अधिकतम 22 °c

न्यूनतम 16°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ गुरुवार, 10 अप्रैल 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

इजराइल से जुड़े होने की अफवाह पर हिंसक प्रदर्शन

बांग्लादेश में बाटा, प्यूमा पर हमला, दुकानों में तोड़फोड़-लूटपाट

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश में इजराइल विरोधी प्रदर्शनकारियों ने बुधवार को कई इंटरनेशनल ब्रांड्स की दुकानों में लूटपाट और तोड़फोड़ की। प्रदर्शनकारी बाटा, KFC, पिज्जा हट और प्यूमा जैसे ब्रांड के शोरूम में घुस गए और वहां रखे सामानों को नुकसान पहुंचाया।यह घटना उस वक्त हुई जब हजारों लोग फिलिस्तीनियों के साथ एकजुटता दिखाने के लिए सिलहट, चटगांव, खुलना, बरिशाल, कमिला और ढाका में सड़कों पर उतरे थे। माना जा रहा है कि ये हिंसा उन फेक न्यूज के चलते फैली, जिनमें ये दावा किया गया था कि ये कंपनियां इजराइल से जुड़ी हैं। घटना ऐसे समय हुई, जब बांग्लादेशी सरकार निवेशकों को आकर्षित करने के लिए अपने पहले ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट की मेजबानी की तैयारी कर रही है।बता दें कि इजराइल ने 18 मार्च को गाजा पर हमला करके 19 जनवरी को हुआ सीजफायर तोड़ दिया था, जिसके बाद से अब तक इजराइली हमले में 1000 से ज्यादा फिलिस्तीनी मारे जा चुके हैं, जबकि 3000 से ज्यादा घायल हैं।

आजादी से पहले के 13 नियम-कानून बदलना चाहती म.प्र.सरकार

4 महीने में अधिकारी नहीं बता पाए किस एक्ट को खत्म करना है

भोपाल (नप्र)। मोहन यादव सरकार आजादी के पहले से लागू 9 विभागों के नियमों और अधिनियमों में बदलाव करना चाहती है। इसके लिए सरकार ने तैयारी कर ली है, लेकिन इन विभागों के अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव और सचिव स्तर के अधिकारी यह नहीं बता पा रहे हैं कि उनके विभाग के कितने नियम निरस्त किए जा सकते हैं या मौजूदा परिस्थितियों में किन नियमों में संशोधन की जरूरत है।

यह स्थिति तब है जब विधि विभाग ने संबंधित विभागों को उनके डिपार्टमेंट से संबंधित बदलाव के दायरे में आने वाले नियमों की पूरी जानकारी भी दे रखी है। जिन अधिनियमों की समीक्षा होनी है, उनमें लाइसेंस प्रणाली, किसानों की कर्जमाफी, अकाल राहत, साहूकारी नियंत्रण और नशीले पदार्थों के व्यापार से जुड़े प्रावधान शामिल हैं।विधि और विधायी कार्य विभाग का कहना है कि जिन विभागों में ऐसे अधिनियम और नियम लागू हैं जो देश की आजादी से पहले बनाए गए थे, उन्हें या तो निरस्त किए जाने की जरूरत है या फिर मौजूदा हालात के अनुसार उनमें

संशोधन किया जाना चाहिए। ऐसे नियमों की जानकारी संबंधित विभागों से शीघ्र मांगी गई है ताकि एकत्रित जानकारी के आधार पर शासन स्तर पर फैसला किया जा सके।

इन 9 विभागों से मांगी गई जानकारी

विधि और विधायी कार्य विभाग ने 9 विभागों से उनके पुराने नियमों और अधिनियमों की समीक्षा कर उन्हें निरस्त या संशोधित किए जाने को लेकर जानकारी मांगी है। इसके लिए विभागों के अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव और सचिवों को पत्र भेजे गए हैं। ये विभाग हैं शामिल

*जल संसाधन विभाग
*गृह विभाग
*उद्योग और व्यापार विभाग
*नगरीय विकास और आवास विभाग
*वाणिज्यिक कर विभाग
*पशुपालन विभाग
*राजस्व विभाग
*किसान कल्याण और कृषि विकास विभाग
*स्कूल शिक्षा विभाग

चार माह में नहीं बता पाए अफसर-विधि विभाग ने चार महीने पहले ही इन विभागों से जानकारी मांगी थी। इस दौरान विभाग ने तीन बार पत्र भी भेजे, लेकिन संबंधित अधिकारी यह नहीं बता पाए हैं कि उनके विभाग के कौन-से नियम और अधिनियम अब प्रासंगिक नहीं हैं, जिन्हें निरस्त या संशोधित किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय राजमार्ग-34 के उन्नयन से प्रदेश में बेहतर कनेक्टिविटी होगी सुनिश्चित : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ने केंद्रीय मंत्री गडकरी का माना आभार

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय राजमार्ग-34 के उन्नयन की स्वीकृति और अन्य विकास कार्यों की बहुमूल्य सौगात प्रदान करने पर केंद्रीय राजमार्ग एवं सड़क परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी का आभार माना। उन्होंने कहा है कि राज्य में विकास की गति को और अधिक बढ़ाने के लिए रोड और हाईवे का विशाल नेटवर्क आकार ले रहा है। राष्ट्रीय राजमार्गों के उन्नयन से क्षेत्र में बेहतर कनेक्टिविटी सुनिश्चित होगी और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। यह परियोजना मध्यप्रदेश की आधारभूत संरचना को सुदृढ़ करने के साथ समृद्धि के नए द्वार खोलेगी।केंद्रीय राजमार्ग एवं सड़क परिवहन मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय राजमार्ग-34 के शाहगढ़-बक्सवाहा-नरसिंहगढ़-दमोह से 63.50 किमी लंबाई के खंड को पेव्ड शोल्डर के साथ 2-लेन में अपग्रेड करने के लिए 531.84 करोड़ रुपए की लागत के साथ स्वीकृति दी गई है। राष्ट्रीय राजमार्ग-34 उत्तराखंड के गंगोत्री धाम को मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय राजमार्ग-44 (उत्तर-दक्षिण कॉरिडोर) पर लखनादौन से जोड़ता है।

चीनी सेना भारत के साथ मिल कर काम करने को तैयार

बीजिंग (एजेंसी)। चीन इस समय अमेरिका के साथ भीषण ट्रेड वॉर में उलझा हुआ है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चीनी सामानों पर टैरिफ बढ़ाकर 104 फीसदी कर दिया है। इससे भारत को लेकर भी चीनी सरकार और सेना के रुख में नरमी आ गई है। चीनी सरकार ने अमेरिकी टैरिफ का मुकाबला करने के लिए भारत से समर्थन मांगा है। वहीं चीन के रक्षा मंत्रालय ने कहा है कि उनके देश की आर्मी भारतीय सेना के साथ मिलकर काम करते हुए द्विपक्षीय संबंधों को बेहतर करना चाहती है। ग्लोबल टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक, चीनी के रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता झांग शियाओगांग ने बुधवार को कहा कि चीन और भारत के बीच राजनयिक संबंधों

की 75वीं वर्षगांठ मनाने के लिए चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अपने भारतीय राष्ट्रपति साथ बधाई संदेशों का आदान-प्रदान किया है। उन्होंने कहा कि दो प्राचीन सभ्यताओं, प्रमुख विकासशील देशों और वैश्विक दक्षिण के महत्वपूर्ण सदस्यों के रूप में चीन और भारत आधुनिकीकरण के अहम दौर में हैं। झांग ने आगे कहा कि चीनी सेना दोनों देश के नेताओं की आम सहमति को लागू करने, संचार और रणनीतिक आपसी विश्वास को मजबूत करने, सीमा क्षेत्रों में शांति और सौहार्द्र की रक्षा करने में विश्वास रखती है।

केंद्रीय मंत्री जीतन मांझी की नातिन की हत्या

गया (एजेंसी)। गया में केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी की नातिन की बुधवार को गोली मारकर हत्या कर दी गई है। मृतका की पहचान सुषमा देवी के रूप में हुई है। सुषमा पूर्व सीएम के भांजे की बेटी थी। वो अतरी ब्लॉक में विकास मित्र के पद पर काम करती थी, जबकि आरोपी पति रमेश पटना में ट्रक चलाता है। जानकारी के मुताबिक, दोपहर 12 बजे आरोपी ने घर में ही पत्नी के सीने में गोली मार दी और देसी कट्टा फेंककर फरार हो गया। दोनों की 14 साल पहले इंटरकास्ट मैरिज हुई थी। दोनों के 3 बच्चे हैं। बताया जा रहा है कि वारदात से पहले पति-पत्नी के बीच किसी बात को लेकर विवाद हुआ था। घटना अतरी प्रखंड के टेटूआ गांव की है। वारदात के वक्त मृतका की बहन और बच्चे

घर पर दूसरे कमरे में ही थे। गोली की आवाज सुनते ही मृतका की बहन और बच्चे मौके पर पहुंचे। वहीं, गोली चलने की आवाज सुनकर आसपास के लोग भी सुषमा के घर पहुंचे। फिर पुलिस को इसकी जानकारी दी। गांव के लोगों ने बताया कि 14 साल पहले बेलागंज थाना क्षेत्र के बरैनी गांव के रहने वाले रमेश सिंह से सुषमा की अंतरजातीय शादी हुई थी। दोनों को तीन बच्चे हैं, जिनमें 13 और 5 साल की बेटी है, जबकि 8 साल का एक बेटा है। गांव के कुछ लोगों ने बताया वह मिलनसार स्वभाव की थी।

भोपाल में कोर्ट चक्कर खाकर गिरा युवक, मौत

भोपाल। भोपाल जिला अदालत में बुधवार को पेशी के दौरान एक युवक चक्कर खाकर गिर गया। उसे जेपी अस्पताल ले जाया गया, जहां मौत हो गई। पुलिस का कहना है कि युवक टीबी और अस्थमा से पीड़ित था। वहीं मां का आरोप है कि तबीयत बिगड़ने पर समय पर अस्पताल नहीं पहुंचाने से बेटे की मौत हुई है। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

छब्बीस मरीन राफेल डील को मंजूरी, बढ़ेगी नेवी की ताकत

- फ्रांस से 64 हजार करोड़ की डील तय, मोदी सरकार की मुहर

चीन से मुकाबले के लिए हिंद महासागर में की जाएगी तैनाती

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने फ्रांस से 26 मरीन राफेल फाइटर जेट की खरीदी को मंजूरी दे दी है। पीएम नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता वाली सुरक्षा पर कैबिनेट कमेटी ने 9 अप्रैल को डील पर मुहर लगाई। भारत को 64 हजार करोड़ रुपए में 26 मरीन फाइटर मिलने हैं। इसके बाद फ्रांस 22 सिंगल-सीटर और 4 ट्विन-सीटर जेट भारतीय नौसेना को सौंपेगा। इन्हें हिंद महासागर में चीन से मुकाबले के लिए आईएनएस विक्रांत पर तैनात किया जाएगा। दोनों देशों के बीच 26 राफेल मरीन जेट की खरीद को लेकर कई महीनों से बातचीत चल रही थी। भारत नौसेना के लिए राफेल मरीन की डील उसी बेस प्राइज में करना चाहता था, जो 2016 में वायुसेना के लिए 36 विमान खरीदते समय रखी थी। इस डील की जानकारी सबसे पहले पीएम मोदी की 2023 की फ्रांस यात्रा के दौरान सामने आई थी। इसके बाद रक्षा मंत्रालय ने लेटर ऑफ रिक्वेस्ट जारी किया था, जिसे फ्रांस ने दिसंबर 2023 में स्वीकार किया। इससे पहले सितंबर 2016 में 59 हजार करोड़ रुपए की डील में भारत वायुसेना के लिए फ्रांस से 36 राफेल लड़ाकू विमान खरीद चुका है। पहले दौर की चर्चा जून 2024 में हुई थी। तब अधिकारियों ने कमेटी से चर्चा की थी।

पश्चिम बंगाल में लागू नहीं होगा वक्फ कानून

- ममता बोलीं-गोली मार दो पर धर्म के नाम पर बंटवारा नहीं होने दूंगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने मंगलवार को कहा कि नया वक्फ कानून पश्चिम बंगाल में लागू नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि जब तक पश्चिम बंगाल में ममता दीदी है, मुस्लिम समुदाय की संपत्ति की रक्षा करेगी। ममता कोलकाता में जैन समाज के कार्यक्रम में बोल रही थीं। उन्होंने कहा- कुछ लोग पूछते हैं कि मैं हर धर्म के स्थानों पर क्यों जाती हूं। मैं पूरी जिंदगी जाऊंगी। चाहे कोई गोली मार दे, मुझे एकता से अलग नहीं किया जा सकता। बंगाल में धर्म के नाम पर बंटवारा नहीं होगा। जियो और जीने दो यही हमारा रास्ता है। इस बयान पर भाजपा नेता और पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता सुवेंदु अधिकारी ने कहा कि ममता फर्जी हिंदू हैं, अपनी भाषा और आचरण से उन्होंने

यह सिद्ध कर दिया है। मुर्शिदाबाद में हिंदुओं की दुकानों पर तोड़फोड़ की गई, पुलिस पर हमला किया गया। फिर भी ममता चुप हैं। वक्फ संशोधन कानून लोकसभा-राज्यसभा से पास होने के बाद 8 अप्रैल से देश में लागू कर दिया गया है। इसकी संवैधानिकता के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में 12 याचिकाएं दाखिल हो चुकी हैं। सुप्रीम कोर्ट इस पर सुनवाई के लिए तैयार है। तारीख अभी नहीं तय की है। इधर, जम्मू-कश्मीर विधानसभा में बुधवार को लगातार तीसरे दिन नए वक्फ कानून पर हंगामा हुआ। विधानसभा में नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) और भाजपा के विधायकों के बीच हाथापाई हो गई।

ट्रम्प ने अब दवाओं पर टैरिफ लगाने का किया ऐलान

- कहा- इससे फार्मा कंपनियां वापस अमेरिका आ जाएंगी

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने ऐलान किया है कि हम जल्द ही दवाइयों पर भारी टैरिफ लगाने जा रहे हैं। ट्रम्प ने कहा कि उनका मकसद विदेश में दवा बना रही कंपनियों को अमेरिका में वापस लाना और घरेलू दवा इंडस्ट्री को बढ़ावा देना है। ट्रम्प ने कहा कि दूसरे देश दवाओं की कीमतों को कम रखने के लिए बहुत ज्यादा दबाव बनाते हैं। वहां ये कंपनियां सस्ती दवा बेचती हैं, लेकिन अमेरिका में ऐसा नहीं होता है। एक बार जब इन दवा कंपनियों पर टैरिफ लग जाएगा तो ये सारी कंपनियां अमेरिका वापस आ जाएंगी। अगर अमेरिका दवाओं पर भी टैरिफ लगाने का फैसला लेता है तो इसका भारत पर भी असर पड़ेगा। भारतीय फार्मास्युटिकल कंपनियां हर साल अमेरिका को 40 फीसदी जेरेनिक दवाएं भेजती हैं। ट्रम्प ने कहा कि दवाएं

दूसरे देशों में बनती हैं और इसके लिए आपको ज्यादा कीमत चुकानी पड़ती है। लंदन में जो दवा 88 डॉलर में बिकती है, वही दवा अमेरिका में 1300 डॉलर में बिक रही है। अब यह सब खत्म हो जाएगा। अमेरिकी राष्ट्रपति बोले कि टैरिफ लगाने से फार्मा कंपनियां वापस आएंगी, क्योंकि अमेरिका बहुत बड़ा बाजार है। अगर ऐसा नहीं हुआ तो विदेशी दवा कंपनियों को भारी टैक्स चुकाना पड़ेगा।

नवकार महामंत्र क्यों है इतना खास, नंगे पांव पहुंचे पीएम मोदी

- शांति और एकजुटता के लिए 108 देश के लोगों ने किया यह जाप
- पीएम बोले-यह शांति,सद्भाव और पर्यावरण संरक्षण के लिए सबक
- मोदी ने कहा- जैन साहित्य भारत की आध्यात्मिक भव्यता की रीढ़ है

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नवकार महामंत्र दिवस पर आयोजित नवकार महामंत्र कार्यक्रम में शामिल होने के लिए बिना जूते के पहुंचे। इसके अलावा उन्होंने मंच पर नहीं बल्कि आम लोगों के साथ बैठकर कार्यक्रम में भाग लिया। इस दौरान उन्होंने पारंपरिक धोती और कुर्ता धारण किया था। इस दौरान उन्होंने कहा कि जैन धर्म ने भारत की पहचान स्थापित करने में अमूल्य भूमिका निभाई है। उन्होंने जोर देकर कहा कि

इसके मूल्य आतंकवाद, युद्ध और पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी वैश्विक चुनौतियों से पार पाने में मददगार हैं। पीएम मोदी ने नवकार महामंत्र दिवस के अवसर पर आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि उनकी सरकार इस प्राचीन धर्म की विरासत और शिक्षाओं के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि तीर्थंकरों की शिक्षाओं और मूर्तियों के जरिए इस धर्म का प्रभाव संसद भवन पर दिखाई देता है। नवकार महामंत्र दिवस आध्यात्मिक सद्भाव और नैतिक चेतना का एक महत्वपूर्ण उत्सव है, जो जैन धर्म में सबसे अधिक पवित्र है। इस नवकार महामंत्र के सामूहिक जप के माध्यम से लोगों को एकजुट करने का प्रयास किया जाता है।

गूगल मैप ने बिहार की जगह दिखा दी यूपी के एक गांव की लोकेशन

- रेल पटरी पर पहुंची कार, सामने से आ रही थी तेज रफ्तार मालगाड़ी
- ड्राइवर ने लगाया ब्रेक, पार्टी करने आए आदर्श राय की बच गई जान

गोरखपुर (एजेंसी)। गूगल मैप के सहारे रास्ता सफर करना अब खतरनाक होता जा रहा है। उत्तर प्रदेश में कई ऐसे मामले सामने आ चुके हैं।ताजा केस गोरखपुर से सामने आया है। यहां देर रात एक युवक पार्टी करने के बाद अपने गांव वापस निकला। गांव की जगह वह रेलवे ट्रैक पर पहुंच गया। तभी सामने से तेज

रफ्तार में मालगाड़ी आते देख कार सवार के होश उड़ गए। उसकी किस्मत अच्छी थी कि ट्रेन के ड्राइवर ने समय रहते इमरजेंसी ब्रेक लगा दी वर्ना कुछ भी हो सकता था।

सरकार ने ईवीएम में गड़बड़ी की, बैलेट से हो चुनाव

- गुजरात में कांग्रेस के 84वें अधिवेशन में बोले मल्लिकार्जुन खड़गे
- पार्टी के कार्यक्रम में सोनिया और राहुल रहे मौजूद, प्रियंका नहीं आईं

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात के अहमदाबाद में कांग्रेस का 84वां अधिवेशन हो रहा है। यह दो दिन (8 और 9 अप्रैल) का है। मंगलवार को पहले दिन कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक चार घंटे चली। आज दूसरे दिन साबरमती रिवरफ्रंट पर मुख्य अधिवेशन हो रहा है, जिसमें देशभर से 1700 से अधिक कांग्रेस कमेटी के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। अधिवेशन में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, सोनिया गांधी और राहुल मौजूद हैं, लेकिन प्रियंका गांधी नहीं पहुंचीं। चुनाव बैलेट पेपर से होना चाहिए, ईवीएम से नहीं खड़गे ने ईवीएम पर सवाल उठाते हुए कहा कि सरकार ने ऐसी तकनीक बनाई है, जिससे उन्हें फायदा हो और विपक्ष को नुकसान। उनका सुझाव है कि चुनाव बैलेट पेपर से होना चाहिए, ईवीएम से नहीं। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र चुनाव भी धोखे से जीता। महाराष्ट्र में 150 सीटों पर लड़कर 138 पर जीत हासिल की गई, जो 90 प्रतिशत जीत है। ऐसा पहले कभी नहीं देखा। खड़गे ने आगे कहा- सब कुछ पता लगा लिया जाएगा, क्योंकि चोर चोरी करता है और आज नहीं

तो कल पकड़ा जाएगा। नेहरू ने जो बनाया, उसे मोदी खत्म करना चाहते हैं अधिवेशन के दूसरे दिन की शुरुआत झंडावंदन के साथ हुई। इसके बाद पार्टी अध्यक्ष खड़गे ने कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने कहा- नरेंद्र मोदी एक-एक करके सार्वजनिक क्षेत्र को बेचकर अपने दोस्तों को दे रहे हैं और देश को बेचकर चले जाएंगे। उनका मानना है कि जवाहरलाल नेहरू ने जो बनाया, उसे मोदी खत्म करना चाहते हैं, जबकि सरकार अपने उद्योगपति मित्रों को फायदा पहुंचा रही है। वे सिर्फ कांग्रेस को गालियां देते हैं, इसके अलावा कोई बात नहीं करते। वक्फ संशोधन अधिनियम पर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा, महत्वपूर्ण सार्वजनिक मुद्दों पर चर्चा करने के बजाय, सरकार ने संसद में सुबह 3-4 बजे तक सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के लिए बहस की। मणिपुर जैसे मुद्दों पर, सुबह 4.40 बजे बहस शुरू हुई। खड़गे बोले, मैंने अमित शाह से कहा कि हमें अगले दिन इस पर चर्चा करनी चाहिए।

सांसद डॉ. लता वानखेड़े की आईपीयू कांफ्रेंस में भागीदारी

भोपाल (नप्र)। उज्बेकिस्तान की राजधानी ताशकंद में आयोजित 150वीं इंटर-पार्लियामेंटरी यूनियन (आईपीयू) कांफ्रेंस में भारतीय संसद का प्रतिनिधित्व कर रही सांसद डॉ. लता वानखेड़े ने एक संवेदनशील और विश्व स्तर पर प्रासंगिक मुद्दे को उठाकर न सिर्फ अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान आकर्षित किया, बल्कि भारत की सामाजिक प्रतिबद्धता को भी स्पष्ट रूप से सामने रखा। अनाथालय तस्करी पर केंद्रित उनके वक्तव्य ने आईपीयू के मंच पर भारत की छवि को एक मानवीय और संवेदनशील राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत किया। इस विषय पर 2023 में आईपीयू द्वारा पारित प्रस्ताव का हवाला देते हुए डॉ वानखेड़े ने कहा कि यह प्रस्ताव एक शुरुआत थी, और अब समय आ गया है कि सदस्य राष्ट्र इस दिशा में कोई ठोस कदम उठाए। सांसद डॉ. लता वानखेड़े का भाषण कई स्तरों पर प्रभावशाली रहा। सांसदों की भूमिका को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि अनाथालय तस्करी को रोकने और दोषियों को सज़ा देने के लिए प्रभावी कानूनों की आवश्यकता है। उन्होंने पारिवारिक विकल्पों जैसे फोस्टर केयर और गोद लेने को प्राथमिकता देने की बात कही। उन्होंने सुझाव दिया कि सरकार को नकली अनाथालयों पर पैसा खर्च करने के बजाय परिवारों को एक साथ रखने वाले कार्यक्रमों पर निवेश करना चाहिए। चूंकि यह अपराध सीमाओं के पार होता है, सांसद ने देशों के बीच सहयोग, जानकारी साझा करने और एक वैश्विक निगरानी तंत्र की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। सांसद डॉ. वानखेड़े ने कहा ये हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नई सोच का नया भारत है जो अब वैश्विक मंचों पर केवल आर्थिक या रणनीतिक मुद्दों तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक और मानवीय सरोकारों में भी सक्रिय नेतृत्व कर रहा है।

भोपाल में बीकॉम की छात्रा ने फांसी लगाई, मौत

सीए के ऑफिस में रिसेप्शनिस्ट का जॉब करती थी, नहीं मिला सुसाइड नोट

भोपाल (नप्र)। भोपाल की रिसालदार कॉलोनी में रहने वाली बी.कॉम की छात्रा ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। खुदकुशी के कारणों का फिलहाल खुलासा नहीं हो सका है। पुलिस को घटना स्थल से सुसाइड नोट नहीं मिला है। शव को स्टोर रूम से बरामद किया गया था। घटना मंगलवार की रात की है। बुधवार की दोपहर पीएम के बाद बॉडी परिजनों को सौंप दी गई है। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। गौतम नगर पुलिस के मुताबिक निशा कुशवाह (19) पुत्री स्वर्गीय विजय कुशवाह निवासी रिसालदार कॉलोनी छोला सरकारी कॉलेज से बी.कॉम सेकेंड ईयर की पढ़ाई कर रही थी। इसी के साथ वह एक सीए के ऑफिस में बतौर रिसेप्शनिस्ट जॉब करती थी। मंगलवार की रात मां काम में व्यस्त थीं। भाई काम पर गया हुआ था। मां जब खाने के लिए बेटी को बुलाने पहुंची तो वह रूम में नहीं थी। आवाजें देने पर उसने जवाब नहीं दिया।

स्टोर रूम में मां ने देखा शव

तब मां स्टोर रूम पहुंची, यहां उन्होंने बेटी को साड़ी के बने फंदे पर लटका हुआ देखा। इसके बाद में पड़ोसियों को शोर मचाकर बुलाया। बॉडी उतारने के बाद पुलिस को सूचना दी। पुलिस का कहना है कि परिजनों के डिटेल बयान दर्ज नहीं किए जा सके हैं। सुसाइड नोट नहीं मिलने से आत्महत्या के कारणों का खुलासा नहीं हो सका है।

नवकार महामंत्र विश्व में सद्भाव और शांति की स्थापना का प्रभावी सूत्र : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

विश्व नवकार महामंत्र दिवस पर रवीन्द्र भवन भोपाल में आयोजित कार्यक्रम में हुए शामिल

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि नवकार महामंत्र जैन धर्म का सबसे पावन एवं शक्तिशाली मंत्र है, जो विनम्रता, अहिंसा, भाईचारे और आत्मशुद्धि का संदेश देता है। यह मंत्र न केवल मानसिक शांति और आंतरिक संतुलन का माध्यम है, बल्कि विश्व में सद्भाव और शांति की स्थापना का प्रभावी सूत्र भी है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने विश्व नवकार महामंत्र दिवस पर रवीन्द्र भवन भोपाल में आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री आचार्य प्रमाण सागर जी महाराज एवं अन्य आचार्य गण से आशीर्वाद प्राप्त किया।

प्रधानमंत्री के संबोधन का उपस्थित श्रद्धालुओं एवं अनुयायियों ने किया श्रवण: उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत आज आध्यात्मिक पुनरुत्थान और सांस्कृतिक जागरण की दिशा में तेज़ी से अग्रसर है। भारत की आत्मा उसकी अध्यात्म-समृद्ध परंपरा में निहित है। ऐसे आयोजनों के माध्यम से हम उस आत्मा को पुनः जाग्रत करने का कार्य कर रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी नई दिल्ली के विज्ञान भवन में 'नवकार महामंत्र दिवस' कार्यक्रम में शामिल हुए। प्रधानमंत्री श्री मोदी के संबोधन का सजीव प्रसारण सभी उपस्थित श्रद्धालुओं एवं अनुयायियों ने श्रवण एवं दर्शन किया।

जब आत्मा स्वयं को पहचानती है, तब वह महावीर बनती है: मुनिश्री आचार्य प्रमाण सागर: मुनिश्री आचार्य प्रमाण सागर जी महाराज ने वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में नवकार महामंत्र की प्रासंगिकता को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि जब विश्व आतंक, हिंसा और युद्ध के भयावह दौर से गुजर रहा है, तब नवकार महामंत्र शांति, सह-अस्तित्व और आत्मबोध की ओर मार्गदर्शन करता है। उन्होंने कहा कि महावीर का जन्म नहीं, निर्माण होता है - जब आत्मा स्वयं को पहचानती है, तब वह महावीर बनती है।

आचार्य प्रमाण सागर जी महाराज ने कहा कि सच्चा वंदन केवल बाह्य अर्चना नहीं बल्कि अपने अस्तित्व के प्रति जागरूकता है। जब हम अपने अंदर के महावीर को पहचानते हैं और उसका वंदन करते हैं, तभी हम सम्पूर्ण विश्व का वंदन कर रहे होते हैं। नवकार मंत्र की आराधना सम्पूर्ण विश्व की शांति के लिए है। उन्होंने कहा कि धर्म का आश्रय, अर्थात् सत्य, तप, अनुशासन और धैर्य को जीवन में अपनाना आवश्यक है। धर्म को अपने स्वभाव और प्रवृत्ति में लाने से ही समाज और राष्ट्र का कल्याण संभव है। कार्यक्रम में पूर्व मंत्री श्री जयंत मलैया, नगर निगम अध्यक्ष श्री किशन सूर्यवंशी, जैन संत समाज के पूज्य संतगण एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

संत प्रमाणसागर बोले- भारत को हिन्दू राष्ट्र होना ही चाहिए

जो हिंसा से दूर रहे वो हिन्दू, मंत्री पटेल के निवास पर किया शंका समाधान

भोपाल (नप्र)। जैन संत आचार्य प्रमाण सागर जी महाराज भोपाल में मंत्री प्रहलाद पटेल के आवास पर पहुंचे। यहां मंत्री पटेल ने परिवार सहित उनका पाद प्रक्षालन कर आशीर्वाद लिया। पंचायत मंत्री के ही सरकारी आवास में जैन संत प्रमाण सागर ने शंका समाधान (लोगों की जिज्ञासाओं पर सवाल-जवाब किए) किया। हिन्दू राष्ट्र की मांग को लेकर प्रमाण सागर ने कहा- मैं तो कहता हूं कि हिन्दू राष्ट्र होना ही चाहिए। हिन्दू का मतलब कोई जाति या वर्ग विशेष नहीं है। हिन्दू यानि वह जो हिंसा से दूर रहे। हम तो चाहते हैं भारत राष्ट्र ऐसा हो जो हिंसा से पूरी तरह मुक्त हो और हिन्दू राष्ट्र हो। भारत से मांस निर्यात को लेकर प्रमाण सागर महाराज ने कहा,ये तो भारत के लिए कलंक है कि भारत जैसे अहिंसावादी देश से मांस का निर्यात हो रहा। जिस देश में हमने चूल्हे की पहली रोटी गाय के लिए समर्पित की है। उस देश में गाय के अस्तित्व पर प्रश्न है। ये चीजें बिल्कुल ठीक नहीं हैं। मैं इस बात का समर्थन करता हूं कि मांस निर्यात पर तत्काल प्रतिबंध लगना चाहिए। और गौमाता को यदि राष्ट्रीय पशु के रूप में घोषित किया जाए तो इससे अच्छी बात नहीं हो सकती। बल्कि ये बहुत पहले हो जाना चाहिए था। मंत्री प्रहलाद पटेल ने जैन आचार्यों की ससंघ आगवानी कर अपने आवास पर परिवार के साथ पाद प्रक्षालन किया।

हमारे डीएनए में भारतीयता: हिन्दुओं को एकजुट होने के सवाल पर प्रमाण सागर महाराज ने कहा, मैं तो मानता हूं कि एकजुट हैं। अलग कहां हैं? हम सब एक ही हैं। एक ही संस्कृति में जीने वाले लोग हैं। भारतीय संस्कृति हमारी राष्ट्रीय मान्यता है। हमारी उपासना पद्धतियां भिन्न हो सकती हैं। पर, हम सबके डीएनए में एक ही बात है वो है भारतीयता। हम भारतीयता के संपोषक हैं। भारतीयता को बढ़ाने के लिए समर्पित रहने वाले लोग हैं। हम सबको एक नाम पर एक होना चाहिए वो है भारतीयता और भारतीय संस्कृति।

भोपाल कोर्ट में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

विश्व स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष्य में मुफ्त चिकित्सीय जांच

भोपाल (नप्र)। भोपाल जिला कोर्ट में प्रधान जिला न्यायाधीश भोपाल मनोज कुमार श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में मुख्य चिकित्सा शिविर का आयोजन बुधवार को किया गया। विश्व स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष्य में निःशुल्क चिकित्सीय जांच की जा रही है।

जिसमें सैकड़ों लोगों ने मुफ्त जांच का लाभ लिया। प्राधिकरण के सचिव सुनीत अग्रवाल द्वारा बताया गया कि न्यायाधीश, एडवोकेट, न्यायालय कर्मचारियों एवं पक्षकारों द्वारा शिविर में स्वास्थ्य परीक्षण कराया जा रहा है।

शिविर में करीब 500 लोगों ने स्वास्थ्य लाभ लिया है। उन्होंने बताया कि समय-समय पर कोर्ट परिसर में इस तरह के आयोजन किए जाते रहे हैं। जिससे कोर्ट में काम करने वाले तमाम लोगों की सेहत की स्थिति जांची जा सके।

जल की बूंद-बूंद का संरक्षण करें : मंत्री सिलावट

जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत केरवा डेम के समीप किया श्रमदान

भोपाल (नप्र)। जल संसाधन विभाग मंत्री श्री तुलसी राम सिलावट ने बुधवार को 'जल गंगा संवर्धन' अभियान के अंतर्गत केरवा डेम के समीप श्रमदान किया। इस अवसर पर उन्होंने उपस्थित सभी नागरिकों से जल की एक-एक बूंद को संरक्षित करने का आह्वान किया। मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के संकल्प को पूरा करने और नदियों एवं तालाबों के संवर्धन के लिए प्रदेश में 30 मार्च से 30 जून तक 'जल गंगा संवर्धन' अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान में जल स्रोतों के संरक्षण, जल संरक्षण एवं संवर्धन के कार्य व्यापक पैमाने पर किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस अभियान को सभी अपनी सक्रिय भागीदारी से सफल बनाएं।

केरवा डेम, भोपाल के समीप जल संरक्षण एवं संवर्धन के लिए आयोजित किए गए श्रमदान कार्यक्रम में विधायक श्री भगवानदास सबनानी, विधायक श्री रामेश्वर शर्मा, विधायक श्री विष्णु खत्री, श्री तीरथ मीणा, जनपद पंचायत अध्यक्ष श्री प्रमोद राजपूत, सरपंच श्रीमती मीरा तोमर, पर्यावरण विद श्री अभिलाष खांडेकर, विभागीय अधिकारी और बड़ी संख्या में ग्रामवासी उपस्थित थे। मंत्री श्री सिलावट ने अधिकारियों को जल स्रोतों के सौंदर्यीकरण और गहरीकरण करने के निर्देश दिए। उन्होंने जल संसाधन विभाग के तालाबों पर हर प्रकार के अतिक्रमण को तत्काल हटाने के भी सख्त निर्देश दिए। श्री सिलावट ने कहा कि जल संकट का समाधान जल गंगा संवर्धन अभियान में निहित है।

उन्होंने झाबुआ जिले की प्रसिद्ध हलमा प्रथा से प्रेरणा लेते हुए सभी से अपने जीवन में कम से कम 1 घंटा श्रमदान करने का आग्रह किया। मंत्री श्री सिलावट ने पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नदी जोड़ो अभियान के संकल्प को मध्य प्रदेश सरकार द्वारा राज्य में केन-बेतवा और पार्वती-कालीसिंध नदी जोड़ो परियोजनाओं के माध्यम से पूरा किए जाने की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बुंदेलखंड क्षेत्र में केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना से पानी की उपलब्धता सुनिश्चित की जा रही है। श्री सिलावट ने मध्य प्रदेश में अगले पांच वर्षों में सिंचाई रकबे को 65 हजार हेक्टेयर से बढ़ाकर 100 लाख हेक्टेयर तक पहुंचाने के लक्ष्य की भी बात कही। मंत्री श्री सिलावट ने वहां उपस्थित सभी लोगों को जल संसाधनों की रक्षा और संरक्षण करने का संकल्प दिलाया। उन्होंने कहा कि यह अभियान हम सभी का है और इसकी सफलता की नींव प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी पर टिकी हुई है।

लाल किले पर विक्रमोत्सव महानाट्य देखने जाएंगे सभी कैबिनेट मंत्री

- मप्र के मंत्री 12-14 को दिल्ली में, मोदी 11 को, शाह 13 व 17 को एमपी दौरे पर

भोपाल (नप्र)। मोहन कैबिनेट के सभी मंत्री 12 से 14 अप्रैल के बीच दिल्ली में लाल किला परिसर में होने जा रहे विक्रमोत्सव महानाट्य का मंचन देखने जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मंगलवार को कैबिनेट बैठक से पूर्व मंत्रिमंडल को संबोधित करते हुए सभी से इस महानाट्य को देखने लाल किला परिसर पहुंचने का निमंत्रण दिया। इस महानाट्य के जरिए मप्र की संस्कृति की झलक भी राष्ट्रीय स्तर पर दिखाई देगी। सीएम ने कहा कि 11 अप्रैल को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अशो नगर जिले

के ईसागढ़ स्थित आनंदपुर धाम में आएंगे। वहीं केंद्रीय गृह व सहकारिता मंत्री अमित शाह इसी माह दो बार मप्र के दौरे पर आएंगे। वे 13 अप्रैल को भोपाल और 17 अप्रैल को नीमच आएंगे। शाह ही उपस्थिति में ही राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड और मप्र दुग्ध संघ के बीच सहकार्यता अनुबंध पर हस्ताक्षर होंगे। इस दौरान शाह मप्र में सहकारिता से जुड़ी परियो जनाओं और कार्यक्रमों की समीक्षा भी करेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 11 अप्रैल को अशोकनगर के ईसागढ़ स्थित श्री परमहंस अद्वैत मत श्री आनंदपुर धाम में आध्यात्मिक कार्यक्रम में शामिल होंगे। इससे पहले मंगलवार को भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने धाम पहुंचकर तैयारियों का जायजा लिया और ट्रस्टी सोनू महात्मा व सोमनाथ महात्मा से चर्चा की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी धर्म और आध्यात्म की परंपरा को वैश्विक मंच पर स्थापित कर रहे हैं। श्री आनंदपुर धाम की लाखों संगतें सनातन संस्कृति के प्रचार-प्रसार में जुटी हैं। प्रधानमंत्री का यहां आगमन ऐतिहासिक अवसर होगा।

आज गडकरी आएंगे...

सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी 10 अप्रैल को धार के बदनावर में राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं का लोकार्पण और भूमि-पूजन करने आ रहे हैं। सीएम ने मंत्रिमंडल को बताया कि मंदसौर, दमोह, मुरैना और नरसिंहपुर जिलों में इस साल एग्रोविजन का आयोजन किया जाएगा। इसमें कृषि, कृषि अभियांत्रिकी, उद्यानिकी एवं खाद्य प्र-संस्करण, कृषि विश्वविद्यालय, दुग्ध महासंघ, सहकारिता, पशुपालन और पंचायत एवं ग्रामीण विभाग सहभागिता करेंगे।

'भोपाल में पेड़ों की कटाई हो रही, क्या कार्रवाई करेंगे?'

जैव विविधता समिति की मीटिंग में अध्यक्ष ने उठाया मुद्दा, डीएफओ बोले-ये सही है

भोपाल (नप्र)। भोपाल के डीएफओ (वन मंडलाधिकारी) ऑफिस में बुधवार को हुई जैव विविधता प्रबंधन समिति की बैठक में पेड़ों की कटाई का मुद्दा उठा। समिति अध्यक्ष और जिपं सदस्य विनय मेहर ने कहा- बैरसिया और नजीराबाद के जंगल उजाड़े जा रहे हैं, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हो रही। इस पर डीएफओ लोकप्रिय भारती ने कहा कि ये सही है। विदिशा, गुना, राजगढ़ रूट से लकड़ी की गाड़ियां गुजर रही हैं। फॉरेस्ट की टीम नजर रखती है, लेकिन कम्युनिकेशन गेप है। अध्यक्ष मेहर ने कहा कि भोपाल में पेड़ों की कटाई हो रही है। हर रात पेड़ काटे जा रहे हैं। नीचे तक सब मिले हुए हैं। ट्रकों को कोई नहीं रोकता। इस पर लगाम लगाई जाए। नजीराबाद और बैरसिया में यह बड़े पैमाने पर चल रहा है। अध्यक्ष के सवाल पर डीएफओ भारती ने जवाब दिया कि यदि स्टाफ इसमें शामिल है, तो निलंबन की कार्रवाई की जाएगी। इस पर नजर रखी जा रही है।

अध्यक्ष बोले- जंगल पठारों में तब्दील हो गए: समिति अध्यक्ष मेहर ने कहा कि कुछ अधिकारी एवं बाहरी लोगों की मिलीभगत से पेड़ों की अंधाधुंध कटाई हो रही है। जंगल पठारों में तब्दील हो रहे हैं। मेरे पास प्रमाण है। जिले के अधिकारियों और क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों के साथ समिति गठित कर वनों का निरीक्षण करें। जिन पेड़-पौधों के लिए कहां कितना बजट आवंटित हुआ है? कितना खर्च किया है? कितने पेड़ पौधे खरीदे हैं? कितनी जमीन पर लगे और कितने पेड़ जिंदा है? इनकी पूरी जानकारी मुझे उपलब्ध कराए। बैठक के दौरान जंगलों से पेड़ काटने का मुद्दा उठाते समिति अध्यक्ष विनय मेहर, सदस्य विक्रम भालेश्वर और जिला पंचायत अध्यक्ष मोहन सिंह जाट।

फड़ में दलाली पर कार्रवाई क्यों नहीं: जिपं उपाध्यक्ष मोहन सिंह जाट और सदस्य प्रतिनिधि अनिल हाड़ा ने कहा कि सभी ग्राम पंचायतों में जैव विविधता समिति का गठन हो। इस बारे में जिला पंचायत सीईओ इला तिवारी को लेटर लिखा जाए। तेंदुपत्ता की फड़ में दलाली हो रही है। तेंदुपत्ता संग्रहण करने वालों से फड़ पर दलाली ली जा रही है। ऐसा कोई नियम नहीं है। डीएफओ आदेश निकाले और कार्रवाई करें। इस पर भारती ने कहा कि ऐसा होने पर तुरंत कार्रवाई करेंगे।

किस काम की समिति, जब बजट ही नहीं है: करीब तीन साल में पहली बार जैव विविधता प्रबंधन समिति की बैठक हुई थी। इसमें अध्यक्ष मेहर ने समिति के काम और बजट के बारे में पूछा। जब बताया गया कि कोई फंड नहीं है तो अध्यक्ष मेहर ने कहा कि जब कोई बजट ही नहीं है तो समिति किस काम की है? जैव विविधता पर कोई तालाब गहरीकरण का काम भी होता है क्या? डीएफओ भारती और एसडीओ धीरज सिंह चौहान ने इस पर गहरीकरण का काम नहीं होने की बात बताई।

थाने में शिकायत की धमकी से घबराए युवक का सुसाइड

भोपाल के पार्टनर ने लगाए थे धोखाधड़ी के आरोप, बहन के घर पिया था कीटनाशक

भोपाल (नप्र)। भोपाल में एक युवक ने थाने में शिकायत की धमकी से घबराकर जहरीला पदार्थ खा लिया। घटना दो दिन पुरानी सोमवार की है। इलाज के दौरान बुधवार को उसकी मौत हो गई। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

कटारा हिल्स पुलिस ने बताया कि 38 वर्षीय योगेन्द्र पाठक दुर्गेश विहार कॉलोनी में रहता था। दो दिन पहले वह अटलांटिस कॉलोनी में रहने वाली अपनी बहन के घर पहुंचा था। यहां पर उसने कीटनाशक दवा पी ली। परिजनों ने उसे एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया जहां पर मंगलवार को उसकी मौत हो गई। घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की।

पुलिस जांच में शिकायत से घबराकर सुसाइड का खुलासा- कटारा हिल्स पुलिस की प्राथमिक जांच में पता चला है कि योगेन्द्र और उसका एक साथी एक साथ काम करते थे। पार्टनर ने उन पर धोखाधड़ी के आरोप लगाते हुए अयोध्या नगर थाने में शिकायत की थी। इसी शिकायत के बाद वह तनाव में रहने लगा था। माना जा रहा है कि इसी तनाव के कारण उसने खुदकुशी कर ली।

संपादकीय

राज्यपालों को सही फटकार

देश की सर्वोच्च अदालत ने देश के कई राज्यों के राज्यपालों द्वारा विधानसभा द्वारा पारित विधेयकों (बिल) को रोकने की बढ़ती प्रवृत्ति पर कड़ी और सही फटकार लगाते हुए कहा है कि राज्यपालों के पास कोई वीटो पॉवर नहीं है। यही नहीं सुप्रीम कोर्ट ने ऐसे में राज्यपालों द्वारा फैसले लेने की समय सीमा भी एक महीना तय कर दी है। सुप्रीम कोर्ट के इस ऐतिहासिक फैसले का न सिर्फ दूरगामी प्रभाव होगा बल्कि राज्यपालों की मनमानी पर भी अंकुश लगेगा। सुप्रीम कोर्ट के जज जस्टिस जे.बी. पारदीवाला और जस्टिस आर महादेवन ने तमिलनाडु में राज्य विधानसभा द्वारा पारित 10 बिलों को राज्यपाल द्वारा रोके जाने के खिलाफ पर तमिलनाडु सरकार द्वारा दायर याचिका पर यह फैसला दिया। तमिलनाडु सरकार की याचिका में कहा गया था कि राज्यपाल आरएन रवि ने राज्य के जरूरी बिलों को रोककर रखा है। तमिलनाडु सरकार ने विशेष सत्र में इन बिलों को पारित कराया था। इन 12 पारित बिलों में से 10 को राज्यपाल आरएन रवि ने 13 नवंबर 2023 को बिना कारण बताए विधानसभा को लौटा दिया और 2 बिलों को राष्ट्रपति के पास भेज दिया था। इसके बाद 18 नवंबर को तमिलनाडु विधानसभा के विशेष सत्र में इन 10 बिलों को फिर से पारित किया गया और गवर्नर की मंजूरी के लिए भेजा गया। लेकिन राज्यपाल का रवैया वही रहा। इसके बाद तमिलनाडु सरकार ने सुप्रीम कोर्ट की शरण ली। याचिका में तमिलनाडु सरकार ने कहा कि राज्यपाल का यह रवैया गैर कानूनी और अलोकतांत्रिक है। उसने सुप्रीम कोर्ट से मांग की कि राज्यपाल इन सभी बिलों पर जल्द से जल्द सहमति दें। गौरतलब है कि पूर्व में सीबीआई में काम कर चुके आईपीएस अधिकारी आरएन रवि ने 2021 में तमिलनाडु के राज्यपाल का पद संभाला था। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में देश के राज्यपालों के रवैये को लेकर कठोर टिप्पणियां की हैं। कोर्ट ने कहा कि राज्यपाल संविधान से चलें न कि किसी पार्टी की मर्जी से। राज्यपाल और स्टालिन सरकार के बीच 2021 में सत्ता संभालने के बाद से ही खराब रिश्ते रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि राज्यपाल को राज्यपाल को एक दोस्त, दार्शनिक और राह दिखाने वाले की तरह होना चाहिए। आप संविधान की शपथ लेते हैं। आपको किसी राजनीतिक दल की तरफ से संचालित नहीं होना चाहिए। आपको उत्प्रेरक बनना चाहिए, अवरोधक नहीं। कोर्ट ने कहा विधानसभा द्वारा पारित 10 बिलों को राष्ट्रपति के पास भेजना मनमानी है। कोर्ट ने इस कार्रवाई को भी रद्द कर दिया। यही नहीं, अदालत ने यह भी कहा कि इन बिलों को उसी दिन से मंजूर माना जाएगा, जिस दिन विधानसभा ने बिलों को पास करके दोबारा राज्यपाल को भेजा गया था। कोर्ट ने कहा कि राज्यपाल बिल रोकें या राष्ट्रपति के पास भेजें, उन्हें यह काम मंत्रिपरिषद की सलाह से एक महीने के अंदर करना होगा। विधानसभा बिल को दोबारा पास कर भेजती है, तो राज्यपाल को एक महीने के अंदर मंजूरी देनी होगी।

समस्या यह है कि केन्द्र सत्तारूढ़ सरकार द्वारा नियुक्त राज्यपाल राज्यों में विपक्षी पार्टियों की सरकार के साथ केन्द्र के एजेंट की तरह काम करते हैं न कि संविधान प्रमुख की तरह। ऐसा पहली बार नहीं हो रहा है, लेकिन अब ज्यादा हो रहा है। कुछेक मामलो में राज्यपालों और राज्य सरकार के बीच मतभेद हो सकते हैं, लेकिन हर वक्त टकराव जायज नहीं है। जिन राज्यों में भाजपा या एनडीए की सरकारें हैं, वहां राज्यपालों का व्यवहार आज्ञाकारी की तरह होता है, लेकिन विपक्षी दलों द्वारा शासित राज्यों में 'शत्रुवत' रहता है। यह आचरण ठीक नहीं है। कोर्ट का यह फैसला तमिलनाडु की एम.के.स्टालिन सरकार को राहत पहुंचाने वाला है।

सत्याग्रही कस्तूरबा गांधी

नजरिया

चित्रा माली

सहायक प्रोफेसर गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता

आज कस्तूर का जन्मदिन है। कस्तूर गांधी जी से छह माह बड़ी थीं। बड़े होने को लेकर गांधी और कस्तूर में विवाद भी होता रहता था। गांधी अपने आप को बड़ा जतलाना चाहते थे और कस्तूर सत्य को झुठलाने नहीं देती थी। गुजरात के पोरबंदर में कस्तूरबा और गांधी का पैतृक निवास है,जो आसपास ही है। सभी पर्यटक गांधी के चार मंजिला मकान को देखकर लौट आते हैं,जबकि पास ही कस्तूरबा का मकान है उसे देखने की जहमत नहीं उठाते हैं क्योंकि सोशल कंडीशनिंग ही इस तरह की है कि कस्तूर के अलग व्यक्तित्व को या अलगाकर देखने की दृष्टिही विकसित नहीं हो पाती है। गिरिराज किशोर जब पोरबंदर में गांधी जी का मकान देख रहे थे तब एक दूसरे पर्यटक ने उनसे पूछा 'आपने कस्तूरबा का मकान देखा है? उनका जवाब था नहीं, कहाँ है? पर्यटक ने बताया पीछे ही है। कस्तूरबा के घर के बाहर एक बुजुर्ग व्यक्ति से जब गिरिराज किशोर ने पूछा कि क्या यह कस्तूरबा का घर है? उन बुजुर्ग सज्जन ने अजीब नजरों से गिरिराज किशोर को देखते हुए पूछा 'तुम कस्तूर को जानते हो'? मुझे मालूम है, कस्तूर को अब कोई नहीं जानता। सब गांधी को जानते हैं। भूला भटका कोई यहां आ जाता है। वो सज्जन जब ये सब कहे जा रहे थे, उनकी आंखों में शिकायत और वेदना साफ दिखाई दे रही थी। उन बुजुर्ग सज्जन के सवालों का कोई जवाब मेरे पास नहीं था। इस वाकये का जिक्र गिरिराज किशोर ने अपने उपन्यास 'बा' में किया है। गांधी का विराट व्यक्तित्व होने पर भी उसमें कस्तूर के अस्तित्व का विलय नहीं किया जा सकता है। कस्तूर का अपना एक अलग अस्तित्व है जो कई मायनों में गांधी से भिन्न होते हुए भी एक दूसरे के पूरक की तरह काम करते हैं,एक के बिना दूसरे की कल्पना मुश्किल है। सबाल्टर्न इतिहास की धारा ने कई दमित,शोषित अस्मिताओं को मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य किया है जो कास्ट, क्लास,और जेंडर के आधार पर हाशिये पर थी। उनमें से कई 'फॉरगाटन वूमन' थी जिन्हें भुला दिया गया था। इतिहास लेखन की इसी धारा ने नए - नए विमर्शों को जन्म दिया है उन्हीं के तहत आज हम कस्तूर कपाड़िया पर बात कर रहे हैं। कस्तूर पर पहली किताब वनमाला पारिख और सुशीला नैयर ने गुजराती में लिखी है जिसका हिंदी अनुवाद 'हमारी बा' नाम से प्रकाशित हुआ है। वनमाला पारिख अपनी किताब 'हमारी बा' में लिखती हैं 'बापू के गर्विष्ठ पति होते हुए भी जब जरूरत मालूम हुई,बा उन्हें चेतावनी देने में पीछे नहीं रहीं'। कस्तूरबा जैसी सरल पत्नी अपने गर्वीले पति को उसके दायित्व और अधिकारों के प्रति आगाह कर सकती है तो वह अपनी जिम्मेदारी को भी पूरी तरह समझती है। यह किताब कस्तूर के उत्तरार्ध जीवन में झांकने का अवसर प्रदान करती है। कस्तूर के जीवन में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ साथ राजनीतिक जीवन में भी किसी प्रकार का न कोई द्वंद था न ही संघर्ष, वे दोनों ही मोर्चों पर समान रूप से कार्य कर रही थीं। कस्तूर पर दूसरी किताब मणिलाल गांधी के पुत्र अरुण गांधी और पुत्रवधू सुनन्दा गांधी ने लिखी है 'द फॉरगाटन वूमेन'। जिसमें अपनी दादी कस्तूरबा के जीवन के हर पक्ष को गहराई से लिखा गया है। शायद लेखकों को भी कहीं न कही यह लगता हो कि उनकी दादी की उपेक्षा की गई है। कस्तूर पर तीसरी और महत्वपूर्ण किताब एक उपन्यास 'बा' के रूप में है जिसे गहन शोध के बाद गिरिराज किशोर ने लिखा है। जिसमें पूर्व की दोनों किताबों का संदर्भ लिया गया है। इसके पूर्व गिरिराज किशोर 'पहला गिरमिटिया' लिख चुके थे। जो गांधी पर ही केंद्रित था लेकिन उनके इर्द गिर्द के पात्र भी उसमें समाहित थे जिसमें कस्तूर भी कहीं न कहीं मौजूद थी। कस्तूरबा से एक बार पूछा गया कि बापू की आत्मकथा 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' में आप कहाँ हैं? कस्तूरबा ने हंसकर कहा था,मैंने तो पढ़ी नहीं,पढ़ भी नहीं सकती थी। लेकिन मैं यह जानती हूं कि मेरे अनपढ़ होने की जिम्मेदारी उन्होंने हम दोनों में समान रूप से बांटी हैं। बापू ने जो सत्य के साथ प्रयोग किए हैं, उन्हें मैंने भोगा है। गांधी के सत्य के साथ प्रयोगों ने उन्हें व कस्तूर को अपने परिवार,परिजन और समाज के विरुद्ध भी कई बार खड़ा किया है। कस्तूर के लिए ऐसी दुविधा के क्षण भी आए हैं कि वे किस तरफ जाएं और किसका साथ दें एक तरफ पति और दूसरी तरफ बेटा लेकिन इन सभी विषम परिस्थितियों में भी कस्तूर अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों से पीछे नहीं हटीं। सामाजिक जीवन में प्रवेश करने से पहले तथा गांधी के सत्य के प्रयोगों से पूर्व भी कस्तूर में सच को कहने का साहस कम नहीं था। ऐसा ही एक वाकया गांधी के इंग्लैंड से भारत आने के बाद पोरबंदर का है। जब वे बैरिस्टर बन गए थे और घर की आर्थिक स्थिति खस्ताहाल थी,ये बताने का साहस कस्तूर ने किया था 'तुम्हे मालूम है कि बड़े भईया पर कितना कर्ज है? तुम्हारी पढ़ाई और रहने के खर्च के कारण और साथ ही तुम्हारे अनुसार घर में जो परिवर्तन किए गए हैं उनमें भी कम खर्च नहीं हुआ है। अब उनको तुम्हारी सहायता की जरूरत है'। इस सच और जिम्मेदारी का एहसास जब कस्तूर के द्वारा मोहनदास को कराया गया तो वे अंदर तक हिल गए थे और क्रोधित हो दूसरे ही दिन कस्तूर को हरि के साथ रेल में बिठाकर पोरबंदर उनके मायके भेज दिया था। मोहनदास की इस तरह की प्रतिक्रिया का कस्तूर ने कोई प्रतिकार नहीं किया। यह उसी साहस का प्रतिफलन है कि आज हम कस्तूरबा पर अलग से बात कर रहे हैं जो महज गांधी जी की पत्नी ही नहीं थी,उनका अपना खुद का एक स्वतंत्र अस्तित्व था। कस्तूर से कस्तूरबा बनने का एक लंबा सफर है जिसकी शुरूआत गांधी जी से विवाह करके होती है। कस्तूर का विवाह मात्र तेरह वर्ष की आयु में गाँधी के साथ हो गया था। विवाह के बाद का जीवन सामान्य पति-पत्नी के जीवन से शुरू होकर एक दूसरे के सच्चे मित्र हो जाने तक का सफर था। कस्तूर का सबसे पहला प्रतिरोध शादी के बाद गांधीजी के पतित्व की धारणा के बाद किया था जिसमें एकपत्नी व्रत का पालन गांधीजी के द्वारा किया जा रहा था और वे कस्तूर से भी एकपति व्रत का पालन करवाना चाह रहे थे,जिसके चलते उन्होंने कस्तूर के कहीं भी आने जाने पर अपना नियंत्रण रखना चाहा था लेकिन आने जाने के निर्णय को लेकर कस्तूर ने गांधी जी के द्वारा लगाए अंकुशों का विरोध किया। कस्तूर अपने निर्णय स्वयं लेती थीं, गांधी जी जितनी रोक-टोक लगाते वह उनको नहीं मानती थी। अपने विवाह के आरंभिक जीवन में ही कस्तूर के प्रतिरोधी स्वरूप को देखा जा सकता है। कस्तूर साहस और आत्मविश्वास से लबरेज थी जो उस दौर की महिलाओं में बहुत ही कम पाया जाता था। अपने पति की आज्ञा की अवज्ञा करना उस दौर में सामान्य नहीं था,लेकिन साहसिक कस्तूर के द्वारा बार बार अवज्ञा की गई। सविनय अवज्ञा और सत्याग्रह के व्यवहारिक प्रयोगों को गांधी ने कस्तूर से ही सीखा था जिसे वे स्वयं स्वीकारते भी है। कस्तूर और गांधी के जीवन का दूसरा अध्याय गांधी के विदेश प्रवास से प्रारंभ होता है। इंग्लैंड प्रवास से लौटने के बाद शीघ्र ही गांधी को दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा। दक्षिण अफ्रीका के दूसरे प्रवास के समय गांधी अपने साथ कस्तूर को ले गए। दक्षिण अफ्रीका के पहले प्रवास के दौरान हुए कटु अनुभवों ने गांधी को अंदर तक झकझोर दिया था यही समय मोहन से महात्मा बनने का भी है। इस दौरान गांधी कई नए प्रयोग अपने साथ कर रहे थे। गांधी और कस्तूर के परिवार से पहली महिला विदेश यात्रा कर रही थी यह बात कस्तूर के लिए गौरव की थी,साथ ही आधी आबादी के लिए भी जो आज तक अपने स्वतंत्र अस्तित्व की तलाश में हैं। गांधी दक्षिण अफ्रीका में फीनिक्स आश्रम की स्थापना कर एक ऐसे समाज का निर्माण करने का प्रयास कर रहे थे जहां धर्म,जाति,रंग,नस्ल या लिंग के आधार पर किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव न हो। सबके साझे सरोकार और सबके साझे सुख दु:ख हो। जहाँ सभी कार्य आश्रमवासियों के द्वारा स्वेच्छा से किए जाएं। जहां तक कस्तूर का आश्रम में रहने का सवाल था वह गांधी की सहधर्मिणी बनकर उनके प्रयोगों में शामिल होने का प्रयास कर रहीं थीं। लेकिन कस्तूर जिस सामाजिक संरचना से समाज व्यवस्था से आई थीं वहां कार्यों का स्पष्ट विभाजन था जो गांधी के द्वारा किए जा रहे प्रयोगों के अनुकूल नहीं था। जिससे विवादों का होना लाजमी था। आश्रम में पहला विवाद पाखाने की सफाई को लेकर था,कस्तूर ने पाखाने की सफाई करने से मना कर दिया जिस पर गांधी जी ने आक्रोश में कस्तूर को वहां से चले जाने के लिए कहा तब, कस्तूर ने गांधीजी से कहा,विदेश में मैं अकेली कहां जाऊँ? मैं आपके साथ यहां आई हूँ,जितना हक आपका है उतना हक मेरा भी है इस आश्रम पर। लोगों द्वारा कस्तूर को गांधी की अनुयायी या अनुगामी कहा जाता था,पर ऐसा था नहीं। कस्तूर के अपने स्वतंत्र विचार और धारणाएं थी जो कई बार गांधी से भिन्न भी थी। गांधी की सबसे बड़ी आलोचक कस्तूर थीं जो गांधी के हर कदम पर सही गलत का आकलन करती थी। दक्षिण अफ्रीका में 1913 में एक काला कानून पास हुआ जिसमें ईसाई मत के अनुसार किए गए विवाह और विवाह विभाग के अधिकारी के यहां दर्ज किए विवाह के अतिरिक्त अन्य विवाह मान्य नहीं रह गए थे। दूसरे शब्दों में हिंदू, मुसलमान,पारसी आदि लोगों के विवाह अवैध करार कर दिए गए और ऐसी विवाहित स्त्रियों की स्थिति पत्नी की न होकर रखैल जैसी रह गयी थी। इस कानून के विरोध में गांधी जी ने सत्याग्रह करने का निश्चय किया और उसमें सभी महिलाओं से सम्मिलित होने का आह्वान किया। किन्तु कस्तूर से गांधी ने इस सत?याग्रह में भाग लेने के लिए नहीं कहा। कस्तूर को इस बात का काफी बुरा लगा और उन्होंने गांधी जी से इस बात पर अपना विरोध भी दर्ज किया। गांधी जी ने अपना तर्क रखा और उनसे कहा कि वे नहीं चाहते थे कि मेरे कहने से तुम सत्याग्रह में जाओ और फिर बाद में कठिनाईयों में पड़कर विषम परिस्थिति उपस्थित करो। अगर तुम स्वेच्छा से इस काले कानून के खिलाफ सत्याग्रह में शामिल होना चाहती हो तो अवश्य हो। कस्तूर स्वेच्छा से सत्याग्रह में शामिल हुई और तीन अन्य महिलाओं के साथ जेल गईं। जेल का भोजन शाकाहारी न होने के कारण कस्तूर ने जेल अधिकारियों से फलाहार की मांग की। जेल में चार दिन तक बिना खाए कस्तूर को रहना पड़ा। पांचवे दिन से तीन टमाटर प्रतिदिन फलाहार के रुप में कस्तूर को दिया जाने लगा,जो संतुलित आहार की दृष्टि से काफी कम था। तीन माह तक कस्तूर इसी आहार पर रही,जिससे उनके स्वास्थ्य पर काफी असर पड़ा। यह कस्तूर के जीवन का पहला सार्वजनिक सत्याग्रह और जेल में अहिंसक प्रतिरोध था। 1915 में जब कस्तूर गांधी के साथ भारत लौटीं तब पत्रकारों ने उनसे सवाल किया था,क्या आप वहां जेल में रही थीं? तब उनका जवाब था,हां मैं उस काले और दमनकारी कानून के खिलाफ जेल में गई थी। उस दौर में किसी भारतीय महिला का जेल जाना सामान्य बात नहीं थी। इसमें गौर करने वाली और महत्वपूर्ण बात यह थी कि इस सत्याग्रह में कस्तूर का शामिल होना,उनका आत्मनिर्णय था, गांधी ने इसके लिए उन्हें प्रेरित किया था,प्रभावित नहीं किया था।

भारत में आने के बाद गांधी ने सत्य के साथ जितने प्रयोग किए उन सभी प्रयोगों में कस्तूर ने अपनी भागीदारी या कहें सक्रिय भागीदारी अदा की। चाहे वह चंपारण के तिहरवा गांव में रहकर दवाई वितरण का कार्य हो,साफ सफाई के लिए महिलाओं और बच्चों को प्रेरित करना हो या खेड़ा सत्याग्रह के समय घूम-घूमकर स्त्रियों में उत्साह का संचार करना हो।

1922 में जब गांधी जी को गिरफ्तार किया गया और उन्हें छह साल की सजा हुई उस समय कस्तूर ने कमान संभाली और भाषण दिया जिसने उन्हें वीरांगना के रुप में प्रतिष्ठित किया। यहां गांधी से अलग उनकी अपनी अस्मिता का निर्माण हुआ जो कस्तूर को कस्तूरबा में परिवर्तित कर रहा था। भारतीय राजनीति में 1915 से 1947 तक का काल स्वाधीनता संग्राम में महिलाओं की सक्रिय भूमिका को भी दर्शाता है। जिसमें कस्तूर का महत्वपूर्ण योगदान है। कस्तूर द्वारा किए गए प्रयासों ने महिलाओं में राजनीतिक समझ और अपने अधिकारों की समझ को विकसित किया हैं। 1939 में राजकोट के ठाकुर साहब ने प्रजा को कतिपय अधिकार देना स्वीकार किया था किंतु बाद में मुकर गए। इसी के साथ ठाकुर साहब सुंदर लड़कियों को उठावा लेते थे और उनके साथ जबरदस्ती की जा रही थी। जब इस खबर की पुष्टि हुई तो जनता ने सत्याग्रह शुरू कर दिया। पहली सत्याग्रही बंदी मणिबेन को बनाया गया जो सरदार पटेल की बेटी थी और कस्तूर के अधिक निकट थी। यह खबर जब सेवाग्राम पहुंची तो कस्तूर व्याकुल हो उठी थी। कस्तूर ने कहा 'अब यह मामला मात्र राजनीतिक अधिकारों का नहीं रहा अब ये महिलाओं के सम्मान से जुड़ गया है। मैं खामोश नहीं रहूंगी। कस्तूर महिलाओं की अस्मत को बचाने और सत्याग्रह में शामिल होने के लिए राजकोट चली गई। गांधी जी ने हरिजन में लिखा था 'मेरी पत्नी वहां (राजकोट) की जनता की पीड़ा से दुखी है। हालांकि वह भी मेरी तरह बुढ़ा गई है,जेल की कठिनाईयों को सहन करने में वह मुझसे भी कम समर्थ है। वह राजकोट जाना चाहती है। जब यह समाचार प्रकाशित होगा तब तक वह राजकोट जा चुकी होगी'। कस्तूर जैसे ही राजकोट पहुंची उन्हें नजरबंद कर लिया गया। इस पूरी लड़ाई में कस्तूर महिलाओं के साथ असमानता, भेदभाव और अन्य कई मुद्दों पर लड़ती दिखाई देती हैं। भारत छोड़ो आंदोलन के आह्वान के लिए जब गांधी जी को 9 अगस्त 1942 को गिरफ्तार कर लिया गया तब कस्तूर ने शिवाजी पार्क (बम्बई) में भाषण देने का निर्णय लिया,किंतु पार्क के द्वार पर पहुंचते ही गिरफ्तार कर ली गयीं। ऐसे अवसर कस्तूर के जीवन में कई बार आए और उन्होंने इन अवसरों का इस्तेमाल राष्ट्रीय आंदोलन और स्वतंत्रता प्राप्ति का अलख जगाए रखने में किया। लेकिन आज अगर हम कस्तूर या अन्य महिलाओं पर बात कर रहे हैं जिन्हें इतिहास ने दर्ज नहीं किया या कम स्थान दिया तो यह कहीं न कहीं हमारे स्वतंत्र अस्तित्व की पहचान को बरकरार रखने के प्रयास के रूप में देखा जाना चाहिए। कस्तूरबा को शत-शत नमन।

विश्व के लिए दो ही रास्ते हैं : महावीर या महाविनाश

महावीर जन्मकल्याणक विशेष

संदीप सृजन

लेखक पत्रकार हैं।

आज का विश्व एक संकटपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। एक ओर पर्यावरण का विनाश, युद्धों की आग, सामाजिक असमानता, और मानवीय मूल्यों का ह्रास बढ़ रहा है, तो दूसरी ओर शांति, सह-अस्तित्व, और संतुलित जीवन की चाह भी प्रबल हो रही है। इस संदर्भ में यह कथन कि 'विश्व के लिए दो ही रास्ते हैं- महावीर या महाविनाश' गहन चिंतन का विषय बन जाता है। महावीर स्वामी जो जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर है, जिन्होंने अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, और आत्म-संयम का मार्ग दिखाया वह मानवता के लिए एक प्रकाश स्तंभ हैं। दूसरी ओर, यदि हम उनके दिखाए मार्ग से भटकते हैं, तो महाविनाश अर्थात् संपूर्ण विनाश हमारा मार्ग होगा।

महावीर का मार्ग शांति और संतुलन का रास्ता है। महावीर का जीवन और दर्शन मानवता के लिए एक ऐसा रास्ता प्रस्तुत करते हैं जो व्यक्तिगत, सामाजिक, और वैश्विक स्तर पर शांति और समृद्धि ला सकता है। उनके सिद्धांत न केवल उस समय के लिए प्रासंगिक थे, बल्कि आज के संकटग्रस्त विश्व के लिए भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। उनके प्रमुख सिद्धांतों को देखें और समझें कि वे विश्व को कैसे बचा सकते हैं।

अहिंसा

महावीर ने अहिंसा को सर्वोच्च धर्म माना। उनके अनुसार, सभी प्राणियों में आत्मा समान है, और किसी को भी हानि पहुँचाना स्वयं को हानि पहुँचाने के समान है। यह सिद्धांत केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं, बल्कि पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों, और सूक्ष्म जीवों तक विस्तृत है।आज विश्व युद्ध, हिंसा, और पर्यावरण विनाश से जूझ रहा है। जलवायु परिवर्तन, जंगलों की कटाई, और प्रजातियों के विलुप्त होने की दर तेजी से बढ़ रही है। महावीर का अहिंसा का सिद्धांत हमें यह सिखाता है कि प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व ही जीवन का आधार है। यदि हम शाकाहार को अपनाएँ, संसाधनों का संयमित उपयोग करें, और हिंसा से बचें, तो पर्यावरण और मानवता दोनों की रक्षा संभव है।

अपरिग्रह

महावीर ने अपरिग्रह को जीवन का आधार बनाया। इसका अर्थ है आवश्यकता से अधिक संग्रह न करना

और भौतिक वस्तुओं से आसक्ति छोड़ना। उनके अनुसार, लालच और संग्रह की भावना ही दुख और संघर्ष का कारण है। आधुनिक विश्व में उपभोक्तावाद और पूँजीवाद ने संसाधनों का अंधाधुंध दोहन किया है। धन और शक्ति की होड़ ने सामाजिक असमानता को बढ़ाया है और पर्यावरण को नष्ट किया है। महावीर का अपरिग्रह हमें सादगी और संतोष की ओर ले जाता है। यदि विश्व इस सिद्धांत को अपनाए, तो गरीबी, भुखमरी, और जलवायु संकट जैसे मुद्दों का समाधान संभव है।

अनेकांतवाद

महावीर का अनेकांतवाद सिखाता है कि सत्य बहुआयामी होता है। हर व्यक्ति का दृष्टिकोण उसकी परिस्थितियों पर निर्भर करता है, और सभी को सम्मान देना चाहिए। यह विचारधारा धार्मिक, सांस्कृतिक, और वैचारिक सहिष्णुता को बढ़ावा देती है। आज विश्व धार्मिक कट्टरता, सांस्कृतिक संघर्ष, और राजनीतिक ध्रुवीकरण से ग्रस्त है। अनेकांतवाद हमें यह सिखाता है कि मतभेदों को स्वीकार करें और संवाद के माध्यम से समाधान खोजें। यदि विश्व इस मार्ग को अपनाए, तो युद्ध और हिंसा के बजाय शांति और सहयोग का रास्ता खुलेगा।

आत्म-संयम

महावीर ने आत्म-संयम को आत्म-मुक्ति का मार्ग बताया। उनकी 12 वर्षों की कठोर तपस्या इसका प्रमाण है। वे मानते थे कि इंद्रियों और मन पर नियंत्रण ही सच्ची स्वतंत्रता है।आधुनिक समाज में तनाव, व्यसन, और अनियंत्रित जीवनशैली आम है। आत्म-संयम का यह सिद्धांत व्यक्तिगत स्तर पर मानसिक शांति और स्वास्थ्य लाता है, जो सामाजिक स्तर पर भी सकारात्मक प्रभाव डालता है। यदि लोग संयमित जीवन अपनाएँ, तो सामाजिक और पर्यावरणीय संकटों से निपटना आसान होगा।

सत्य

महावीर ने सत्य को जीवन का आधार माना। सत्य वह है जो वास्तविकता को प्रतिबिंबित करे और दूसरों के लिए हानिकारक न हो। यह सिद्धांत विश्वास और ईमानदारी को बढ़ावा देता है। आज के समय में, जहाँ झूठ और भ्रष्टाचार हर क्षेत्र में व्याप्त है, सत्य का मार्ग व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में पारदर्शिता ला सकता है। यह नेतृत्व और प्रशासन में भी नैतिकता को स्थापित करने में मदद करेगा। यदि विश्व महावीर के मार्ग को न अपनाए, तो दूसरा रास्ता महाविनाश की ओर ले जाता है। जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, और प्रदूषण ने पृथ्वी को संकट में डाल दिया है। जंगलों की कटाई, औद्योगिक उत्सर्जन, और प्लास्टिक का अंधाधुंध उपयोग प्राकृतिक संतुलन को नष्ट कर रहा है। यदि यह जारी रहा, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन असंभव हो जाएगा। विश्व भर में सशस्त्र संघर्ष, आतंकवाद, और नरसंहार बढ़ रहे हैं। परमाणु हथियारों की होड़ और क्षेत्रीय विवाद मानवता को विनाश के कगार पर ले जा रहे हैं। एक गलती पूरे विश्व को नष्ट कर सकती है। धन और संसाधनों का असमान वितरण गरीबी, भुखमरी, और सामाजिक अशांति को जन्म दे रहा है। अमीर और गरीब के बीच की खाई बढ़ती जा रही है, जो हिंसा और अस्थिरता का कारण बन रही है। आधुनिक समाज में नैतिकता और मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है। लालच, स्वार्थ, और भ्रष्टाचार ने सामाजिक ताने-बाने को कमजोर कर दिया है। यह आंतरिक विनाश का एक रूप है जो बाहरी संकटों को और गंभीर बनाता है।तनाव, अवसाद, और आत्महत्या की बढ़ती दरें दिखाती हैं कि मानवता आंतरिक शांति खो रही है। अनियंत्रित जीवनशैली और भौतिकता की दौड़ ने मनुष्य को खोखला कर दिया है। यदि यह मार्ग जारी रहा, तो परिणामस्वरूप महाविनाश -अर्थात् पर्यावरण, सामाजिक, और मानवीय स्तर पर संपूर्ण विनाश– अनिवार्य हो जाएगा। महावीर का मार्ग अपनाना आज केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता है। महावीर का मार्ग हमें अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांतवाद, और आत्म-संयम के माध्यम से शांति और संतुलन की ओर ले जाता है, जबकि वर्तमान मार्ग हमें पर्यावरण विनाश, हिंसा, और नैतिक पतन की ओर धकेल रहा है। यह मानवता के सामने एक चेतावनी भी है और एक अवसर भी। यदि हम अभी जागें और महावीर के सिद्धांतों को अपनाएँ, तो विश्व को महाविनाश से बचाया जा सकता है। महावीर का जीवन और दर्शन हमें यह सिखाते हैं कि सच्ची शक्ति हिंसा या लालच में नहीं, बल्कि करुणा, संयम, और सत्य में है। यह हमारा निर्णय है कि हम कौन सा रास्ता चुनते हैं–जीवन का मार्ग या विनाश का।

बेज़ुबानों की चीखें

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

एक समय था जब हम संवेदनाओं के आंगनमें खेलते थे। हमारी सोच, हमारे द्वारा किया जाने वाला हर कार्य इस बात पर निर्भर करता था कि हमारे कारण किसी को कोई तकलीफ ना हो। पर आज के युग में यह बातें पिछले जन्म की बातों जैसी लगने लगी है। हम जितना आधुनिकता का दामन पकड़ रहे है, उतना ही भावनाओं से हमारा नाता टूटता जा रहा है। इसी का उदाहरण तेलंगाना में 400 एकड़ में फैले कांचा गाचीबावली जंगल पर देखने को मिल रहा है। सरकार इस ज़मीन को आईटी और इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास के लिए इस्तेमाल करना चाहती है, लेकिन प्रश्न यह है कि क्या उसी ज़मीन के टुकड़े पर विकास हो सकता है? क्या हम मानव इतने स्वार्थी हो चुके है कि हमें बेजुबानों की चीखें भी सुनाई नहीं दे रही है?

यह किस ओर हम जा रहे है जहां सिर्फ तरक्की, फायदा और स्वयं का लाभ ही हमें समझ में आता है? क्या उन्नति का अर्थ संवेदनहीन होना भी हो गया है? हमारे भीतर की बढती महत्वकांक्षाओं ने हमें संवेदनहीन बना दिया है! आज जब हम किसी को मुसीबत में देखते हैं तो उसकी सहायता करने की अपेक्षा वीडियो बनाने लगते है। ऐसा लगता है कि कैसे दूसरों के दुःख को कैश करके अपना लाभनिकाल सकें। किसी के पास इतना भी वक्त नहीं है कि हम एक-दूसरे का दुःख बाँट सकें। हमें डर लगने लगता है कि कहीं कोई हमसे सहायता ना मांग ले।

एक तरफ हमारी संस्कृति 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना रखती है। अपने से पहले दूसरों के हित के बारे में सोचना हमारा स्वभाव था। लेकिन आजकल किसी मायाजाल में फंसते हुए हम न सिर्फ अपने संस्कारों से दूर हो रहे हैं बल्कि खुद अपने से भी दूर होते जा रहे है। हम नहीं जानते कि क्या हम सिर्फ तरक्की चाहते है या तरक्की के साथ-साथ अपनी भावी पीढी को एक खुशहाल जीवन भी देना चाहते है?

तेलंगाना के जंगलों से आती तस्वीरें हमारे घातक भविष्य की दस्तक है, जो हमें आगाह कर रही है कि अगर अभी भी हमनें अपने भीतर की भावनाओं को निष्ठुर होने से नहीं रोका तो अपने वीभत्स भविष्य के हम स्वयं उत्तरदायी होंगे। यहाँ प्रश्न यह भी उठता है कि जब हम विपक्ष में बैठे हो तो हमें सरकार के हर फैसले पर कटाक्ष करने का अधिकार है, तो फिर जब हम सता में हो तब क्यों अपने अधिकारों का गलत फायदा उठाते है? अपने हाथ में किसी भी पुस्तक को पकड़कर तस्वीर खींचवाना शौक हो सकता है, पर इंसानियत का पाठ किसी किताब से नहीं बल्कि अपने भीतर के मानवीय गुण को संवार कर ही सीख सकते है। यह इतना भी कठिन कार्य नहीं है जितना हम सोचते है। दुनिया भर की ज़ुबाने अगर हमने सीख भी ली लेकिन बेजुबानों के आंसू और उनकी चीखें नहीं सुन पाए तो आप बेहरे हैं। आपका आज बहरा होना आपकी भावी पीढ़ी को अपाहिज भी बना सकता है।

अभी भी बहुत देर नहीं हुई है। हम चाहे तो अपने भीतर की आवाज़ को सुन सकते है जिसे हमने अपने लोभ में दबा दिया था फिर देखिए जिनके घर की आज हम सुरक्षा करेंगे, वहीं प्रकृति के साथ मिलकर हमारे सुखद भविष्य की नींव रखेंगे।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

दिल और जेबों से मजबूत लोगों का शर्तिया इलाज

व्यंग्य

डॉ. प्रदीप मिश्र

मेरे सर्जन मित्र ने कुछ ज्यादा ही लोगों का विसर्जन कर दिया तो मीडिया ने उसकी सुध ली। दिल के डॉक्टर के रूप में उसका काफी नाम है। वह रोज कई ऑपरेशन करता है। मैंने उससे पूछा,'मित्र, असलियत में तो तुम जानवरों का पोस्टमार्टम करने लायक भी नहीं हो, पर इंसानों का ऑपरेशन करते हो ? यह कैसे संभव होता है?'

– 'देखो ऑपरेशन से पहले ही मैं मरीज से लिखवा लेता हूँ कि, 'ऑपरेशन करने के दौरान उसकी मौत हुई तो सर्जन की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।' बस यह लिखित कागज रहे, फिर कोई दिक्कत नहीं। कोई भी किसी का ऑपरेशन कर सकता है।'

– 'जैसे तुम?'

– 'हाँ जैसे मैं। संसार में कोई ऐसा सर्जन नहीं जो इस लिखित ऐलान के बिना मरीज का ऑपरेशन कर दे ?'

– 'वैसे मरीज को ऑपरेशन थिएटर में ले जाकर तुम क्या करते हो ?'

–' सबसे पहले हम उसे बेहोश कर देते हैं।'

–' आधुनिक तकनीकी में बेहोश तो नहीं किया जाता?'

–' लेकिन हम करते हैं।'

–' फिर क्या करते हो?'

–' फिर हम कम्पाउंडर से कहते हैं कि चलो ऑपरेशन करो। '

–' और तुम क्या करते हो?'

–' मैं नोट गिनता हूँ। यह काम तो खुद करना पड़ता है। नोट गिनने में किसी पर भरोसा नहीं किया जा सकता? '

–' और ऑपरेशन करने में कम्पाउंडर पर भरोसा कर सकते हैं?'

–' बिल्कुल। किसी न किसी पर भरोसा तो करना ही पड़ेगा?'

–' जभी तो मैं कहूं कि तुमसे ऑपरेशन कराने के बावजूद कुछ लोग जिन्दा कैसे रहे आते हैं? जाहिर है थिएटर में उनका ऑपरेशन कम्पाउंडर करता है।'

–' देखो जिनकी जीवन–रेखा लंबी है वो मेरे ऑपरेशन करने के बाद भी दीर्घायु होते हैं।'

–' वैसे तुमसे दिल का ऑपरेशन कराने के बाद भी, जीवित रहने के लिए लोगों को क्या करना चाहिए?'

–' मेरे ऑपरेशन करने से वो लोग मरते हैं, जिनके दिल और जेबें कमजोर होते हैं। दिल और जेबों से मजबूत लोगों के लिए मेरी सक्सेस रेट सौ फीसदी से भी ज्यादा है।' कहकर मित्र, कम्पाउंडरों के साथ नोट गिनने के लिए ऑपरेशन थिएटर में चला गया।

एकाकीपन

संजय तेलंग

बुझी आंखों से दूर जा बसी अपनों की आस

बुजुर्ग दम्पतियों का घर ही उनकी दुनिया हो गई। अनेक घरों में बुजुर्गों की देखभाल के लिए केयरटेकर रखे गए, जो अपना काम पूरा होते ही लौट जाते हैं। बुड्ढे-बुढ़िया आखिर कितना बतियाएंगे! शोर तो वे मचा नहीं सकते, इसलिए उनके साथ उनके घरों ने भी खामोशी ओढ़ ली है। अपनों से हजारों किमी दूर ये बुजुर्ग न ठीक से हंसते हैं और न किसी से अकेलेपन की पीड़ा बयां कर सकते हैं। उन्होंने अपने आपको चहारदीवारी में कैद कर लिया है। अंतिम समय में बेटों-बहुओं, नाती-पोतों का मुंह देखने को तरसते हुए दम तोड़ देना उनकी नियति है।

मैं पिछले दिनों देश के एक महानगर में था। महानगर का नाम लेते ही बेतहाशा भीड़, वाहनों की रेलमपेल, कानफोड़ू शोर का चित्र दिमाग में उभरता है। यह चित्र प्रायः सही ही होता है, लेकिन मैं जिस क्षेत्र में ठहरा, वहां मुझे बेहद शांति महसूस हुई जैसे 'पिन ड्रॉप साइलेंस।' महानगर के बीच किसी रहवासी बस्ती में इस तरह की शांति की कल्पना सपने भी नहीं की थी। क्योंकि, ऐसी बस्तियों में भी महानगर की भीड़ का शोर प्रवेश कर ही जाता है। क्षेत्र में खड़े आलीशान बंगले उसमें रहने वालों की समृद्धि की कहानी कह रहे थे। आश्चर्य की बात यह थी कि बंगलों के दरवाजे, खिड़की, बगीचे और बॉलकनी में कोई भी नजर नहीं आ रहा था। वहां पसरी उदासी मन को कचोटने लगी। क्षेत्र के रास्तों का भी यही हाल था। सूने पड़े रास्तों पर इक्का-दुक्का राहगीर ही दिखाई दिए और तो और क्षेत्र में कुत्ते तक नहीं दिखे, जो भारत में रहवासी बस्तियों का आमतौर पर हिस्सा होते हैं। ऐसे में इस उदासी का राज जानने के लिए मन बेचैन हो उठा।

पूछने पर पता चला कि इस बस्ती के अधिकांश घरों में बुजुर्ग दम्पति रहते हैं, यानी कुल मिलाकर दो टिकट। बच्चे परिवार सहित विदेशों में बस चुके हैं, जो सालों में कभी दो-चार दिनों के लिए माता-पिता के पास आते हैं। बच्चे माता-पिता को विदेश की सैर भी एक-दो बार करवा चुके हैं। तीसरी बार अपना घर और देश छोड़कर जाने का मन उनका नहीं है। ऐसे में अब बुजुर्ग दम्पतियों का घर ही उनकी दुनिया हो गई है। अनेक घरों में बुजुर्गों की देखभाल के लिए केयरटेकर रखे गए हैं, जो अपना काम पूरा होते ही लौट जाते हैं। बुड्ढे-बुढ़िया आखिर कितना बतियाएंगे! शोर तो वे मचा नहीं सकते, इसलिए उनके साथ उनके घरों ने भी खामोशी ओढ़ ली है।

इतना जानते ही क्षेत्र में छाई उदासी का राज समझ में आ गया और मन क्षोभ से भर उठा। क्या माता-पिता ने अपनी संतानों को रात-दिन एक कर और मेहनत से पाल-पोस कर इसलिए योग्य बनाया था कि वृद्धावस्था में वे उन्हें छोड़ कर सात समंदर पार बस जाएं। उन्हें जन्म दिया, बड़ा किया, पढ़ा-लिखा कर इस योग्य बनाया कि वे शान से जीवन बसर कर सकें। इसके लिए कई माता-पिताओं ने अपने शौक तक ताक पर रख दिए होंगे, ताकि उनकी संतान की देखभाल में कोई कसर बाकी न रह जाए। लेकिन, वृद्धावस्था में उन्हें मिला है उदासी का यहनोबेल। अपनों से हजारों किमी दूर ये बुजुर्ग न ठीक से हंसते हैं और न किसी से अकेलेपन की पीड़ा बयां कर सकते हैं। उन्होंने अपने आपको चहारदीवारी में कैद कर लिया है। अंतिम समय में बेटों-बहुओं, नाती-पोतों का मुंह देखने को तरसते हुए दम तोड़ देना उनकी नियति है।

सवाल यह उठता है कि आखिर इस स्थिति के लिए जिम्मेदार कौन है? क्या हमारी शिक्षा में कोई कमी है, या हम बच्चों को ठीक से संस्कारित नहीं कर पाए। आखिर कसर कहां रह गई। हमारी शिक्षा पद्यति तो ठीक ही है, जिसकी बदौलत दुनिया के किसी भी कोने में हमारे बच्चों को मन-मुताबिक़ काम मिल रहा है। वे अच्छा खासा पैसा भी कमा रहे हैं। कई देशों में तो हमारे बच्चे स्वयं को वहां के लोगों से होशियार भी सिद्ध कर चुके हैं। अब बात हमारे संस्कारों की। रही बात संस्कारों की तो हमारे संस्कार ऐसे तो नहीं हैं कि वृद्धावस्था में माता-पिता को अकेले मरने के लिए छोड़ दिया जाए। इसका जवाब यह है कि हमने अपने बच्चों को शायद ठीक से संस्कारित नहीं किया, वरना यह दिन कभी नहीं देखना पड़ते।

दरअसल, भावी पीढ़ी मोटी कमाई के फेर में अपने भारतीय संस्कारों को बिसरा कर पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगती जा रही है। वृद्धावस्था में माता-पिता की देखभाल करना हमारे मूल संस्कारों में शामिल रहा है लेकिन नए दौर की सचाई यह है कि ऐसा हो नहीं रहा है। काम के सिलसिले में देश से हजारों किमी दूर विदेशों में जा बसे बेटे-बहू के लिए माता-पिता की देखभाल का अर्थ सिर्फ उन्हें मासिक खर्च के लिए मोटी राशि भेजने तक सीमित रह गया है। लेकिन उन्हें यह भी जान लेना चाहिए कि चाहे जितना धन विदेशों से माता-पिता के बैंक खातों में जमा करवा दें लेकिन इस धन से उनके मन की प्यास नहीं बुझने वाली! उनकी प्यास तो अपनों को अपने पास पाकर ही बुझ पाएगी। तो अब भी देर नहीं हुई है, कोई रास्ता निकालें, जिससे आपके अपनों की उदास आंखों में फिर चमक लौट सके। कहीं इतनी देर भी न हो जाए कि सब कुछ समाप्त हो चुका हो!

विश्व होम्योपैथी दिवस पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

सस्ती कीमत पर चमत्कार करती है होम्योपैथी

होम्योपैथी दवाओं को लेकर माना जाता है कि ये दवाएं कम खर्च में ही चमत्कारिक असर दिखाती हैं। अन्य चिकित्सा पद्धतियों के मुकाबले यह इलाज की सरल और सुगम पद्धति है और धीरे-धीरे ही सही मगर बीमारी पर असर करती है। होम्योपैथी चिकित्सा के बारे में लोगों को जागरूक करने और इस वैकल्पिक प्रणाली के उपयोग को बढ़ावा देने पर ध्यान केन्द्रित करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 10 अप्रैल को 'विश्व होम्योपैथी दिवस' मनाया जाता है। हर साल यह दिवस 'होम्योपैथी' के जनक माने जाने वाले जर्मन मूल के डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनीमैन के जन्मदिवस के अवसर पर ही मनाया जाता है। डॉ. हैनीमैन जर्मनी के विख्यात डॉक्टर थे, जिनका जन्म 10 अप्रैल 1755 को और निधन 2 जुलाई 1843 को हुआ था। डा. हैनीमैन चिकित्सक होने के साथ-साथ एक महान विद्वान, शोधकर्ता, भाषाविद और उत्कृष्ट वैज्ञानिक भी थे, जिनके पास एमडी की डिग्री थी लेकिन उन्होंने बाद में अनुवादक के रूप में कार्य करने के लिए अपनी नौकरी छोड़ दी थी। उसके बाद उन्होंने अंग्रेजी, फ्रांसीसी, इतालवी, ग्रीक, लैटिन इत्यादि कई भाषाओं में चिकित्सा, वैज्ञानिक पाठ्यपुस्तकों को सीखा। होम्योपैथी एक ऐसी चिकित्सा पद्धति है, जो औषधियों तथा उनके अनुप्रयोग पर आधारित है। होम्योपैथी को आधार बनाने के सिद्धांत से चिकित्सा विज्ञान की एक पूरी प्रणाली को प्राप्त करने का श्रेय डॉ. हैनीमैन को ही जाता है। इसीलिए उनके जन्मदिवस को 'विश्व होम्योपैथी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस दिवस के आयोजन का प्रमुख उद्देश्य चिकित्सा की इस अलग प्रणाली के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करने के साथ-साथ प्रत्येक व्यक्ति तक इसकी पहुंच की सफलता दर को आसानी से बेहतर बनाना है।

होम्योपैथी चिकित्सा पौधों और खनिजों जैसे प्राकृतिक पदार्थों से बनी होती है। होम्योपैथी चिकित्सा प्रणाली का मानना है कि शरीर खुद ही इसका इलाज कर सकता है और होम्योपैथी दवाओं में उपचार गुण हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि होम्योपैथिक दवाओं के बारे में जागरूकता बढ़ाने और इसकी सफलता की दर को बढ़ाने से कई प्रकार की समस्याओं को ठीक किया जा सकता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार होम्योपैथी एक ऐसी चिकित्सा प्रणाली है, जो इस विश्वास पर आधारित है कि शरीर स्वयं को ठीक कर सकता है। उपचार प्रक्रिया को बढ़ावा देने के लिए रोग के आधार पर दवाएं दी जाती हैं, जिससे शरीर उस दोष का स्वयं से उपचार कर सके। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के मुताबिक होम्योपैथी के उपयोग को एलर्जी, माइग्रेन, अवसाद, क्रोनिक फेटीग सिंड्रोम, रूमेटाइड आर्थराइटिस, आंत की बीमारी और प्रीमेंस्ट्रुअल सिंड्रोम जैसी समस्याओं में फायदेमंद माना जाता है। वर्षों से इस वैकल्पिक चिकित्सा के माध्यम से कई प्रकार की स्वास्थ्य समस्याओं का इलाज करके लाभ प्राप्त किया जाता रहा है। इस वर्ष विश्व होम्योपैथी दिवस के अवसर पर डॉ. हैनीमैन की 270वीं जयंती मनाई जा रही है। इस दिवस के आयोजन का प्रमुख उद्देश्य भारत सहित दुनियाभर में होम्योपैथी औषधियों की सुरक्षा, गुणवत्ता और प्रभावकारिता को मजबूत करना, होम्योपैथी को आगे ले जाने की चुनौतियों और भविष्य की रणनीतियों को समझना, राष्ट्रीय नीतियों के विकास की रणनीति तैयार करना, अंतरपद्धति एवं अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान सहयोग, उच्चस्तरीय गुणवत्तापरक चिकित्सा शिक्षा, प्रमाण आधारित चिकित्सा कार्य और विभिन्न देशों में होम्योपैथी को स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं में समुचित स्थान दिलाकर सार्वभौमिक स्वास्थ्य के लक्ष्य को प्राप्त करना है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का भी मानना है कि वैकल्पिक और परम्परागत औषधियों को बढ़ावा दिए बगैर सार्वभौमिक स्वास्थ्य के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता और वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों में विश्व में होम्योपैथी का प्रमुख स्थान है।

एलोपैथ, आयुर्वेद तथा प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों की भांति होम्योपैथी की भी कुछ अलग ही विशेषताएं हैं और इन्हीं विशेषताओं के कारण आज होम्योपैथी विश्वभर में सौ से भी अधिक देशों में अपनाई जा रही है तथा भारत तो होम्योपैथी के क्षेत्र में विश्व का अग्रणी देश है। दरअसल होम्योपैथी दवाओं को विभिन्न संक्रमित और गैर संक्रमित बीमारियों के अलावा बच्चों और महिलाओं की बीमारियों में भी विशेष रूप से प्रभावी माना जाता है। हालांकि होम्योपैथिक दवाओं के बारे में धारणा है कि इन दवाओं का असर रोगी पर धीरे-धीरे होता है लेकिन इस चिकित्सा प्रणाली की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि यह रोगों को जड़ से दूर करती है और इन दवाओं के साइड इफेक्ट भी नहीं के बराबर होते हैं। होम्योपैथी दवाएं प्रत्येक व्यक्ति पर अलग तरीके से काम करती है और अलग-अलग व्यक्तियों पर इनका असर भी अलग ही होता है। होम्योपैथी चिकित्सकों की मानें तो डायरिया, सर्दी-जुकाम, बुखारजैसी बीमारियों में होम्योपैथी दवाएं एलोपैथी दवाओं की ही भांति तीव्रता से काम करती हैं लेकिन अस्थमा, गठिया, त्वचा रोगों इत्यादि को ठीक करने में ये दवाएं काफी समय तो लेती हैं मगर इन रोगों को जड़ से खत्म कर देती हैं। विभिन्न शोधों के अनुसार कार्डियोवैस्कुलर बीमारी की रोकथाम, मैमोरी पावर बढ़ाने, उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने तथा ऐसी ही कुछ अन्य बीमारियों में होम्योपैथी दवाएं अन्य दवाओं की तुलना में ज्यादा कारगर होती हैं। होम्योपैथी के बारे में सरदार वल्लभभाई पटेल का कहना था कि होम्योपैथी को चमत्कार के रूप में माना जाता है।

भारत में होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद अधिनियम, 1973 के तहत होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली एक मान्यता प्राप्त चिकित्सा प्रणाली है, जिसे दवाओं की राष्ट्रीय प्रणाली के रूप में मान्यता प्राप्त है। केन्द्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सीसीआरएच) आयुष मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त अनुसंधान संगठन है, जो होम्योपैथी में समन्वय, विकास, प्रसार और वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देता है। 30 मार्च 1978 को इसका गठन आयुष विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संगठन के रूप में किया गया था। सीसीआरएच अनुसंधान कार्यक्रम और परियोजनाएं बनाती तथा चलाती है और होम्योपैथी के मौलिक एवं अनुप्रयुक्त पहलुओं में साक्ष्य आधारित अनुसंधान करने के लिए राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय उत्कृष्ट संस्थानों के साथ सहयोग करती है। केन्द्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद के अनुसार चिकित्सा का ही एक वैकल्पिक रूप है होम्योपैथी, जो 'समः समम् शमयति' अथवा 'समरूपता' दवा सिद्धांत पर आधारित है, जो दवाओं द्वारा रोगी का उपचार करने की ऐसी विधि है, जिसमें किसी स्वस्थ व्यक्ति में प्राकृतिक रोग का अनुरूपण करके समान लक्षण उत्पन्न किया जाता है, जिससे रोगग्रस्त व्यक्ति का उपचार किया जा सकता है। इस पद्धति में रोगियों का उपचार समग्र दृष्टिकोण के अलावा रोगी की व्यक्तिवादी विशेषताओं को अच्छी प्रकार से समझकर किया जाता है। भारत में होम्योपैथी सबसे लोकप्रिय चिकित्सा प्रणालियों में से एक है। देशभर में 210 से ज्यादा होम्योपैथी अस्पताल, 8 हजार से ज्यादा होम्योपैथी डिस्पेंसरी और करीब तीन लाख होम्योपैथी प्रैक्टिशनर हैं। भारत में आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में विश्व होम्योपैथी दिवस मनाया जाता है। आयुष (AYUSH) के अलग-अलग अंग्रेजी अक्षरों का पूरा अर्थ है आयुर्वेद, योग और नेचुरोपैथी, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी। आयुष का वास्तव में चिकित्सा सेवाओं के बीच महत्वपूर्ण स्थान है। इनमें होम्योपैथी को एक वैकल्पिक चिकित्सा के रूप में जाना जाता है। दिखने में भले ही होम्योपैथी दवाएं एक जैसी लगती है किन्तु वास्तव में विश्वभर में होम्योपैथी की 4000 से भी ज्यादा तरह की दवाएं हैं। बहुत सारी होम्योपैथी दवाओं का असर रोगी पर कुछ धीमी गति से होता है जबकि एलोपैथी दवाएं रोगी पर तुरंत असर दिखाती हैं, इसीलिए होम्योपैथी भले ही एलोपैथी जितनी लोकप्रिय नहीं है लेकिन दुनियाभर में यह उपचार के सबसे लोकप्रिय वैकल्पिक रूप में मौजूद हैं। दरअसल होम्योपैथिक उपचार सबसे सरल उपचार है, जो शरीर को अधिक प्राकृतिक उपचार प्रक्रिया की अनुमति देता है। होम्योपैथी दवाएं चिकित्सा का एक सुरक्षित और प्राकृतिक विकल्प प्रदान करती हैं, जो बिना किसी दुष्प्रभाव अथवा दवा के परस्पर क्रिया का कारण बनता है। सही मायनों में होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति सस्ती कीमत पर चमत्कार करती है।

होम्योपैथिक दवाएं कम लागत वाली बेहद प्रभावी और रूचिकर होती हैं, जिनका कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं होता और इनका आसानी से सेवन किया जा सकता है अर्थात् दवा भी और मिठास का मजा भी! होम्योपैथी के संस्थापक माने जाने वाले सैमुअल हैनीमैन का कहना था कि इलाज का उच्चतम आदर्श सबसे भरोसेमंद और कम से कम हानिकारक तरीके से स्वास्थ्य की तेज, कोमल और स्थायी बहाली है।

अमित राय

लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं

इंसानों में संत पुरुष और संतों में वीर पुरूष महात्मा फुले

महाराष्ट्र में तेरहवीं और अठारहवीं शताब्दी में संतों द्वारा समाज और धर्म के सुधार के लिए चलाए गए आंदोलन को सुधारणा कहा जाता था और उन्नीसवीं शताब्दी के महाराष्ट्रीय नवजागरण को भी सुधारणा ही कहा गया था। महाराष्ट्रीयन नवजागरण ब्रिटिश शासन की पश्चिमी शिक्षा और पश्चिमी मूल्यों से प्रेरित होने के बावजूद भी अपने अतीत यानी सुधारणा से अपनी जड़ों से जुड़ा रहा। महाराष्ट्र में अट्ठारहवीं शताब्दी तक सुधारणा कार्यक्रम या कहें आंदोलन संतों के नेतृत्व में चला और उन्नीसवीं शताब्दी में पश्चिमी शिक्षा प्राप्त मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवियों के द्वारा सुधारणा आंदोलन चलाए गए। इनके केंद्र में जातिभेद के प्रश्न और महाराष्ट्रीय अस्मिता की चेतना थी। जिन प्रश्नों और प्रवृतियों को लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तक नवजागरण चला था उसकी सार्थकता बीसवीं शताब्दी की राजनीतिक धाराओं में भी बनी रही। ये प्रवृत्तियां आज भी महाराष्ट्र में विद्यमान है जबकि ऐसी निरंतरता हमें भारत के अन्य प्रांतों में दिखाई नहीं देती है। आधुनिकता के समर्थक महाराष्ट्रीय सुधारक धर्म,समाज और राजनीति के प्रति उदार दृष्टिकोण रखते थे। यूरोपीय ज्ञानोदय और पश्चिमी शिक्षा से उन्हें जो भी आधुनिक मूल्य मिले उनका उत्साह पूर्वक स्वागत किया गया। लेकिन देसी आधुनिकता का पहला और बुनियादी मूल्य जातिभेद का विरोध ही हो सकता था। यह विरोध जातिभेद तोड़ने का अभियान नहीं बन सका क्योंकि समाज में जातिप्रथा की कट्टर समर्थक ताकतें मौजूद थीं। जिसकी पड़ताल गैरब्राह्मण समाज सुधारकों के द्वारा की गई जिसके सबसे बड़े प्रतिनिधि ज्योतिराव गोविंदराव फुले थे। फुले प्रार्थना समाज के उदार सुधारकों के कड़े आलोचक और परंपरानिष्ठ ब्राह्मणों के विरोधी थे। उन्होंने संतों के आंदोलन से अपना संबंध जोड़ते हुए उसके प्रति आलोचनात्मक रवैया अपनाया। दलित शूद्रों के प्रति वरकरी संप्रदाय के ब्राह्मण संतों की उदारता को फुले ने संदेह की दृष्टि से देखा। उनका संदेह इस बात को लेकर था कि वरकरी संतों ने भागवत धर्म के नाम पर असल में उस वैदिक धर्म को ही आदर दिया था जो समाज में वर्ण व्यवस्था को बनाये रखने का आग्रह करता है। फुले ने वरकरी संप्रदाय के ब्राह्मण संतों द्वारा दलित और शूद्रों को सिर्फ धर्म और भक्ति के क्षेत्र में स्थान देने (और बाकी समाज में वर्णाश्रम धर्म व्यवस्था को जारी रखने) के प्रयत्न को इसके ऐतिहासिक संदर्भ में देखा तो उन्हें लगा कि इस उदारता के पीछेएक कारण इस्लाम है। फुले ने भागवत धर्म के आंदोलन में मुसलमान विरोध को छुपा हुआ देखा और दलित-शूद्रों के प्रति ब्राह्मण संतों की उदारता को उनकी धूर्तता बतलाया। इस ऐतिहासिक संदर्भ का ज़िक्र करते हुए ज्योतिबा फुले कई प्रश्न उठाते हैं वे पूछते हैं कि जब देश में मुसलमान आये और इस्लाम फैलने लगा,सिर्फ तभी इन ब्राह्मण संतों को दलित-शूद्रों की याद क्यों आयी? उससे पहले कभी क्यों नहीं आयी? फुले के मुताबिक देश में मुसलमान विरोधी भावनाएं फैलाने में भी इन्हीं का हाथ था। ब्राह्मण संतों ने 'अपने ग्रंथों के द्वारा किसानों के मन को गुमराह कर दिया जिससे वे कुरान और मुहम्मदी लोगों को नीच मानने लगे हैं'। फुले ने प्रार्थना समाज के उदार ब्राह्मणों और उनके आदर्श ज्ञानेश्वर और परंपरानिष्ठ ब्राह्मणों और उनके आदर्श रामदास के बीच कोई बुनियादी फर्क नहीं किया। फुले ने सबका नाम एक ही साथ लिया। फुले की नजरों में स्वामी रामदास ने शिवाजी के जरिये महाराष्ट्र में ब्राह्मण राज चलाये रखना सुनिश्चित किया। परंपरानिष्ठ ब्राह्मणों के इस आदर्श संत के खिलाफ फुले ने बहुत ही सख्त टिप्पणी की उन्होंने कहा कि 'रामदास धूर्त आर्य ब्राह्मण था जिसने शूद्र राजा शिवाजी की, उनके अनपढ़ होने की वजह से चापलूसी की'। ज्योतिबा फुले ने किसी भी ब्राह्मण संत पर विश्वास नहीं किया और पांच सौ सालों तक चले संतों के आंदोलन में से जिस एक संत का नाम श्रद्धा से लिया,वह संत तुकाराम थे,जो मराठी भाषियों के बीच सबसे आदरणीय और लोकप्रिय थे। फुले की नजर में तुकाराम एकमात्र ऐसे संत थे जो दलितों-शूद्रों को ब्राह्मण धर्म के आध्यात्मिक और कर्मकांडी प्रपंचों से बाहर निकलने का रास्ता दिखाते हैं। अगर कोई संत शूद्रों के अनपढ़ राजा शिवाजी का सच्चा हितैषी था तो वह तुकाराम ही थे। फुले लिखते है कि 'तुकाराम नाम का एक साधु पुरुष किसान के घर में पैदा हुआ। वह किसानों को उनके जाल से मुक्त कर देगा,इस डर की वजह से भट्ट ब्राह्मणों के अटल वेदांती रामदास स्वामी ने महाधूर्त गनगभट्ट के सहयोग से अनपढ़ शिवाजी को गुमराह करने का निश्चय किया। उन्होंने शिवाजी और निर्विकार तुकाराम का स्नेह संबंध बढ़ने नहीं दिया।'

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में ज्योतिबा फुले ने महाराष्ट्र में सभी ग़ैर-ब्राह्मण जातियों को एक अस्मिता और रेडिकल विचारधारा के तहत लामबंद करने की कोशिश की। फुले ने रामदास द्वारा प्रचारित महाराष्ट्र धर्म का नाम नहीं लिया लेकिन महाराष्ट्र धर्म के मूर्त प्रतीक शिवाजी के राज्य को शूद्रों के राज्य के रूप में गर्व से याद करते हुए शिवाजी को 'कुनबी कुलभूषण' कहा। फुले द्वारा शिवाजी को 'कुनबी कुलभूषण' कहना अत्यंत अर्थपूर्ण था और वे ब्राह्मणों द्वारा तैयार वंशावली को भी नकार रहे थे। इसके लिए फुले ने तीन महत्वपूर्ण स्थापनाएं दी। सबसे पहले उन्होंने सत्रहवीं सदी के उस पूरे दृश्य से मुसलमान को अगर पूरी तरह से हटाया नहीं तो उसे गौण करने का कार्य अवश्य किया। मुसलमानों को गौण कर देने का मतलब मुसलमानों की उस तथाकथित धर्मनाशी भूमिका को खारिज कर देना था जिसकी ब्राह्मण सबसे ज्यादा दुहाई देते थे। उन्होंने स्थापित किया कि समाज का मुख्य अंतर्विरोध मुसलमान और हिंदू के बीच नहीं बल्कि ब्राह्मणवादी व्यवस्था और व्यापक ग़ैर-ब्राह्मण आवाम (मुख्यतः दलित-शूद्रों) के बीच है। इसके बाद फुले ने शिवाजी के मराठा राज्य के साथ ब्राह्मण वर्ग के इस बहुप्रचारित संबंध को खारिज किया कि एक ब्राह्मण रामदास शिवाजी के गुरु थे और मराठा राज्य क़ायम होने का मुख्य श्रेय रामदास के उपदेशों को ही मिलना चाहिए। फुले के नेतृत्व में महाराष्ट्रीयन नवजागरण की ग़ैर-ब्राह्मण धारा ने ब्राह्मणों,सुधारकों और परंपरानिष्ठों से समाज, संस्कृति और इतिहास के हर मुद्दे पर लोहा लेने का कार्य किया। ज्योतिबा फुले ने शिवाजी महाराज पर पहला पंवाड़ा 1869 में लिखा। पंवाड़ा यानी वीरगाथा। शिवाजी महाराज पर पंवाड़े पहले से प्रचलित थी लेकिन मौखिक रूप में नए लिखित पंवाड़ों की मुख्य विशेषता यह थी कि इनमें शिवाजी और मराठा राज्य के इतिहास की व्याख्या करने के बहाने से विभिन्न सामाजिक वर्गों ने एक दूसरे को चुनौती देते हुए अपनी-अपनी सामुदायिक अस्मिता प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया। ज्योतिबा फुले ने शिवाजी और मराठा राज्य के पूरे इतिहास की गैर-ब्राह्मणी व्याख्या को बहुत ही प्रभावशाली ढंग से स्थापित करने की कोशिश की। उनके मुताबिक आर्यों की वर्णाश्रम संस्कृति से पहले का राजा बली श्रम करने वाले शूद्र किसानों का प्रिय राजा था। फुले ने खेत को क्षेत्र और इसलिए खेती करने वालों को क्षत्रिय कहा,जो उनके मुताबिक इन शूद्रों को पहले से कहा जाता था। बली का राज्य हर तरह से धनधान्य से भरा हुआ था, उनकी प्रजा खुशहाल थी। तब उत्तर से आर्य ब्राह्मण वामन का रूप धारण करके आये जिन्होंने छल-कपट से बली का राज्य हड़प लिया और खुद राजा बन बैठे। उनके राज्य में शूद्र क्षत्रियों (किसानों) का भयानक शोषण -उत्पीड़न शुरू हुआ। वे ग़ुलाम बना लिए गए और गरीबी की बुरी दशा में पहुंच गए। फुले के मुताबिक प्राचीन राजा बली के राज्य को वामन रूप धारण करके हड़पने का इतिहास मानो शिवाजी और उनके मराठा राज्य के अपहरण के रूप में फिर से दोहराया गया। शिवाजी शूद्रों के राजा थे। शूद्र सैनिकों के बल पर उन्होंने शूद्रों के कल्याण के लिए जो राज्य खड़ा किया था,उसे पेशवा ब्राह्मणों ने हड़प लिया। शूद्रों की ताकत से खड़े हुए मराठा राज्य में शूद्र फिर से गुलामी की दशा में पहुंच गए। इस पंवाड़े में फुले ने ब्राह्मणों द्वारा प्रचारित इस कहानी को खारिज कर दिया कि शिवाजी ने अपना राज्य गौ और ब्राह्मण के प्रतिपालन के लिए कायम किया था। फुले ने एक ओर मराठा राज्य के पतन और उसके बाद शूद्रों की बदहाली के लिए ब्राह्मणों को जिम्मेदार ठहराया, दूसरी ओर राजा बली और वीर शिवाजी के राज्य को शूद्रों के ऐसे गौरवपूर्ण इतिहास के रूप में पेश किया जिससे प्रेरणा लेकर वे फिर से खड़े होने और अपनी वर्तमान हालत को बदलने की लड़ाई लड़ सकते हैं। इस ब्राह्मणवादी निर्मित समाज व्यवस्था को जानने और समझने के लिए आवश्यक था कि हर व्यक्ति शिक्षित हो जिसके प्रयास ज्योतिबा फुले के द्वारा किए गए और आधी आबादी को शिक्षित करने का जिम्मा उन्होंने अपनी अर्धांगनी सावित्री बाई फुले को सौंप दिया। शूद्रों/दलितों को न्याय दिलाने के लिए महात्मा फुले ने 1873 में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की, जिससे लोगों में फैले अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियों और जातिप्रथा को समाप्त किया जा सके। अछूतों के लिए जलाशय की व्यवस्था की, मूर्ति पूजा का विरोध किया तथा किसानों और श्रमिकों को जागरूक करने का कार्य भी सत्यशोधक समाज के बैनर तले किया गया तथा इनको शिक्षित करने के लिए विद्यालय भी खोले गए। फुले दंपत्ति ने कई विधवाओं के विवाह करवाए तथा एक विधवा महिला के बच्चे को दत्तक लेकर उस महिला का विवाह भी करवाया। इसके अतिरिक्त गर्भवती महिलाओं को समाज के उत्पीड़न से बचाने के लिए घरों का निर्माण और बच्चों के लिए अनाथ आश्रमों का निर्माण भी किया। नारायण मेघाजी लोखंडे महात्मा ज्योतिराव फुले की सत्यशोधक आंदोलन का एक महत्वपूर्ण नाम थे। लोखंडे जी फुले जी को 'इंसानों में संत पुरुष और संतों में वीर पुरुष' मानते थे। उन्होंने 11 मई, 1888 ई. में मुंबई के कोलीवाड़ा में फुले जी के बड़े सम्मान का आयोजन किया,इसके लिए पूरे महाराष्ट्र से भारी संख्या में शूद्र उपस्थित थे। इसी भव्य समारोह में,ज्योतिराव गोविंदराव फुले जी को हजारों मेहनती लोगों की उपस्थिति में 'महात्मा' की उपाधि से सम्मानित किया गया। यह महत्वपूर्ण है कि फुले को दी गई 'महात्मा' की उपाधि के पीछे न तो कोई शासक था और न ही कोई पूँजीपति। इसके पीछे हिंदू धर्म पीड़ित शूद्र, अतिशूद्र और महिलायें थीं। फुले उनकी गरीबी,अर्थहीनता और बोरियत भरे जीवन से बेहद परेशान थे। इसलिए उन्होंने हिंदू धर्म की आलोचना करने वाली गुलामगिरी, शेतक-याचा आसुड, किसान का कोडा, ब्राह्मणों का कसब आदि रचनाएं लिखी और अखंड में पद्य रचना की। उनके पूरे लेखन में सामाजिक, आर्थिक विषमता से ग्रसित धर्म, रूढ़ियों की गुलामी में रखे हुए और सिर्फ अपना पेट भरने के लिए और जीवित रहने के लिए किया हुआ आक्रोश, व्यवस्था के प्रति अस्वीकार दिखाई देता है। महात्मा फुले की जन्मतिथि पर आयोजित कार्यक्रमों में उनके द्वारा प्रतिपादित सुधारवादी कार्यक्रमों का विश्लेषण किया जाना आवश्यक है और उनको वर्तमान समय में लागू करने के प्रयास करना भी आवश्यक हैं। जिससे अंधविश्वासों,कर्मकांडों, जातिवाद और गैर बराबरी को समाप्त कर समतामूलक समाज की स्थापना की जा सके जो तर्क पर आधारित विज्ञानपरक हो। एक ऐसे समाज का निर्माण किया जा सके जिसकी नींव महात्मा फुले ने रखी थी।

अब सुबह लगेंगे जिले के सभी स्कूल, कलेक्टर ने जारी किए आदेश

● कलेक्टर ने शाला संचालन के समय में किया परिवर्तन

बैतूल। भीषण गर्मी के चलते बच्चों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए स्कूलों के संचालन समय में बदलाव किया गया है। गौरतलब है कि दैनिक सुबह सवेरे के 9 अप्रैल के अंक में 'तपती दोपहरी में स्कूल आना-जाना कर रहे छोटे-छोटे बच्चे' 40 डिग्री पर पहुंचा पारा, नहीं बदला स्कूलों का टाइम शीर्षक से खबर प्रकाशित की गई थी जिसमें पालकों द्वारा बच्चों को लू और गर्म हवाओं से राहत देने के लिए स्कूल का समय बदलने की मांग की गई का भी उल्लेख किया गया था। इस पर जिला प्रशासन ने तुरंत संज्ञान लेते हुए आज बुधवार को दोपहर 12 बजे के पहले ही स्कूलों का संचालन करने के आदेश जारी कर दिए।

कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने ग्रीष्म ऋतु में बढ़ते तापमान के कारण बच्चों के स्वास्थ्य पर संभावित प्रतिकूल प्रभाव को ध्यान में रखते हुए बुधवार को आदेश जारी कर शाला संचालन के समय में परिवर्तन किया है। जारी आदेश के अनुसार जिले में संचालित सभी शैक्षणिक संस्थाओं का संचालन समय दोपहर 12 बजे से पहले निर्धारित किया गया है। यह आदेश नर्सरी से कक्षा 12वीं तक की सभी शासकीय, अशासकीय, अनुदान प्राप्त, सीबीएसई, नवोदय, केंद्रीय आदि शैक्षणिक संस्थाओं पर लागू होगा। हालांकि परीक्षाएं पूर्व निर्धारित समय अनुसार ही संचालित की जाएंगी।

बीमारी से परेशान महिला ने खाया जहर, मौत

बैतूल। बीमारी से परेशान एक महिला ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली। घटना झल्लार थाना इलाके के बांसनेरकला की है। महिला को इलाज के लिए नागपुर ले जाया जा रहा था। जहां उसने रास्ते में दम तोड़ दिया। अस्पताल पुलिस चौकी ने मृतिका का पीएम करवाकर शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया। पुलिस के मुताबिक महिला प्रमिला बंजारे(45) पति गणपति बंजारे लीवर की बीमारी से परेशान थी। मंगलवार सुबह उसने घर में ही किसी जहरीले पदार्थ खा लिया। उल्टियां होने पर परिजन उसे बैतूल अस्पताल लेकर आए थे। यहां हालत नाजुक बनी रहने के चलते परिजन उसका इलाज करवाने नागपुर ले कर जा रहे थे। लेकिन बुधवार को उसने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। परिजन शव को गांव ले गए है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

दिव्यांगजनों एवं वरिष्ठजनों को सहायक उपकरणों का किया वितरण

बैतूल। भारत सरकार की एडिप योजना के अंतर्गत बुधवार को चिन्हांकित दिव्यांगजनों को सहायक उपकरण एवं कृत्रिम अंग वितरण शिविर का आयोजन जिला दिव्यांग एवं पुनर्वास केन्द्र जिला चिकित्सालय परिसर में किया गया। इस दौरान बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल एवं नगर पालिका अध्यक्ष पार्वती बारस्कर द्वारा शिविर का शुभारंभ किया गया। सामाजिक न्याय विभाग की उप संचालक सुश्री रोशनी वर्मा ने बताया कि शिविर में विधायक श्री खंडेलवाल ने दिव्यांगजनों एवं वरिष्ठजनों को 22 मोट्राइज्ड ट्राइसिकल, 27 ट्रायसिकल, 14 व्हीलचेयर, 80 श्रवण यंत्र, 26 बैसाखी, 16 वाकिंग स्टीक, 07 वॉकर के साथ ही नी ब्रेस, सिलिकॉन कुशन, टीएलएम किट, स्मार्ट फोन इत्यादि सामग्री कुल 127 सहायक उपकरणों का वितरण किया गया। कार्यक्रम में सिविल सर्जन डॉ.जगदीश घोरे, डॉ. रानू वर्मा, जिला दिव्यांग एवं पुनर्वास केन्द्र की प्रशासनिक अधिकारी श्रीमती सिलविया शुक्ला, नगर पालिका परिषद बैतूल से राजाराम यादव, पर्वत राव धोटे, जिला दिव्यांग एवं पुनर्वास केन्द्र के समस्त कर्मचारी उपस्थित रहे।

मुख्य सड़क और शहर की गलियों में आवारा सांड और मवेशियों का कब्जा

टहलने नहीं निकल पा रहे बुजुर्ग, दुकानदार, बच्चे और महिलाएं भी परेशान

संजय द्विवेदी, बैतूल। शहर के लोग इन दिनों आवारा सांड और मवेशियों से खासे परेशान हैं। मुख्य सडकों से लेकर क्षेत्र की अंदरूनी गलियों और साप्ताहिक बाजार में जहां-तहां आवारा सांड और मवेशियों का कब्जा रहता हैं। खासकर साप्ताहिक बाजार वाले दिन आवारा मवेशियों और सांडों की मौजूदगी हमेशा देखी जा सकती है, जो लोगों के लिए मुसीबत बनती हैं। शहर के चंद्रशेखर वार्ड के निवासी चोखेलाल दीवान, एसके दुबे आदि लोगों ने बताया कि पिछले कुछ माह से शहर खासकर सदर क्षेत्र में दर्जनों की संख्या में आवारा सांड और मवेशी सडको पर घूमते रहते है या बैठे-खड़े रहते है। गत सोमवार को सदर क्षेत्र में एक गुस्साए सांड ने वाहनों को सींग से टक्कर मारना और लोगों के पीछे दौडना शुरू कर दिया। उसके द्वारा वाहनों को सींग से टक्कर मारकर कार की लाइट्स और फाइबर को फोड़ दिया, वहां कुछ देर के लिए पूरी तरह से ट्रैफिक जाम हो गया था। सदर निवासी सोनू बड़ोनिया ने बताया कि पहले भी काफी लोगों को यह सांड घायल कर चुका है। इस प्रकार के मवेशियों के नुकीले सींग से हमेशा लोगों को जान का खतरा बना रहता है, इन मवेशियों के कारण छोटे-छोटे बच्चे, महिलाएं और बड़े बुजुर्ग भी सडकों से निकलने में डरते हैं, क्योंकि यह सांड महिलाओं, बुजुर्गों और बच्चों को मारने दौड़ते हैं। जिसकी वजह से बच्चे और बुजुर्ग अकेले बाहर नहीं निकल पाते हैं। लोगों का कहना है कि इसके लिए नगरपालिका प्रशासन पूरी तरह से जिम्मेदार है, क्योंकि लोग आवारा सांड और मवेशियों को लेकर शिकायत भी करते है तो नगरपालिका प्रशासन द्वारा कोई ध्यान नहीं दिया जाता है और अभी आवारा मवेशियों को पकड़ने की कार्रवाई भी बंद है।

बुजुर्ग ने कहा- हम लोग सड़क पर टहल नहीं पाते - चन्द्रशेखर वार्ड निवासी बुजुर्ग आरएस दुबे ने बताया कि आवारा सांड और मवेशियों की वजह से हम लोग सुबह- शाम सडक़ पर टहल भी नहीं पाते और ना ही बच्चे खेल पाते हैं। आवारा सांड और मवेशी लोगों के हाथो में थैला देखकर उन्हें खाने के लिए पीछे-पीछे आते है। महिलाएं भी जब मंदिर जाती है तो पूजा की थाली और खाने की वस्तुओं को देखकर मवेशी पीछे लग जाते है। वाहन चालक भी सडक़ पर खड़े आवारा सांड के आजू-बाजू से बचकर निकलते हैं, जिससे दुर्घटना का भय बना रहता है। कई बार तो यह सांड अचानक मारने दौड़ते हैं। ऐसे में लोगों को डंडा लेकर आना-जाना पड़ता है। लेकिन आवारा सांड और मवेशियों को पकडऩे के लिए नगरपालिका द्वारा कोई अभियान नहीं चलाया जा रहा है, जिसके कारण लोगों में रोष है।

व्यापारियों को भी पहुंचाते हैं नुकसान, हरियाली को कर रहे बर्बाद - शहर की सड़कों पर घूमने वाले आवारा मवेशियों से सबसे ज्यादा परेशानी साप्ताहिक बाजार के गरीब दुकानदारों को उठाना पड़ती है, दूरस्थ अंचलों से आए ग्रामीण अपनी सब्जी की दुकान जैसे ही लगाते हैं, तो इन मवेशियों का झुंड उनकी सब्जी-भाजियों को इधर-उधर से खींचकर बिखरा देता है, जिससे उन्हें आर्थिक छती उठानी पड़ती है। दुकानों में रखे सामान या खाने की वस्तुओं को भी आवारा मवेशी मुंह मारते है, जिससे व्यापारियों का भी काफी नुकसान हो जाता है। व्यापारियों के द्वारा मवेशियों को डंडा मार कर भगाने पर यह मवेशी किसी वाहन से टकरा जाते हैं, जिससे हादसा हो जाता है। इधर पर्यावरण संरक्षण एवं हरियाली को बढ़ावा देने के लिए किये गये पौधारोपण को भी आवारा मवेशी नुकसान पहुंचाते है। मवेशी पौधों को पनपने से पहले ही चारागाह बना लेते है। इनके ऐसा करने से शहर की सुंदरता और हरियाली भी बर्बाद हो रही है। कई बार तो यह आवारा पशु लोगों के घरों में लगे फूलों या अन्य पौधों को भी खा जाते हैं, जिससे शहर की हरियाली पर भी प्रभाव पड़ रहा है।

रात के समय घेर लेते हैं सड़क

शहर की सड़कों पर दिन भर स्वछंद विचरण करने वाले ये आवारा सांड और मवेशियों का रात को सडक़ों और मोहल्ले की गलियों में बसेरा होता है। कई जगहों पर इन मवेशियों का झुंड पूरी सड़क को घेरकर बैठ जाते या खड़े रहते है। जिसकी वजह से वाहन चालको का सडक़ से निकलना मुश्किल हो जाता है। इन पशुओं के सिंगों पर रेडियम पट्टी न होने से भी वाहन चालकों को यह दूर से नजर नहीं आते, जिससे कईयों बार वाहन चालक दुर्घटना का शिकार हो जाते। सदर क्षेत्र के चंद्रशेखर वार्डवासियों का कहना है कि यहां के कई पुराने निवासरत लोगों ने बड़ी संख्या में मवेशियों को पाल तो रखा है, परंतु उनके लिए कोठे तक नहीं बनाएं है, जिससे ये मवेशी शाम होते ही पशुपालक के घर के सामने सड़क /गली पर ही डेरा जमा लेते हैं वँहा पसर जाते हैं, एक प्रकार से देखा जाए तो इन पशुपालकों के घर के सामने की सडक़ मवेशियों का कोठा बन गई है, जिससे वहां के अन्य निवासियों का अपने वाहनो को लेकर सड़क से निकलना मुश्किल हो जाता है, खासकर ऐसी जगहों पर चौपहिया वाहन तो निकल ही नहीं पाते हैं। इन मवेशियों को बचाने के चक्कर में दोपहिया वाहन चालक फिसल जाते हैं, या अन्य बड़े वाहन दुर्घटना का शिकार हो जाते हैं। अगर नगरपालिका इन आवारा पशुओं को पकडकर गौशाला पहुंचा देती है, तो इससे शहर में होने वाले हादसे कम हो जाएंगे।

इनका कहना है -

आज से हमारे द्वारा शहर में आवारा मवेशियों को पकड़ने की कार्रवाई चालू कर दी गई है। इन मवेशियों को पकडक़र गौशाला में भिजवाया जाएगा तथा मवेशी मालिकों पर जुर्माना भी लगायेंगे।

- सतीश मटसेनिया, सीएमओ, नगरपालिका बैतूल

बिना झुके राष्ट्र हित में निर्णय लेती है भाजपा : दुर्गादास उइके

भैंसदेही विधानसभा सक्रिय सदस्य कार्यकर्ता सम्मेलन हुआ संपन्न

बैतूल। विधानसभा स्तरीय भैंसदेही विधानसभा का सक्रिय सदस्य सम्मेलन ताप्ती किनारे ग्राम सिमोरी में आयोजित किया गया। सक्रिय सदस्यो को संबोधित करते हुए केन्द्रीय राज्य मंत्री, क्षेत्रीय सांसद दुर्गादास उइके ने कहा कि जिसमें देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार का तीसरा कार्यकाल राष्ट्र की राजनीति और विकास पथ पर परिवर्तन के एक नए युग की शुरुआत कर रहा है। श्री उइके ने कहा कि आज देश में धार्मिक नगरी सुरक्षित, शिक्षा की क्रांति, सामाजिक सुरक्षा, देश में सुरक्षित कानून, आतंकवाद का सफाया, बच्चों के जन्म से लेकर के विवाह तक की एवं वृद्ध जनों के लिए वृद्धा पेंशन किसानों के लिए सम्मान निधि शक्तिशाली जल सेना थल सेना वायु सेना से दुश्मनों की हालत पस्त हो चुकी है ऐसी प्रधानमंत्री की नीति ने आज देश को काफी बड़ा संबल प्रदान कराया है देश के सदन में हमेशा विपक्ष ने डराने धमकाने के अलावा कोई काम नहीं किया लेकिन आज देश के लोकप्रिय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कानून संशोधन के लिए पूरी ताकत से बिना डरे बिना झुके संशोधन बिल कानून पास करवा लिया जैसे वक्फ बोर्ड, धारा 370 को संशोधन करके एक देश के हित में बडा निर्णय लिया है।

दो सीट से बहुमत तक का सफर : सुधाकर पंवार - भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ताओं की संगठनात्मक एकता का एक बडा प्रतीक है जिसके चलते आज केंद्र में हमें लगातार नेतृत्व करने का मौका मिला है एक समय ऐसा भी था कि जब पूरे देश में भारतीय जनता पार्टी की केवल दो सीट हुआ करती थी आज पूर्ण बहुमत की सरकार है यह संगठन और कार्यकर्ता की ताकत का परिणाम है आज देश में लोगों को पूर्ण रूप से संवैधानिक आजादी की जिंदगी के साथ स्वतंत्रता के मौलिक अधिकारों की रक्षा देश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार कर रही है। सम्मेलन को संबोधित करते हुए विधायक महेन्द्र सिंह चौहान ने कहा कि दिग्विजयसिंह के नेतृत्व में चल रही बंटाढार सरकार को मध्यप्रदेश की जनता ने हटाया तो उसके बाद भाजपा की विकास वाली नीति पर लगातार भरोसा जताते हुए भाजपा की सरकार प्रदेश में बन रही है। यह जनता का विश्वास है कि जो पिछले विधानसभा चुनावों में हमें प्रदेश में 49 प्रतिशत वोट मिला और जिले में भी पांचो विधानसभा सीट पर कमल खिला है। सम्मेलन का मंच संचालन जिला उपाध्यक्ष देवीसिंह ठाकुर ने किया एवं अंत में आभार जिला मंत्री एवं विधानसभा संयोजक अतीत पवांर ने व्यक्त किया। इस दौरान मंच पर मंडल अध्यक्ष केशर लोखंडे, पुष्पा खाडे, उषा ढिकारे, सुनिल टेकपुरे, अनिल उइके, कृष्णा यादव, संजू चिल्हाटे, जिला पंचायत सदस्य सोनू सुनील भलावी, युवा मोर्चा के सुनिल अडलक मौजूद रहे।

सभी राशन कार्ड के हितग्राहियों को ई-केवाईसी करना होगा अनिवार्य

जिले में 30 अप्रैल तक चलेगा विशेष ई-केवाईसी अभियान

बैतूल। बैतूल जिले में निवासरत सभी राशन कार्ड धारकों के लिए ई-केवाईसी कराना अब अनिवार्य कर दिया गया है। इसके लिए जिले में 9 अप्रैल विशेष ई-केवाईसी अभियान प्रारंभ किया गया है जो आगामी 30 अप्रैल 2025 तक चलेगा।अभियान को सफल बनाने के लिए कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने जिला खाद्य नागरिक आपूर्ति विभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए है। उन्होंने निर्देश दिए कि अभियान के अंतर्गत सभी हितग्राहियों की ई-केवाईसी अनिवार्य रूप से कराई जाए और ई-केवाईसी के पश्चात उसकी सत्यता का भी परीक्षण किया जाए। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने अभियान का व्यापक प्रचार-प्रसार किए जाने के भी निर्देश दिए है। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी विक्रेताओं की साप्ताहिक बैठकें आयोजित कर ई-केवाईसी की समीक्षा की जाए और अभियान की प्रगति पर लगातार नजर रखी जाए। कलेक्टर ने स्पष्ट किया कि राशन वितरण कार्य ई-केवाईसी के कारण प्रभावित नहीं होना चाहिए। पात्र परिवारों को पहले राशन वितरण किया जाए और शेष समय में विक्रेता ई-केवाईसी की प्रक्रिया पूरी कराएं। इस पूरी प्रक्रिया की नियमित मॉनिटरिंग की जाएगी। जिला आपूर्ति अधिकारी केके टेकाम ने बताया कि मध्य प्रदेश शासन खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग द्वारा सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत शासकीय उचित मूल्य दुकानों से राशन वितरण की व्यवस्था को प्रत्येक उपभोक्ता की ई-केवाईसी का कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए है। ई केवाईसी की व्यवस्था में शासकीय उचित मूल्य की दुकान से राशन प्राप्त करने वाले प्रत्येक परिवार के प्रत्येक सदस्य के उचित मूल्य की दुकान के विक्रेता के पास जाकर पीओएस मशीन से ई-केवाईसी करवाना आवश्यक है। इसके लिए राशन प्राप्त करने वाले परिवार के हर व्यक्ति को उचित मूल्य की दुकान पर संपर्क करना होगा।

1 लाख 69 हजार 845 सदस्यों की होगी ई-केवायसी - जिले में कुल 12 लाख 76355 सदस्यों के ई केवाईसी के विरुद्ध 1106510 लोगों द्वारा ई-केवाईसी किए जा चुके है। शेष 1 लाख 69 हजार 845 सदस्यों की शासन नियम अनुसार 9 अप्रैल से 30 अप्रैल तक विशेष अभियान के माध्यम से ई केवाईसी की जाएगी। इसके लिए प्रत्येक जनपद पंचायत स्तर पर सीईओ और नगरीय क्षेत्र सीएमओ को नोडल अधिकारी बनाया गया है, जिसका पर्यवेक्षण संबंधित एसडीएम करेंगे। ग्राम पंचायत स्तर पर यह कार्यवाही उचित मूल्य दुकान के विक्रेता के साथ ग्राम पंचायत सचिव, रोजगार सहायक एवं नगरीय क्षेत्र में विक्रेता के साथ वार्ड प्रभारी को कार्य पूर्ण करने की जिम्मेदारी सौंप गई है।

दीवार लेखन एवं निबंध प्रतियोगिता माध्यम से दिया जल संरक्षण का संदेश

ग्राम पंचायत आष्टा में जन सहयोग से किया सोकपिट निर्माण

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशन में जल गंगा संवर्धन अभियान 2025 के तहत अनेक गतिविधियां जल संरक्षण के क्षेत्र में चलाई जा रही है। जिसके अंतर्गत चौपाल बैठकें, जल संरचनाओं का निर्माण, जन जागरूकता रैलियां, जल स्रोतों की साफ-सफाई गहरीकरण आदि अनेक गतिविधियां लगातार की जा रही है। इसी श्रृंखला में घोडाडोंगरी विकासखण्ड में नवांकुर संस्था नवोदित ग्राम उत्थान महिला एवं बाल विकास समिति, देवी सोशल वर्क एवं एजुकेशन सोसाइटी घोड़ाडोंगरी द्वारा चोपना तथा घोड़ाडोंगरी सेक्टर में दीवार लेखन के माध्यम से जल संरक्षण का संदेश गांव-गांव में दिया जा रहा है। ब्लॉक समन्वयक सन्तोष राजपूत के मार्गदर्शन में दीवार लेखन के साथ-साथ शासकीय महाविद्यालय घोड़ाडोंगरी में युवाओं के बीच निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें युवाओं ने बढ़-चढक़र हिस्सा लिया तथा जल संरक्षण के अनेक पहलू पर अपने विचार व्यक्त किया। निबंध प्रतियोगिता के अवसर पर मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम के सभी परामर्शदाता एवं सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे। चिचोली विकासखण्ड में जल गंगा संरक्षण अभियान अंतर्गत जल के महत्व को स्कूली बच्चों तक पहुँचाने के उद्देश्य से म.प्र.जन अभियान परिषद के नवांकुर संस्था सागर ग्राम उत्थान महिला एवं बाल विकास नवांकुर संस्था चिचोली, ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति जोगली के द्वारा स्कूल में गंगा संवर्धन अभियान के तहत पाटाखेड़ा और नसीराबाद स्कूल में जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत रंगोली और पोस्टर लेखन प्रतियोगिता करवाई और बच्चों ने जल संरक्षण के ऊपर अपने विचार भी रखे। उक्त प्रतियोगिता में परामर्शदाताओं की भूमिका भी रही।

सोख्ते ग` का निर्माण कर जल संरक्षण का दिया संदेश

विकासखंड प्रभातपट्टन में म.प्र.जन अभियान परिषद द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत ग्राम आष्टा के प्रसिद्ध अम्बा माई के मंदिर में पीने के पानी की टंकी के पास बहने वाले व्यर्थ पानी की निकासी के लिए जन अभियान की टीम ने सोख्ते गड्ढे का निर्माण कर जल संरक्षण का संदेश दिया।इसके पश्चात मंदिर परिसर में जल संरक्षण विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें विकासखंड समन्वयक राधा बरोदे द्वारा जल स्रोतों के संरक्षण हेतु ग्राम वासियों से चर्चा कर ग्रामवासियों को आने वाली पीढी के लिए धन संचय की बजाय जल व पेडो का संरक्षण करने हेतु जागरूक किया , सभी ग्रामवासियों को अपने अपने घरों के निकलने वाले पानी को सडक पर बहने से रोकने के लिए सोकपिट बनाने हेतु प्रेरित किया और सभी उपस्थित प्रतिभागियों को जल संरक्षण का संकल्प भी दिलाया। नवांकुर संस्था द्वारा ग्राम में जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत जल संरक्षण का संदेश देते हुए दीवार लेखन भी किया गया।

13 करोड़ के घोटालेबाजों पर अगर नहीं की कार्यवाही, तो कांग्रेस करेगी बड़ा आंदोलन : हेमंत वागद्रे

बैतूल। शहर से लेकर राजधानी तक घोटाले का साम्राज्य वर्तमान की भाजपा सरकार में फैला हुआ है। चिचोली भीमपुर ब्लाक में राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन का 13 करोड़ से ज्यादा का घोटाला, तो घोटालेबाज सौरभ मिश्रा जिसने खरबों का घोटाला मुख्यमंत्री व मंत्रियों की मिलीभगत से किया, उसको जमानत देना भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा है। अगर अपराधियों के खिलाफ सरकार व प्रशासन ने कार्यवाही नहीं की तो अगले पांच दिनों में कांग्रेस बडा आंदोलन करेगी। उक्त उदगार जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष हेमंत वागद्रे ने चिचोली में आयोजित पुतला दहन कार्यक्रम में कही। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जित्तू पटवारी के निर्देशानुसार ब्लॉक कांग्रेस कमेटी चिचोली में राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन में हुए 13 करोड़ से ज्यादा के घोटाले एवं प्रदेश सरकार के परिवहन घोटाले में आरोपी सौरभ मिश्रा को जमानत दिये जाने के विरोध में जयस्तंभ चौक पर पुतला दहन व ज्ञापन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें कांग्रेसियो ने नारे लगाते हुए जयस्तंभ चौक पर एकत्रित होकर मुख्यमंत्री मोहन यादव का पुतला दहन किया। कार्यकर्ताओं ने तहसील कार्यालय पहुंचकर तहसीलदार को राज्यपाल के नाम ज्ञापन सौपा। इस अवसर पर विजय आर्य ने कहा कि मोदी सरकार ने 50 रुपए गैस सिलेंडर के दाम बढ़ाकर महंगाई दर में आश्चर्यजनक रूप से बढ़ोतरी कर दी। जिसका कांग्रेस विरोध करते हैं और गैस सिलेंडर सस्ता करने के लिए ज्ञापन दिया। इस अवसर पर पूर्व जनपद अध्यक्ष बटनु पटेल, कमल किशोर आर्य, राजकुमार सोनी, सुरेश आर्य, जिला कांग्रेस महामंत्री राहुल पटेल, सोनु जैसवाल, जनपद सदस्य अशोक कलमे, किसान कांग्रेस प्रदेश सचिव अखलेश पटेल सहित बड़ी संख्या में कांग्रेसी मौजूद रहे।

रामसत्ता में गूंजे भक्ति के स्वर

भौंरा के बीजासेन मेले में उमड़ा जनसैलाब

भौंरा। चैत्र नवरात्र के अवसर पर मां बीजासेन मंदिर प्रांगण में इस बार भक्ति के साथ सामाजिक जागरूकता की भी झलक देखने को मिली। रामसत्ता में हजारों श्रद्धालु पहुंचे और देर रात तक भजनों का आनंद लिया। आयोजन की खासबात यह रही कि इसमें केवल धार्मिक भक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक संदेश भी समाहित थे। सोयत की महावीर भजन मंडली, धापड़ा की नवज्योति भजन मंडली, भिरियाढोल की तारा भजन मंडली और इटारसी पथरोटा की हनुमान भजन मंडली, सीहोर जिले के मछवई की श्रीराम भजन मंडली ने एक से बढक़र एक भजनों की प्रस्तुति दी। इनमें बेटी पढ़ाओ, बेटी बढ़ाओ, जो नशा करेगा, वो जीवन से हारेगा, स्वच्छता से ही सच्चा धर्म संभव है, जैसे सामाजिक संदेशों से जुड़े भजनों ने दर्शकों को प्रभावित किया। आयोजन के समापन अवसर पर विधायक गंगा सज्जन सिंह उईके ने सभी भजन मंडलियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। उन्होंने कहा, रामसत्ता केवल धार्मिक आयोजन नहीं, यह सामाजिक चेतना का मंच है। आज यहां मंच से जो भजन प्रस्तुत किए गए, उन्होंने यह सिद्ध किया कि संस्कृति के माध्यम से भी समाज को दिशा दी जा सकती है। खासकर बेटियों की सुरक्षा, नशा मुक्ति और स्वच्छता जैसे मुद्दों को जिस संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया गया, वह सराहनीय है। ऐसे आयोजन न केवल लोगों को जोड़ते हैं, बल्कि सकारात्मक सोच को भी बढ़ावा देते हैं। मेले में इस वर्ष पहले की अपेक्षा कहीं अधिक भीड़ देखने को मिली। आसपास के गांवों से हजारों श्रद्धालु पहुंचे, जिनमें महिलाओं और युवाओं की संख्या विशेष रही।

नाम परिवर्तन सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा नाम **साक्षी तारण पति सुनील कुमार तारण,** जो कि तिलक वार्ड बैतूलबाजार निवासी हूँ। मेरे जन्म प्रणाम पत्र में नाम सीमा उर्फ साक्षी पिता सुरेश कुमार पाटकर लिखा हुआ है और मेरी 10 वीं कक्षा की अंकसूची में नाम सीमा पिता सुरेश कुमार पाटकर लिखा है। अन्य सभी सरकारी दस्तावेज (आधार कार्ड, वोटर कार्ड) में मेरा नाम साक्षी तारण पति सुनील कुमार तारण दर्ज है, ये दोनों नाम मेरे ही है। भविष्य में मुझे साक्षी तारण पति सुनील कुमार तारण के नाम से जाना जाए।

साक्षी तारण पति सुनील कुमार तारण
निवासी तिलक वार्ड, बैतूलबाजार, जिला बैतूल, पिन कोड नं.- 460004

प्रज्ञा बुद्ध विहार जामठी में बैठक आज

जामठी सहित विभिन्न गांवों के सदस्य होंगे शामिल

बैतूल। प्रज्ञा बुद्ध विहार जामठी में आगामी 14 अप्रैल को मनाई जाने वाली डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर जयंती को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन आज 10 अप्रैल को सुबह 9:30 बजे किया गया है। इस बैठक में अंबेडकर जयंती समारोह की रूपरेखा तैयार की जाएगी और आयोजन को सफल बनाने हेतु विस्तृत कार्य योजना पर विचार किया जाएगा। बैठक में जामठी, उड़दन, टीकरिया, बासपानी, टेमनी, सोनाघाटी, झगडिया, मरामझिरी और लापझिरी जैसे क्षेत्र के विभिन्न ग्रामों के सदस्य शामिल होंगे। प्रज्ञा बुद्ध विहार प्रबंधन समिति के रामदास पाटिल ने जानकारी देते हुए बताया कि यह बैठक अत्यंत आवश्यक है, जिसमें सभी ग्रामों के सामाजिक और सामान्य सदस्यों से उपस्थित होकर अपने विचार एवं सुझाव देने की अपील की गई है। उन्होंने अधिक से अधिक संख्या में गणमान्य नागरिकों से बैठक में शामिल होने का अनुरोध किया है।

कार्यालय बहुउद्देशीय प्राथ. कृषि साख सह. समिति मर्या. भौंरा

क्रमांक/विधि/2025/317 (यू.पी.सी.) दिनांक 19/03/2025

// विशेष आमसभा की सूचना //

समिति के समस्त सदस्यों को सूचित किया जाता है कि संस्था की विशेष आमसभा की बैठक **दिनांक 11/04/25** को समय **12.00 बजे** को स्थान **विजय मंगल भवन भौंरा** में आयोजित की गई है, जिसमें आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है, इस सभा का एजेन्डा निम्नानुसार होगा-

1. मध्यप्रदेश सहकारी सोसाइटी अधिनियम 1960 की धारा 16 के तहत समिति के पुनर्गठन बावत् विचार। 2. उप पंजीयक, सहकारी संस्थाएं, जिला बैतूल के पत्र दिनांक 17-01-2025 के साथ संलग्न पुनर्गठन योजना को स्वीकार करने बावत् विचार। 3. संस्था में पुनर्गठन के अनुरूप उपविधि में संशोधन बावत् विचार। 4. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय की अनुमति से।

निर्धारित समय पर कोरम का अभाव होने पर आधा घंटा पश्चात् उस स्थान एवं दिनांक को विशेष आमसभा आयोजित होगी, जिसमें कोरम की आवश्यकता नहीं होगी।

प्रबंधक, बहुउद्देशीय प्राथमिक कृषि सहकारी समिति मर्यादित, भौंरा, जिला बैतूल (म.प्र.)

महावीर जयंती पर विशेष

श्वेता गोयल

लेखक शिक्षक हैं।

'अहिंसा परमो धर्मः' के महामंत्रदृष्टा भगवान महावीर

प्रतिवर्ष चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी के दिन जैन धर्म के 24वें और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्मोत्सव मनाया जाता है। महावीर जयंती इस वर्ष 10 अप्रैल को मनाई जा रही है। जैन धर्म के जानकारों के अनुसार भगवान महावीर का जन्म 599 ईसा पूर्व बिहार के कुंडलपुर के राजघराने में हुआ था। भगवान महावीर ने जीवन पर्यन्त अपने अमृत वचनों से समस्त मानव जाति को ऐसी अनुपम सौगात दी, जिन पर अमल करके मानव चाहे तो इस धरती को स्वर्ग बना सकता है। 'अहिंसा परमो धर्मः' सिद्धांत के लिए जाने जाते रहे भगवान महावीर का अहिंसा दर्शन आज के समय में सर्वाधिक प्रासंगिक और जरूरी प्रतीत होता है क्योंकि वर्तमान समय में मानव अपने स्वार्थ के वशीभूत कोई भी अनुचित कार्य करने और अपने फायदे के लिए हिंसा के लिए भी तत्पर दिखाई देता है।

महावीर का जन्म होते ही उनके पिता राजा सिद्धार्थ के राज्य, मान-प्रतिष्ठा और धन-धान्य में वृद्धि होने लगी थी, इसीलिए उनका नाम वर्धमान रखा गया था और चूंकि वर्धमान बचपन से ही बड़े साहसी व निर्भीक थे, इसीलिए उनके पराक्रम के कारण आगे चलकर वे महावीर के नाम से प्रसिद्ध हुए। आज के परिवेश में हम जिस प्रकार की समस्याओं और जटिल परिस्थितियों में घिरे हैं, उन सभी का समाधान महावीर के सिद्धांतों और दर्शन में समाहित है। भगवान महावीर कहा करते थे कि जिस जन्म में कोई भी जीव जैसा कर्म करेगा, भविष्य में उसे वैसा ही फल मिलेगा। वह कर्मानुसार ही देव, मनुष्य, नारक व पशु-पक्षी की योनि में भ्रमण करेगा। कर्म स्वयं प्रेरित होकर आत्मा को नहीं लगते बल्कि आत्मा कर्मों को आकृष्ट करती है। वह कहते थे कि रूग्णजनों की सेवा-सुश्रुषा करने का कार्य प्रभु की परिचर्या से भी बढ़कर है। अपने जीवनकाल में उन्होंने ऐसे अनेक उपदेश और अमृत वचन दिए, जिन्हें अपने जीवन तथा आचरण में अमल में लाकर हम अपने मानव जीवन को सार्थक बना सकते हैं।

भगवान महावीर का कहना था कि जो मनुष्य स्वयं प्राणियों की हिंसा करता है या दूसरों से हिंसा करवाता है अथवा हिंसा करने वालों का समर्थन करता है, वह जगत में अपने लिए बैर बढ़ाता है। अहिंसा की तुलना संसार के सबसे महान व्रत से करते हुए उनका कहना था कि संसार के सभी प्राणी बराबर हैं, अतः हिंसा को त्यागिए और 'जीओ व जीने दो' का सिद्धांत अपनाइए। वे कहते थे कि संसार में प्रत्येक जीव अवध्य है, अतः आवश्यक बताकर की जाने वाली हिंसा भी हिंसा ही है और वह जीवन की कमजोरी है। उनके अनुसार छोटे-बड़े किसी भी प्राणी की हिंसा न करना, बिना दी गई वस्तु स्वयं न लेना, विश्वासघाती असत्य न बोलना, यह आत्मा निग्रह सदपुरूषों का धर्म है। जो लोग कष्ट में धैर्य को स्थिर नहीं रख पाते, वे अहिंसा की साधना नहीं कर सकते। अहिंसक व्यक्ति तो अपने से शत्रुता रखने वालों को भी अपना प्रिय मानता है। उनका कहना था कि संसार में रहने वाले चल और स्थावर जीवों पर मन, वचन एवं शरीर से किसी भी तरह के दण्ड का प्रयोग नहीं करना चाहिए। भगवान महावीर के अनुसार किसी भी प्राणी की हिंसा न करना ही ज्ञानी होने का एकमात्र सार है और यही अहिंसा का विज्ञान है। जिस प्रकार अणु से छोटी कोई वस्तु नहीं और आकाश से बड़ा कोई पदार्थ नहीं, उसी प्रकार अहिंसा के समान संसार में कोई महान् व्रत नहीं। महावीर के शब्दों में कहें तो ज्ञानी होने का यही एक सार है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे और यही अहिंसा का विज्ञान है।

धर्म को लेकर भगवान महावीर का मत था कि धर्म उत्कृष्ट मंगल है और अहिंसा, तप व संयम उसके प्रमुख लक्षण हैं। जिन व्यक्तियों का मन सदैव धर्म में रहता है, उन्हें देव भी नमस्कार करते हैं। अपने प्रवचनों में वह कहते थे कि ब्राह्मण कुल में पैदा होने के बाद यदि कर्म श्रेष्ठ हैं तो वही व्यक्ति ब्राह्मण है किन्तु ब्राह्मण कुल में जन्म लेने के बाद भी यदि वह हिंसाजन्य कार्य करता है तो वह ब्राह्मण नहीं है जबकि नीच कुल में पैदा होने वाला व्यक्ति अगर सुआचरण, सुविचार एवं सुकृत्य करता है तो वह ब्राह्मण है। आत्मा के बारे में भगवान महावीर का तर्क था कि आत्मा शरीर से भिन्न है, आत्मा चेतन है, आत्मा नित्य है, आत्मा अविनाशी है। उनका कहना था कि मानव और पशुओं के समान पेड़-पौधों, अग्नि, वायु में भी आत्मा वास करती है और पेड़ पौधों में भी मनुष्य के समान दुख अनुभव करने की शक्ति होती है। महावीर कहते थे कि क्रोध प्रेम का नाश करता है, मान विषय का, माया मित्रता का नाश करती है और लालच सभी गुणों का। जो व्यक्ति अपना कल्याण चाहता है, उसे पाप को बढ़ाने वाले इन चारों दोषों क्रोध, मान, माया और लालच का त्याग कर देना चाहिए।

जवाहर चौक मनोकामेश्वर हनुमान मंदिर में हुआ सुंदरकांड पाठ

भोपाल (नप्र)। मंगलवार रात्रि जवाहर चौक मनोकामेश्वर हनुमान मंदिर मे आयोजित सुन्दरकाण्ड पाठ का आयोजन किया गया। इसमें में दक्षिण पश्चिम विधानसभा के विधायक भगवानदास सबनानी ने शामिल होकर श्री संकटमोचन हनुमान जी के शुभ दर्शन का पुण्य लाभ लेते हुए श्रीराम जी की आरती में उपस्थित होकर अपनी हाजिरी लगाई। यह कार्यक्रम संदीप तोमर द्वारा आयोजित किया गया।

मांडू पहुंचे सीएम, प्रसिद्ध चतुर्भुज श्रीराम मंदिर पहुंचकर भगवान श्रीराम की प्रतिमा के दर्शन किए

धार। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का मांडू पहुँचने पर श जनप्रतिनिधियों द्वारा स्वागत किया गया। मांडू हैलीपेड पर केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर, प्रदेश के पूर्व मंत्री राज्यवर्धन सिंह दतीगांव, विधायक कालूसिंह ठाकुर, विधायक नीना वर्मा सहित अन्य जनप्रतिनिधियों ने स्वागत

किया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को मांडू की पहचान प्रसिद्ध ऐतिहासिक खुरासानी इमली भेंट की गई। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने दीनदयाल अंत्योदय योजना शहरी आजीविका मिशन के तहत स्थानीय महिलाओं को दिए जा रहे बाग प्रिंट प्रशिक्षण को देखा। उन्होंने कला के संरक्षण में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका को सराहा। उन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त कर रही समस्त महिलाओं को शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने माण्डू के प्रसिद्ध चतुर्भुज श्रीराम मंदिर पहुंचकर भगवान श्रीराम की प्रतिमा के भी दर्शन किए। उन्होंने यहाँ मंदिर के महाराज एवं अन्य संतों से भेंट की और आशीर्वाद प्राप्त किया।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मैं सौभाग्यशाली हूं कि इस मंदिर में दर्शन का अवसर मिला। यहां भगवान श्रीराम की अद्भुत और अद्वितीय मूर्ति है। यह ऐतिहासिक भी है। भगवान राम जी चतुर्भुज रूप में है। इसमें भगवान श्री राम के साथ विष्णु भगवान की झलक भी दिखाई देती है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में प्रदेश विरासत से विकास की ओर बढ़ रहा है। मध्य प्रदेश में पर्यटन केन्द्रों के विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

जन अभियान परिषद का साफ-सफाई संदेश, ग्रामीणों की सुनी समस्याएं

सुबह सवेरे सोहागपुर। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के तत्वावधान में जल संवर्धन कार्यक्रम के अंतर्गत ग्राम चीचली में ग्रामीणों ने जल संवर्धन एवं श्रमदान कार्यक्रम के उत्साह से अपनी सहभागिता निभाई। मित्र संघ, ज्ञान

सरोवर वेलफेयर सोसायटी के प्रमुख साहिल तिलोटिया एवं कमल किरार आदि के समक्ष ग्रामीणों ने अपनी-अपनी समस्या को बताया इसी क्रम में श्रमदान कार्यक्रम में भी ग्रामीणों ने उत्साह से भाग लिया। जल संगोष्ठी कार्यक्रम में ग्राम पंचायत के पूर्व सरपंच धानुक, सेवानिवृत हरकिशन यादव पीएचई विभाग एवं विकासखंड समन्वयक किशोर कड़ोले की अध्यक्षता आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में जल संरक्षण पर उपस्थित जनों ने अपने-अपने विचार रखे। इसी संगोष्ठी में व्यर्थ पानी की बर्बादी बचाने का संकल्प लिया गया। इसके साथ ही जल व्यर्थ बहाने वालों ग्रामीणों को समझाया जाएगा। यहां पर ग्रामीणों ने ग्राम में मुक्तिधाम की उचित व्यवस्था नहीं होने की बात कहीं। उन्होंने बताया कि जिस स्थान पर शवों का अंतिम संस्कार किया जाता है। उस स्थान पर 5 से 7 साथ लोग बड़ी मुश्किल खड़े हो पाते हैं। इस कारण हमारे ग्राम का मुक्तिधाम व्यवस्थित हो। इस बात को विकास खंड समन्वयक तथा दोनों संस्था प्रमुखों ने उनकी समस्या वरिष्ठ अधिकारियों तक पहुंचाने का अश्वासन दिया। इस अवसर पर हरदेव, गंगाराम, खेमचंद, मोहनसिंह, पहलाथ यादव पूर्व सरपंच चीचली, लालजीराम यादव, सूरज यादव, सचिन पटेल आदि उपस्थित थे।

आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश बनाने की पहल में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं की है प्रभावी भूमिका : सीएम

कुक्षी में स्व सहायता समूह सम्मेलन सह पोषण पखवाड़ा कार्यक्रम में हुए शामिल...

धार। स्व हायता समूह महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाने का एक सशक्त माध्यम है। जिससे न केवल महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिल रहा है बल्कि महिलाएं समृद्धि की ओर बढ़ रही है। आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश बनाने की पहल में स्व-सहायता समूह की महिलाओं की प्रमुख भूमिका है । सशक्त नारी ही समृद्ध प्रदेश का आधार हैद्य मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कुक्षी में आयोजित स्व सहायता समूह सम्मेलन सह पोषण पखवाड़ा कार्यक्रम के दौरान कहीं।प्रदेश में महिला सशक्तिकरण के प्रयासों को बताते हुए मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कहा प्रदेश की बहनों को निकाय चुनाव में 50ब्आरक्षण दिया जा रहा है वही 2029 तक लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों में महिलाओं को 33ब्र आरक्षण हेतु भी प्रयास किया जा रहा है।जमीन या मकान की रजिस्ट्री घर की महिला के नाम पर करने पर पंजीयन शुल्क में छूट दी जा रही है। लाड़ली बहना योजना ने घर में महिलाओ को आर्थिक रूप से सशक्त किया है। महिला स्वयं सहायता समूह की बहनों ने हर क्षेत्र में अपनी समर्थकता को सिद्ध किया है।

मुख्यमंत्री ने किया पोषण प्रदर्शनी का अवलोकन

मुख्यमंत्री डॉ यादव ने स्व सहायता समूह की सदस्यों द्वारा पोषण पखवाड़े के तहत श्री अन्न से बनी खाद्य पदार्थों की प्रदर्शनी का अवलोकन कर प्रशंसा की।

स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने साझा किये अपने अनुभव

ग्राम पिपलिया सरपंच अनीता लोकेश पांचाल ने मंच से जल गंगा संवर्धन के तहत किए गए बावड़ी जीणोद्धार कार्य का अनुभव साझा कर बताया कि पहले बावड़ी बहुत गंदी थी जिसे जनसहयोग एवं जन भागीदारी के माध्यम से पानी पीने योग्य बनाया गया है। भविष्य में पंचायत को मॉडल पंचायत के रूप में भी विकसित किया जाएगा।

ग्राम झड़दा निवासी सुखली बाई ने स्वसहायता समूह के अनुभव को साझा करते हुए बताया कि पूर्व में उनके घर की स्थिति खराब थी लेकिन श्री सांई स्वसहायता समूह से जुड़ने के बाद ऋण प्राप्त कर उन्होंने अपने बच्चों को पढ़ाया और स्वयं का भी एक छोटा व्यवसाय शुरू किया जिसकी परिणाम स्वरूप अब वह लेखा जोखा का कार्य भी सीख गई हैं और उनके बच्चे भी शिक्षित होकर बड़े पदों पर कार्यरत है।

सावित्री ठाकुर राज्य मंत्री ,महिला एवं बाल विकास विभाग, भारत सरकार ने ने बताया कि बालअवस्था में बच्चों को भरपूर पोषण मिले तो वह सशक्त बनेंगे और राष्ट्र को विकसित राष्ट्र बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने में समर्थ होंगे। अत: हमारा दायित्व है कि हम भारत के भविष्य को पोषण दें। वर्तमान सरकार महिलाओं एवं बच्चों के विकास के लिए हर संभव प्रयास कर रही है

महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा 8 से 22 अप्रैल तक चलाए जा रहे सातवें पोषण पखवाड़ा कार्यक्रम को लेकर संवाद एवं समीक्षा की। इस वर्ष के पोषण पखवाड़े में मुख्य रूप से चार विषयों पर जोर दिया जाएगा। ये विषय हैं जीवन के पहले एक हजार दिनों पर ध्यान केंद्रित करना, पोषण ट्रैकर के लाभार्थी मॉड्यूल को लोकप्रिय बनाना, कुपोषण का प्रबंधन और बच्चों में मोटापे को दूर करने के लिए स्वस्थ जीवन शैली।

बच्चें के जीवन के प्रथम हजार दिवस बाल विकास के लिए महत्वपूर्ण होते हैं अत: आंगनवाड़ी कार्यकर्ता कार्यकर्ताओं का यह दायित्व होता है कि केंद्र पर आने वाले बच्चों का समय-समय पर नियमित रूप से शारीरिक परीक्षण मापदंड एवं टीकाकरण करते रहे साथ ही कुपोषित बच्चों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम में सावित्री ठाकुर, राज्य मंत्री महिला एवं बाल विकास विभाग भारत सरकार, श्री चंचल पाटीदार जिला अध्यक्ष, रंजना बघेल पूर्व कैबिनेट मंत्री, पूर्व सांसद छतर सिंह दरबार, रेलम चौहान , जयदीप पटेल सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण, संभाग आयुक्त दीपक सिहं , कलेक्टर प्रियंक मिश्रा, एसपी मनोज कुमार सिहं , एसडीएम कुक्षी विशाल धाकड़ सहित अन्य अधिकारीगण भी उपस्थित रहे।

देवास महापौर को न्यायालय ने किया तलब , कांग्रेस की पराजित प्रत्याशी की याचिका पर सुनवाई

देवास । तकरीबन ढाई बरस पहले भाजपा की महापौर चुनी गई श्रीमती गीता दुर्गेश अग्रवाल आज जिला न्यायालय में हाजिर हुई । वे कांग्रेस की हारी हुई प्रत्याशी श्रीमती विनोदीनि रमेश व्यास द्वारा श्रीमती अग्रवाल के मार्कशीट को लेकर दायर एक याचिका की सुनवाई के लिए न्यायालय में उपस्थित हुई थी ।

उल्लेखनीय है कि देवास नगर निगम में महापौर के लिए हुए चुनावों में भाजपा की श्रीमती गीता दुर्गेश अग्रवाल कांग्रेस प्रत्याशी श्रीमती विनोदीनि रमेश व्यास को पराजित कर तकरीबन 44 हजार मतों से विजयी हुई थी। इसके बाद कांग्रेस की हारी हुई प्रत्याशी श्रीमती विनोदीनि रमेश व्यास द्वारा श्रीमती अग्रवाल के द्वारा चुनावों में दाखिल उनकी शिक्षा के दस्तावेजों को लेकर एक याचिका दाखिल की गई थी जिसपर न्यायालय में सुनवाई होनी थी मगरजानकारी के अनुसार कई बार के बुलावे पर भी वे न्यायालय में उपस्थित नहीँ हुई थी और अंतत: आज वे कोर्ट में उपस्थित हुई और माननीय न्यायालय के समक्ष अपना पक्ष रखा। इस बीच महापौर श्रीमती गीता दुर्गेश अग्रवाल मीडिया के सवालों से बचती नजर आई और किसी सवाल का जबाव नहीँ दिया। माननीय न्यायालय द्वारा इस मामले की कार्यवाही और निर्णय की आमजन द्वारा प्रतिक्षा की जा रही है।

तोहिद का चयन मध्यप्रदेश यूथ बास्केटबॉल टीम में

देवास। 09 से 15 अप्रैल 2025 तक पांडेचेरी में 40 वी राष्ट्रीय यूथ बालक-बालिका बास्केटबॉल चौंपियनशिप संपन्न होगी। देवास जिला बास्केटबॉल संघ के सचिव संजय पाटिल ने बताया कि उक्त स्पर्धा में मध्यप्रदेश टीम के लिए बास्केटबॉल काम्प्लेक्स इंदौर में प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया था, जिसमे प्रदेशभर के 30 खिलाड़ी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे, शिविर में उत्कृष्ट खिलाड़ियों का चयन कर म प्र की टीम की घोषणा विक्रम अवार्डी अंतरराष्ट्रीय बास्केटबॉल कोच व म प्र बास्केटबॉल संघ के अध्यक्ष कुलविंदरसिंह गिल ने की। जिसमे देवास बास्केटबॉल संघ के खिलाड़ी तोहिद शेख मप्र टीम का प्रतिनिधित्व करेंगें एवं देवास खेल एवं युवा कल्याण विभाग देवास में पदस्थ एन. आई. एस कोच धर्मेन्द्र सिंह ठाकुर है को मध्यप्रदेश की राष्ट्रीय टीम में बालक वर्ग का मुख्य कोच नियुक्त किया गया है। खिलाड़ी एवं कोच के चयन पर जिला बास्केटबॉल संघ देवास के अध्यक्ष मनीष पनवार, रईस खान,हेमेंद्र निगम(काकू), शक्तिसिंह गौड़, संतोषसिंह गौड़,भारत राजपूत, हेमंत जोशी संग्राम साठे, चंद्रभान शुक्ला,वीरेन्द्र सिंह ठाकुर, निशार खान,आकाश अवस्थी,जावेद पठान,आदि ने शुभकामनाएं प्रेषित की।

समेरिटंस आईसीएसई में दंत परीक्षण शिविर

नर्मदापुरम। समेरिटंस आईसीएसई स्कूल पिपरिया में गत दिवस दंत परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया।प्राचार्य डॉ कल्पना शर्मा ने बताया कि इसमें डा महेश चौधरी और डा निधि सुरजन ने शिक्षकों और बच्चों के दांतों का परीक्षण किया। उन्होंने बताया कि दांतों को स्वस्थ रखने के लिए नियमित सफाई करनी चाहिए। अधिक ठंडे और अधिक गर्म खाद्य पदार्थ नहीं खाने चाहिए। उन्होंने दांतों की देखभाल करने के तरीके भी बताए। डॉ. चौधरी एवं डॉ. सुरजन ने बच्चों को उपहार प्रदान किए।

बर्फ फैक्ट्री में अमोनिया गैस का रिसाव, जावरा सीएसपी की आंखों में आंसू-जलन, माता-पिता को अस्पताल भिजवाया

बिना लाइसेंस चल रहा था प्लांट

रतलाम (नप्र)। रतलाम के जावरा में मंगलवार रात आंटिया चौराहे पर स्थित पोरवाल आइस फैक्ट्री में एक टैंक से अमोनिया गैस लीकेज होने से हड़कंप मच गया। फैक्ट्री में काम कर रहे श्रमिकों को जब इस बात की जानकारी लगी तो वह डरकर भाग गए।

फैक्ट्री के पीछे ही पुलिस लाइन है। जहां जावरा सीएसपी दुर्गेश आर्मो टहल रहे थे, तभी उन्हें इस बारे में पता चला। उनकी आंखों में आंसू आने लगे और जलन होने लगी। सीएसपी के माता-पिता और भाई पर भी इसका

असर हुआ। पुलिस व प्रशासन के आला अधिकारियों को सूचना दी गई। जिसके बाद आसपास के इलाकों को खाली कराया गया। इधर, बुधवार को उज्जैन से प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की टीम जावरा पहुंची। जांच में फैक्ट्री मालिक के पास न तो फैक्ट्री संचालन से जुड़े कोई वैध दस्तावेज मिले और न ही प्रदूषण बोर्ड का लाइसेंस पाया गया।

टैंक पर पानी का छिड़काव किया-गैस लीकेज के समय एसपी अमित कुमार जावरा में दौरे पर थे। जानकारी मिलते ही वह भी मौके पर पहुंचे। सूचना मिलते ही जावरा एसडीएम त्रिलोचन गौड़, एसडीओपी संदीप मालवीय, थाना प्रभारी जितेंद्र जादौन मौके पर पहुंचे। फायर ब्रिगेड बुलाई गई। फैक्ट्री में स्थित टैंक पर पानी का छिड़काव किया गया। बताया जा रहा है कि टैंक के वॉल में लीकेज होने से अमोनिया गैस का रिसाव हुआ। समय रहते मालूम पड़ने पर बड़ी घटना होने से बच गई। रात 12.30 बजे तक पुलिस ने फैक्ट्री संचालक और मजदूरों से पूछताछ की। इस दौरान अधिकारी मौके पर मास्क लगाकर मौजूद रहे।

पुलिस टीम ने तत्काल अलर्ट किया-एसपी अमित कुमार ने बताया की वॉल लीकेज के कारण अमोनिया गैस लीक हुई है। जावरा सीएसपी, एसडीओपी व प्रशासन की टीम ने तत्काल मौके पर पहुंच कर स्थिति को कंट्रोल किया। उन्होंने बताया-गैस लीक वॉल को बंद कर दिया है। पानी का छिड़काव किया गया है। कुछ व्यक्ति इफेक्टेड थे, उन्हें मेडिकल ट्रीटमेंट दिया गया है।

जावरा सीएसपी के माता-पिता पर असर-जावरा सीएसपी दुर्गेश आर्मो ने बताया उनका घर फैक्ट्री के बगल में एक बाउंड्री वॉल छोड़कर पुलिस लाइन में है। वह घर के बाहर टहल रहे थे। उन्हें लगा कि कुछ जल रहा है। फिर लगा किसी ने आग लगाई होगी।छोटे भाई से पूछा तो उसने बदबू आने की बात कही। भाई ने भी कहा कुछ जल रहा होगा। इसके बाद वह टहलते टहलते बाहर रोड की तरफ आ गए। इस दौरान उन्हें भी आंखों में आंसू और जलन जैसा महसूस होने लगा।कुछ ही देर में छोटे भाई का फोन आया। उसने कहा- मम्मी-पापा को आंखों में जलन हो रही है। तब समझ आया कि यह कोई गैस है, जो लीक हुई है। गैस का असर आसपास के क्षेत्र में होने लगा। घर पहुंच कर मम्मी-पापा को अस्पताल भिजवाया।

पुलिस लाइन को खाली कराया गया-सीएसपी को गैस लीकेज के आभास होने पर सबसे पहले उन्होंने पहले पुलिस लाइन में 28 से 29 परिवार रहता है। पूरा खाली कराकर अन्य जगह भिजवाया। पुलिस लाइन में सरकारी गाड़ी से एनाउंसमेंट करते हुए खारीवाल मोहल्ला व आसपास के क्षेत्रों में गैस लीकेज होने की सूचना देकर सतर्क रहने और दूसरी जगह जाने को कहा।

गेहूं एवं मूंग की बजाय मक्का के प्रोडक्शन को बढ़ावा दें कृषि अधिकारी : संभागायुक्त

नर्मदापुरम। संभागायुक्त कृष्ण गोपाल तिवारी ने निर्देश दिए की संभाग के हरदा एवं नर्मदापुरम जिले के कृषि विभाग के अधिकारी अपने अपने जिले में गेहूं और मूंग का रकबा कम करके मक्के का रकबा बढ़ाएं।

मक्का के प्रोडक्शन को बढ़ावा दें। मूंग एवं गेहूं की फसल के कारण नहर के मेंटेनेंस का कार्य नहीं हो पाता है। क्योंकि 2 महीने का समय नहरों की मेंटेनेंस पर लगता है और इस अवधि में मूंग एवं गेहूं की फसल लगी होती है जिससे नहर मेंटेनेंस नहीं हो पाती, मेंटेनेंस के अभाव में नहर क्षतिग्रस्त एवं लीकेज होती है। इससे व्यर्थ पानी भी बहता है। संभागायुक्त ने कहा कि बैतूल जिला भी मक्के के प्रोडक्शन को अधिक बढ़ावा दें। उन्होंने निर्देश दिए की आगामी वर्ष में नर्मदापुरम जिले में 50 हजार हेक्टेयर एवं हरदा में 40 हजार हेक्टेयर में मूंग एवं गेहूं की फसल का रकबा कम करते हुए मक्का का रकबा बढ़ाकर मक्का का प्रोडक्शन लिया जाए। उन्होंने बैतूल जिले में भी और अतिरिक्त रूप से 20 हजार हैक्टेयर मैं मक्का का रकबा बढ़ाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मूंग की फसल में किसान नरवाई हटाने के लिए सुपर सीडर एवं हैप्पी सीडर का उपयोग न कर बड़ी मात्रा में सफाया का उपयोग कर रहे हैं एवं नरवाई भी जला रहे हैं। नरवाई जलाने से एवं सफाया का उपयोग करने से मिट्टी के पोषक तत्व समाप्त हो रहे है एवं पर्यावरण भी दूषित हो रहा है। कमिशनर ने कहा कि किसानों को मक्का के उत्पादन के लिए प्रोत्साहित किया जाए यदि किसान मक्का लगाएंगे तो उन्हें कमांड एरिया तक पानी दिया जाएगा। कमिश्नर ने कहा कि कृषि अधिकारी कार्यशाला एवं खेत पाठशाला आयोजित कर किसानों को मक्का की फसल लेने के लिए प्रोत्साहित करें।संभागायुक्त श्री तिवारी ने कृषि विभाग के सभी अधिकारियों को निर्देश दिए की वह मृदा परीक्षण लैब को और अधिक सक्रिय करें अधिक से अधिक संख्या में मिट्टी के नमूने लैब में परीक्षण के लिए लाए। उन्होंने अमानक खाद बीज विक्रेताओं पर हो रही अब तक की कार्रवाई को नाकाफी बताया और कहां की विभाग और सक्रिय होकर अमानक खाद बीज के विक्रेताओं पर कार्रवाई करना सुनिश्चित करें। उन्होंने निर्देश दिए की कृषि विभाग के अधिकारी रूटिंन कार्य के साथ-साथ आगामी फसल के लिए खाद एवं बीज की उपलब्धता भी सुनिश्चित करें। बैठक में संयुक्त आयुक्त विकास जीसी दोहर, संयुक्त संचालक कृषि बी एल बिलैया, उपायुक्त सहकारिता, राकेश पांडे सहित सभी संबंधित संभागीय अधिकारी गण उपस्थित रहे।

पहले मंगलवार को जन सुनवाई होगी शोभापुर में

सुबह सवेरे सोहागपुर। कलेक्टर सोनिया मीना ने नर्मदापुरम जिले के मुख्यालयों में रोस्टर के अनुसार एसडीएम को निर्देश दिए हैं। इसी तारतम्य में सोहागपुर अनुविभागीय अधिकारी अनिल जैन ने सोहागपुर ब्लाक के समस्त अधिकारियों को पत्र क्रमांक 456के माध्यम से सूचित किया है।कि आगामी मंगलवार को रोस्टर के अनुसार जनसुनवाई को किया जाना सुनिश्चित किया है। जिसमें माह के पहले मंगलवार को ग्राम शोभापुर में, दूसरे मंगलवार को सोहागपुर जनपद पंचायत सभागार में, तीसरे मंगलवार को ग्राम सेमरी हरचंद में, चोथे मंगलवार को पुन: जनपद पंचायत सभागार सोहागपुर में जनसुनवाई की जाएगी। उल्लेखनीय है कि इस रोस्टर से जनमानस के व्यय एवं समय की बचत होगी।

राइट क्लिक

'हिंदू ग्राम' से 'हिंदू राष्ट्र' तक की उड़ान में गुंथी सवालों की डोर

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

म प्र के छतरपुर जिले के गढ़ा ग्राम स्थित बागेश्वर धाम के स्वयंभू पीठाधीश पं.धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री ने अपने इलाके में 'पहला हिंदू ग्राम' बसाने का ऐलान कर नई बहस को हवा दे दी है। 29 वर्षीय संत बागेश्वर धाम खुद को कट्टर हिंदू के रूप में प्रस्तुत करते रहे हैं और पिछले माह उनके बागेश्वर धाम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उन्हें अपना 'छोटा भाई' बताकर उनका का राजनीतिक सिंहासन भी ऊंचा कर दिया है। बाबा बागेश्वर जनरेशन जेड के हिंदू बाबा हैं, इसलिए उनके विचार, प्रस्तुति, अभिव्यक्ति भी वर्सटाइल है। वो नई प्रौद्योगिकी से भी वाकिफ हैं और क्रिकेट भी खेलते हैं। उनका दावा है कि उन्हें दिव्य सिद्धी प्राप्त है। वो अपने आराध्य बालाजी (हनुमानजी) की कथा सुनाते हैं। साथ में समकालीन राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक मुद्दों पर भी विवादित टिप्पणियां कर हेडलाइन भी 'मैनेज' करते रहते हैं। बाबा अपना दरबार लगाते हैं, जहां पीड़ितों की अर्जी पर सुनवाई होती है। कहा जाता है कि बाबा पर्ची के आधार पर लोगों का भूत और भविष्य बता देते हैं। बाबा बागेश्वर के अनुयायियों की संख्या लाखों में हैं, जिनमें ज्यादातर हिंदू ही हैं। बाबा की यही फैन फालोइंग राजनेताओं के लिए पॉलिटिकल मटेरियल भी है, लेकिन बाबा सीधे तौर पर किसी पार्टी या संगठन में नहीं हैं।

बहुतों का मानना है कि बाबा में दिव्य शक्ति हो न हो, लेकिन उनका सार्वजनिक आचरण, अभिव्यक्ति और कार्यशैली ऐसी है, जो हिंदुत्ववादियों के अनुकूल है। कई बार तो ऐसा लगता है कि उन्होंने भाजपा की अघोषित फ्रेंचाइजी ले रखी है। वे भारत को कट्टर हिंदू राष्ट्र बनाने और सभी हिंदुओं को एक होने के साथ साथ जात-पात मिटाने जैसी प्रगतिशील बात भी करते हैं। बहरहाल बाबा बागेश्वर द्वारा अपने धाम के नजदीक एक हिंदू ग्राम बसाने के ऐलान का कई साधु संतों ने स्वागत किया है। समझा जा रहा है कि यही हिंदू ग्राम भविष्य के हिंदू राष्ट्र की आधारशिला होगा। यहां एक हजार हिंदुओं को बसाने का प्लान है। बाबा ने इसका भूमिपूजन भी किया। यह हिंदू ग्राम दो साल में बनकर तैयार होगा। इस बारे में बाबा का तर्क बहुत सीधा है। कई हिंदू ग्रामों से मिलकर हिंदू जिले बनेंगे। हिंदू जिलों से हिंदू प्रांत और हिंदू प्रांतों का देश हिंदू राष्ट्र होगा। अगर ऐसा होता है तो इससे अच्छी बात क्या हो सकती है कि सारा देश हिंदू और वो भी सनातनी हिंदू बन जाए। बाकी के लोग, जिनमें गैर सनातनी हिंदू और गैर हिंदू देश में रहे ही नहीं। बाबा की यह कल्पना आरएसएस की सामाजिक समरसता वाले हिंदू राष्ट्र की कल्पना से अलग है। दूसरे, भारत जैसे बहुसांस्कृतिक, बहुभाषी और बहुजातीय देश में क्या सचमुच कोई ठेठ हिंदू ग्राम, जिला या राष्ट्र व्यावहारिक रूप से संभव है? क्योंकि ऐसा देश शुद्ध देसी घी की तरह भारत तो क्या, पाकिस्तान और सऊदी अरब तक नहीं बन सका है, वो भी अपने यहां से सभी गैर सुन्नी और गैर मुसलमानों को भी बेदखल नहीं कर पाए हैं।

जहां तक बाबा बागेश्वर का इसके पहले हिंदू ग्राम होने का दावा है तो सही इसलिए नहीं है, क्योंकि गुजरात यहां भी बाजी मार चुका है। क्योंकि केन्द्र शासित प्रदेश दीव से गुजरात के ऊना के बीच कई गांवों में बोर्ड लगे हैं कि 'हिंदू राष्ट्रनुं गांव मा आपनुं हार्दिक स्वागत करे छे।'' (हिंदू राष्ट्र के गांव में आपका हार्दिक स्वागत है)। ये बोर्ड इन गावों के युवाओं ने लगाएं हैं। ऐसे ही एक गांव देलवाड़ा के लोगों का कहना है कि भारत हिंदू राष्ट्र बने, न बने, उन्होंने तो अपने गांव को हिंदू गांव घोषित कर दिया है। हालांकि इस गांव में एक चौथाई आबादी मुसलमानों की भी है। मुसलमानों का कहना है कि हिंदू राष्ट्र के बोर्ड से उन्हे कोई परेशानी नहीं है। वो यहीं रह रहे हैं आगे भी रहेंगे। देलवाड़ा के पास समुद्र किनारे एक और गांव ओलवान है। यहां भी 'हिंदू राष्ट्र' का बोर्ड लगा है। यहां कोई मुसलमान नहीं रहता। अलबत्ता यहां के हिंदू ग्रामीणों का विश्वास है कि भारत अगले पांच सालों में हिंदू राष्ट्र बन जाएगा। गांव में हजरत पीर का कोठा (दरगाह) भी है, जिस पर हिंदू भी मन्नत मानते हैं। ऐसे में गांव को हिंदू राष्ट्र लिखने का क्या मतलब है? इस सवाल का जवाब मिलता है कि हमे हिंदू होने पर गर्व है, इसलिए। ऐसा ही एक और गांव है पालडी। इस पर भी हिंदू राष्ट्र का बोर्ड का लगा है। यहां सभी हिंदू ही रहते हैं। वैसे बाबा का जो प्लान है, उसमें जमीन ही सनातनी हिंदुओं को उपलब्ध कराई जाएगी। मकान हिंदुओं को अपने खर्चे से बनाना होगा। हिंदू धर्म की रक्षा के लिए इतनी कीमत तो चुकानी ही होगी। यह हिंदू ग्राम फ्लैट सिस्टम वाला होगा। जिसमें ग्राउंड फ्लोर 17 लाख, फर्स्ट फ्लोर 16 लाख तथा सेकंड फ्लोर 15 लाख रू. में मिलेगा। 5 लाख रू. एडवांस देने होंगे। पहले चरण में 50 मकान देने की बात है। मकान निर्माण बागेश्वर धाम जनसेवा समिति कराएगी। हालांकि इससे यह संदेश जाने का खतरा भी है कि यह यह हिंदू ग्राम विकास है या प्रोफेशनल कॉलोनाइजिंग इस संदर्भ में बाबा बागेश्वर का कहना है कि यह मकान बेचने या खरीदने के लिए नहीं होंगे। यानी इन्हें 'इन्वेस्टमेंट' के उद्देश्य से नहीं खरीदा जा सकता।

कुछ लोगों का मानना है कि अगर बाबा बागेश्वर हिंदू और सनातन धर्म के लिए इतना कुछ कर रहे हैं तो उनके विरोधियों के पेट में दर्द क्यों होना चाहिए? बात सही भी है। अगर कुछ बस्तियों, नगरों, जिलों, प्रांतों के नाम हिंदू होने से देश हिंदू राष्ट्र बन सके तो हिंदू राष्ट्र बनाने का इससे किफायती तरीका दूसरा हो नहीं सकता। वैसे बाबा ने यह भी कहा है कि इस हिंदू ग्राम में सनातनी और वैदिक धर्म को मानने वाले हिंदू ही रह सकेंगे। मुमकिन है आगे चलकर इस पर भी विवाद हो कि गैर सनातनी हिंदू जैसे कि आर्य समाजी, कबीरपंथी, ब्रह्म समाजी, राधास्वामी सत्संग, रविदासी पंथी आदि भी हिंदू ग्राम में रहना चाहें तो क्या उन्हें इजाजत मिलेगी?

वैसे दुनिया में धर्म के आधार पर किसी कॉलोनी, नगर, प्रांत और देश का नामकरण अपवाद स्वरूप ही हुआ है। अगर शहर की बात करें तो दुनिया में शायद दो ही उदाहरण मिलेंगे। एक था 'इस्लाम नगर', जो भोपाल रियासत की पुरानी राजधानी था और अब एक खंडहर है। दूसरा है इस्लामाबाद, जिसे इस्लाम के नाम पर ही बसाया गया और जिस देश पाकिस्तान की वह राजधानी है, उस का आज क्या हाल है, सबको पता है। और तो और जिन स्थानों पर किसी विशिष्ट धर्म वालों को ही रहने या प्रवेश की इजाजत है, उनके नाम भी सम्बंधित धर्म के नाम पर नहीं हैं। मसलन मुसलमानों का सबसे पवित्र स्थल मक्का में गैर मुसलमानों का प्रवेश पूरी तरह वर्जित है, लेकिन उसका नामकरण इस्लाम पर नहीं है। इसी तरह कैथोलिक ईसाइयों के सबसे पावन शहर 'वेटिकन? सिटी' में गैर कैथोलिको को रहने की अनुमति नहीं है। बावजूद इसके इस शहर का नाम किसी ने ईसा या क्रिश्चियन सिटी नहीं रखा। सिखों की पवित्र नगरी अमृतसर का नाम भी सिख नगर नहीं है। क्योंकि धर्म के आधार पर नाम रखने से उस धर्म की परंपराओ, दर्शन और कर्मकांडों का शास्त्रोक्त पालन हो, यह जरूरी नहीं है। अगर ऐसा नहीं होता और वह व्यावहारिक रूप से संभव होता भी नहीं है तो उस धर्म की पवित्रता पर ही प्रश्नचिन्ह लगने लगता है, जोकि सही नहीं है।

रहा सवाल बाबा की राजनीतिक उपयोगिता का तो बाबा के प्रभाव की असली सियासी टेस्टिंग बिहार चुनाव में होनी है। बाबा को वहां धुर हिंदू मुस्लिम ध्रुवीकरण के काम में लगाया गया है। घोर जातिवाद से ग्रस्त बिहार में अगर वहां भाजपा अपने दम पर सरकार बनाने में कामयाब रही तो बाबा का सियासी ग्राफ भी ऊपर जाएगा। वो मप्र के 'योगी आदित्यनाथ' भी हो सकते हैं। लेकिन नतीजा कुछ और आया तो बाबा की हिंदू राष्ट्र की उड़ान बागेश्वर के हिंदू ग्राम तक भी सिमट सकती है। यूं बाबा बागेश्वर की इस 'हिंदू ग्राम' की घोषणा से सियासी घमासान भी शुरू हो गया है। भाजपा विधायक रामेश्वर शर्मा ने बाबा की योजना का दिल खोलकर स्वागत किया है तो मप्र कांग्रेस प्रवक्ता हाफिज अब्बास ने सवाल किया कि अगर कल को मुसलमान भी अलग 'मुस्लिम ग्राम' बनाने की इजाजत मांगेंगे तो क्या सरकार देगी? कल को संविधान के 'सर्व धर्म समभाव' के आधारभूत सिद्धांत के आधार पर हर धर्मावलंबी अपने धर्मों के हिसाब से अलग शहर बसाने लगेंगे तो फिर हिंदू राष्ट्र का क्या होगा? और अगर सरकार बाबा बागेश्वर जैसे लोगों को ही शहर बसाने की अनुमति देती है तो 'सबका साथ' का क्या होगा? यूं अभी भी धर्म विशेष, सम्प्रदाय बहुल तथा एक ही समुदाय की कुछ कॉलोनियां अस्तित्व में हैं। लेकिन उनका नामकरण अक्सर उनके आराध्यों, महापुरूषों अथवा क्षेत्रीय या जातीय पहचान के आधार पर ही होता है। केवल गांव का नाम हिंदू कर देने से हिंदू राष्ट्र कैसे बन जाएगा, यह समझना मुश्किल है। हिंदू समाज भी तभी एकजुट होगा, जब वह जातीय विद्वेष और ऊंच नीच के दुराग्रह से मुक्त होगा। इसके लिए हिंदू बस्ती से ज्यादा बड़े दिल की जरूरत है।

॥ मंदिरम् ॥ 78

मार्तंड सूर्यमंदिर, जम्मू-कश्मीर

जम्मू-कश्मीर सरकार ने कश्मीर के अनंतनाग में मार्तंड सूर्यमंदिर के जीर्णोद्धार के लिए प्रयास शुरू किए हैं। मार्तंड सूर्यमंदिर को 8वीं शताब्दी ई. में कर्कोटा राजवंश के ललितादित्य मुक्तापीड ने बनवाया था। इसे मूर्ति भंजक सिकंदर बुटशिकन (1389-1413) ने नष्ट किया था। जब जीर्णोद्धार कार्य शुरू होगा, तो आशा है किमार्तंड मंदिर अपने ऊंचे पिरामिडनुमा शिखर और तीन मेहराबदार प्रवेश मार्गों के साथ अपने पूर्व गौरव को बहाल कर देगा। वास्तुकला की दृष्टि से यह कुछ-कुछ वैसा ही दिखेगा जैसा यहां (पंड्रेथन मंदिर) की चौथी छवि में दिखाई देता है, हालांकि यह बहुत बड़े और भव्य पैमाने पर है।

प्रदेश में 360 मटेरियल रिकवरी फेसिलिटीज से सूखे कचरे का हो रहा प्र-संस्करण

सभी शहरों को कचरा मुक्त बनाने के लिये केन्द्र से मिली 5 हजार 914 करोड़ रूपये की मंजूरी

●इंदौर में संचालित है 500 टन प्रतिदिन क्षमता का आधुनिक सीएनजी प्लांट

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में नगरीय निकायों में कचरा संग्रहण, परिवहन एवं प्र-संस्करण सुविधाओं के विकास के लिये नगरीय निकायों को अनुदान दिया जा रहा है। इसके साथ ही केन्द्र सरकार ने प्रदेश के सभी शहरों को कचरा मुक्त बनाने के लिये 5 हजार 914 करोड़ रूपये की मंजूरी दी है।

360 मटेरियल रिकवरी फेसिलिटीज: प्रदेश के 405 नगरीय निकायों में कम्पोस्टिंग इकाइयों के माध्यम से गीले कचरे का और 360 मटेरियल रिकवरी फेसिलिटीज के माध्यम से सूखे कचरे का प्र-संस्करण किया जा रहा है। इंदौर में गोबरधन बॉयो सीएनजी प्लांट इकाई के माध्यम से 500 टन प्रतिदिन

क्षमता का अत्याधुनिक प्लांट संचालित किया जा रहा है। इंदौर के प्लांट से वेस्ट-टू-वेल्थ तथा सर्कुलर इकॉनामी की परिकल्पना साकार हुई है। इंदौर के प्लांट से सीएनजी के अलावा प्रतिदिन 100 टन उच्च गुणवत्ता की खाद भी तैयार की जा रही है। इसका उपयोग इंदौर शहर के आस-पास स्थानीय खेतों में किया जा रहा है। इससे खेतों में रासायनिक उर्वरकों की जरूरत कम हुई है। नगरीय निकायों में स्थित लीगेसी वेस्ट का निपटान की कार्य योजना नगरीय विकास विभाग ने तैयार की है। अगले 3 वर्षों में यह कार्य शत-प्रतिशत किये जाने का कार्यक्रम तैयार किया गया है। प्रदेश में अब तक 50 स्थानीय निकायों के शत-प्रतिशत लीगेसी वेस्ट अपशिष्ट का प्र-संस्करण कार्य पूर्ण कर दिया गया है।

स्वच्छ भारत मिशन शहरी 2.0

प्रदेश में स्वच्छ भारत मिशन शहरी 2.0 के अंतर्गत सभी शहरों को कचरा मुक्त बनाने तथा अपशिष्ट जल प्रबंधन के लिये आगामी 5 वर्षों में 4 हजार 914 करोड़ रूपये की योजनाओं की स्वीकृति भी प्राप्त की जा चुकी है। इस कार्य के लिये नगरीय विकास विभाग ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिये करीब 473 करोड़ रूपये का प्रावधान किया है। निकायों की ठोस अपशिष्ट प्रबंधन परियोजना लागत 10 लाख से अधिक जनसंख्या वाले शहरों के लिये 50 प्रतिशत, एक से 10 लाख की जनसंख्या के लिये 66 प्रतिशत तथा एक लाख से कम जनसंख्या वाले निकायों के लिये 90 प्रतिशत राशि अनुदान के रूप में नगरीय विकास एवं आवास विभाग द्वारा दी जा रही है। शेष राशि निकाय अंशदान और जन निजी भागीदारी का अंशदान होता है। निकायों में दैनिक आधार पर उत्सर्जित होने वाले कचरे का निपटान निर्धारित प्रक्रिया और मानदंडों के आधार पर किया जाता है।

टायर फटा, स्टीयरिंग लॉक, कार पलटने से 2 की मौत

चार लोग घायल; महाराष्ट्र से पांढुर्णा आते समय हुआ हादसा

पांढुर्णा (नप्र)। पांढुर्णा के जाटलापुर के पास टायर फटने और स्टीयरिंग लॉक होने से कार पलट गई। हादसे में दो बुजुर्ग महिलाओं की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि चार लोग घायल हैं। हादसा बुधवार दोपहर करीब 3 बजे हुआ। कार महाराष्ट्र के वरुड से पांढुर्णा आ रही थी। पुलिस के मुताबिक, मृतकों की पहचान 70 वर्षीय पार्वती भड़के और 65 वर्षीय स्वाति होले के रूप में हुई। हादसे में घायल शुभम होले, हेमराज रेवतकर को सिविल अस्पताल भेजा गया, जबकि दो बालिकाओं को वरुड रेफर किया गया है। सभी लोग वरुड से पांढुर्णा आ रहे थे।

सत्यनारायण की कथा में शामिल होने आ रहा था युवक

बताया जा रहा है कि शुभम होले की सोमवार को पांढुर्णा के शिवाजी वार्ड निवासी गजानन सातपुते की बेटी से शादी हुई थी। इसके बाद ये लोग वरुड चले गए थे। लड़की के घर में सत्यनारायण भगवान की कथा होनी थी। इसमें शामिल होने के लिए शुभम परिवार के साथ आ रहा था, तभी हादसा हो गया।

घायल बोले : सब यकायक हो गया, कुछ नहीं सूझा: घायल ड्राइवर हेमराज रेवतकर ने बताया कि मुझे कुछ समझ में नहीं आया। सब कुछ सेकंड में हो गया। हादसे के बाद दोनों महिलाएं कार में दब गई थीं, इससे उनकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई।

राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ेगा मध्य प्रदेश का दबदबा

अधिवेशन के बाद कमलनाथ व यादव को मिलेगी बड़ी जिम्मेदारी

भोपाल (नप्र)। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) का राष्ट्रीय अधिवेशन गुजरात में चल रहा है। जानकारी मिली है कि इस अधिवेशन के बाद मप्र के दो बड़े नेताओं को राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी जिम्मेदारी मिल सकती है। इनमें पहला नाम पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ का है और दूसरा नाम पूर्व पीसीसी चीफ अरुण यादव का है। यादव को ओबीसी और यादव होने के चलते महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। इनको जिम्मेदारी मिलने के बाद मप्र कांग्रेस का राष्ट्रीय स्तर पर दबदबा और बढ़ जाएगा। अभी मप्र से पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के पास राष्ट्रीय स्तर पर चुनाव और ईवीएस से जुड़े काम की निगरानी का जिम्मा है। इनके अलावा पूर्व सांसद मीनाक्षी नटराजन के पास तेलंगाना का प्रभार है। इनके अलावा पूर्व विधायक कमलेश्वर पटेल, विधायक ओंकार सिंह मरकाम कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य हैं। जबकि पांच नेता जिनमें कुणाल चौधरी, भूपेंद्र मरावी, मनोज चौहान, सत्यनारायण पटेल और नीलांशु चतुर्वेदी राष्ट्रीय सचिव हैं। विधायक विक्रांत भूरिया आदिवासी कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। जानकार बताते हैं कि मप्र कांग्रेस को राष्ट्रीय स्तर पर लगातार तवज्जो दी जा रही है और इसीलिए एक के बाद एक नेताओं को राष्ट्रीय स्तर पर जिम्मेदारी दी जा रही है। राष्ट्रीय अधिवेशन का समापन बुधवार को होगा।

पायलेट प्रोजेक्ट में मप्र शामिल: मध्य प्रदेश को एआईसीसी द्वारा कितनी तवज्जो दी जा रही है, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि शहर के मोहल्ले और पंचायतों को मजबूत करने के पायलेट प्रोजेक्ट में गुजरात के साथ मप्र को रखा गया है। मप्र में मोहल्ला और पंचायत कमेटी बनाने का काम शुरू हो चुका है। इसके लिए पीसीसी चीफ जीतू पटवारी मप्र की 230 में से लगभग 180 विधानसभा में दौरे कर चुके हैं।

भारत के महानिर्माण में प्रत्येक नागरिक, संस्था और संगठन की भूमिका महत्वपूर्ण : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

एमईएस बिल्डर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया की ऑल इंडिया काउंसिल मीट-2025 में हुए शामिल

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आज भारत शक्तिशाली, आत्मनिर्भर और समृद्ध राष्ट्र के रूप में वैश्विक क्षितिज पर उभर रहा है। यह भारत का महानिर्माण काल है, जिसमें प्रत्येक नागरिक, संस्था और संगठन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल सफल रिट्रीट भोपाल में एमईएस बिल्डर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया की ऑल इंडिया काउंसिल मीट-2025 कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने एसोसिएशन के सभी प्रतिनिधियों को उत्कृष्ट कार्य के लिए शुभकामनाएं दीं एवं श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वालों प्रतिनिधियों को सम्मानित किया

अब हम दुश्मन को घर में घुसकर जवाब देते है: उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि आज पूरी दुनिया भारत को आशा और संभावनाओं की दृष्टि से देख रही है। भारत वह राष्ट्र है जो विश्व में शांति स्थापित करने की सामर्थ्य रखता है। आज का भारत

अपने निर्णय अंतर्राष्ट्रीय दबाव में नहीं, बल्कि वैश्विक हित में लेता है। हमारी सेनाएं पूरी मजबूती के साथ खड़ी हैं। अब वह समय नहीं जब हम ज़मीन पर विजय के बाद टेबल पर हार जायें, अब हम दुश्मन को घर में घुसकर जवाब देते हैं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि भारतीय सेना के साथ जुड़कर कार्य करना गौरव और राष्ट्रसेवा का अवसर है। एमईएस बिल्डर्स एसोसिएशन के सदस्य सैन्य आवश्यकताओं की पूर्ति में उत्कृष्ट योगदान दे रहे हैं। सैन्य क्षेत्र में उत्पादों की गुणवत्ता, अनुशासन और प्रतिबद्धता अत्यंत महत्वपूर्ण होती है और एसोसिएशन इन सभी मानकों पर खरा उतर रहा है। विधायक श्री रामेश्वर शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में देश रक्षा क्षेत्र में स्वदेशी निर्माण की दिशा में तेज़ी से अग्रसर है। भविष्य में हथियार भी भारतीय होंगे उन्हें चलाने वाले भी स्वदेशी होंगे। एमईएस बिल्डर्स एसोसिएशन के सदस्य भारतीय सेना के साथ कदम से कदम मिलाकर भारत माता की सेवा कर रहे हैं, यह अत्यंत गर्व की बात है। कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के 80 जिलों से आए एसोसिएशन के पदाधिकारी, बिल्डर्स, सैन्य क्षेत्र से जुड़े अधिकारी एवं प्रतिनिधिगण उपस्थित रहे।